महिलारत्न—
मगनबाई।

सम्पादक—

श्रीमान् ब्रह्मचारीजी सीतलप्रसादजी,

अनेक शास्त्र व 'दानवीर माणिकचंद्र' ग्रन्थके लेखक।

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, कापड़ियाभवन—सूरत।

वीर सं० २४५९

मगनबहिन स्मारक फण्ड-सूरतकी ओरसे—
'दिगम्बर जैन' के २६ वें वर्षके ग्राहकोंको, जैन महि-
लादर्शके १२ वें वर्षके ग्राहकोंको और जैनमित्रके
३४ वें वर्षके ग्राहकोंको भेंट।

मूल्य—एक रुपया।

प्रस्तावना।

इस परिवर्तनशील संसारमें अनेकानेक जीव जन्मते हैं व मर हैं, परन्तु ऐसे तो विरले ही जीव होते है जो मरते हुए अपना यावतचंद्र दिवाकरौ अमर कर जाते हैं। दि० जैन समाजमे ऐसे एक वीर नर २० वर्ष हुए अपना नाम अमर कर गये है। नामसे तो सारे जैन समाजका बच्चा २ परिचित है और वह कोई नहीं परन्तु स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिक हीराचंदजी जौहरी जे० पी० बम्बई थे जिन्होंने दिगम्बर जैन व समाजकी तन, मन, धनसे जैसी सेवा की है वैसी सेवा करने वाली एक भी व्यक्ति आज जैन समाजमें नजर नहीं आती। दि० जै समाजमें यद्यपि लखपति तो क्या करोडपति भी अनेक पडेहैं व श्री सर सेठ हुकमचन्दजी आदि अनेक श्रीमानोंने बहुतसा दान किया है कर रहे हैं परन्तु स्व० दानवीर सेठ माणिकचंदजी विद्यादान, धर्मशिक्ष समाज सुधार, हमारी मनुष्यगणना व तीर्थरक्षाके जो२ कार्य कर गये उनकी शानी रखनेवाले एक भी नर जैन समाजमें नजर नहीं आते। अ ऐसे गुणवान पुरुषके जीवनकार्योंका परिचय भी कायम रहे, हमने इन महापुरुषके वियोगपर 'दिगंबर जैन' द्वारा एक खोला था और उसमेंसे "दानवीर माणिकचंद" नामक व सचित्र ग्रन्थ प्रकट करके "दिगंबर जैनके" के ग्राहकोंको भेंट दिया था, जिसका सारे जैन समाजने बहुत आदर किया है।

परन्तु इससे भी अधिक गौरवदायक बात तो यह है कि श्री दानवीर सेठ माणिकचन्दजीकी आदर्श बालविधवा पुत्री—जैन रत्न श्रीमती पं० मगनबाईजी जे० पी० जो पिताके समान थी व जिन्होंने पिताजीसे उत्तम शिक्षा प्राप्त की थी व अपना

जीवन दि० जैन स्त्रीसमाजकी उन्नतिके लिये अर्पण कर दिया था। व जो अपनी ५० वर्षकी आयुमें जैन स्त्रीसमाजकी उन्नतिके लिये ऐसे उत्तम काम कर गई है कि जिसका मुकाबला करनेवाली एक भी महिला हमको दि० जैन स्त्रीसमाजमें नजर नहीं आती। यद्यपि पं० चन्दाबाईजी, सौ० कंचनबाईजी, पं० ललिताबाईजी, ब्र० पं० कंकूबाईजी आदि अनेक बहिनें स्त्रीसमाजमें उत्तम कार्य कर रही है तौभी श्री० पं० मगनबहिन जिसप्रकार तन, मन, धनसे व पिताजीकी कार्य-पद्धतिसे स्त्रीसमाजका अनन्य उपकार करके अनेक श्राविकाश्रम, महिलाश्रम, कन्यापाठशाला, महिला परिषद, "जैन महिलादर्श" आदि स्थापित कर गई हैं वे कार्य उपरोक्त बहिनोंके कार्यसे कईगुणा अधिक हैं। अतः ऐसी निःस्वार्थ परोपकारी बहिनका नाम भी अमर होगया है।

श्रीमती पं० मगनबहिनका स्वर्गवास वीर सं० २४५६ माघ सुदी ९ को होगया तब जैन स्त्री समाजमें हाहाकार मच गया था। व अनेक शोक सभाएँ हुई थीं। उनमें बम्बईकी शोक सभामें श्री० धर्मचंद्रिका ब्र० पं० कंकूबाईजीके प्रयत्नसे ऐसा निश्चय हुआ कि श्री० मगनबाईजी स्थापित बम्बई श्राविकाश्रममें ९१०००) का स्थायी फंड है। अतः स्व० मगनबहिनकी इच्छानुसार उसमें १०००००) पूरा करनेके लिये उनका स्मारक फण्ड खोला जाय व हम व पं० ललिताबाइजी इसके लिये प्रयत्न करेंगी उसी प्रकार आप दोनोंने दृढ प्रयत्न भी उसी समय किया व करीब ७०००) भरे गये थे और अब करीब २ लाख रुपये होगये हैं। दूसरी ओर श्री. मगनबहिनकी जन्मभूमि सूरतमें भी शोक सभा की गई थी जिसमें भी एक मगनबहिन स्मारक फण्ड खोला गया और उसके लिये हमने यथाशक्य प्रयत्न किया व इसमें कमसे कम ५) भरनेवालेको दानवीर माणिकचन्द ग्रन्थ भी भेंट किया। इससे इस फंडमें ७००॥।) वसूल हुये थे जिसकी सूची:—

महिलारत्न मगनबाईजी स्मारक फंड–सूरत।

१०१)	सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया	सूरत
१०१)	रा० ब० सर सेठ हुकमचंदजी नाईट	इन्दौर
५१)	मोहनलाल मथुरादास शाह	कम्पाला (आफ्रीका)
२५)	छगनलाल उत्तमचंद संरया जैनी	सूरत
२५)	डाह्याभाई रिखवदास गजीवाला	,,
२५)	गमनलाल खुशालचंद सूतरवाला	,,
२५)	रा० ब० नादमलजी अजमेरा	अजमेर
२१)	पं० अजितप्रसादजी एम० ए० एडवोकेट	लखनऊ
११)	ठाकोरदास जमनादास चूडावाला	सूरत
११)	सौ० सेठानी हीराबाई ध. प. सेठ गेंदालाल सूरजमलजी	इन्दौर
११)	ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी	सूरत
१०।।।)	श्री० दि० जैन पचान	कटक
१०)	सौ० धर्मपत्नी दीपचदजी जैन	देहरादून
१०)	श्री० वाचकमाला ध० प० डुमरावसिहजी	पुरकाजी
५)	जेठमल सदासुखजी गंगवाल	लखनऊ
५)	पं० परमेष्ठीदासजी जैन न्यायतीर्थ	सूरत
५)	मौजीलाल पन्नालालजी	आगरा
५)	वजेचन्द मकनदासजी चूडावाला	सूरत
५)	कातिलाल हरगोवनदास	,,
५)	नेमचन्द कस्तूरचन्दजी	,,
५)	परभूदास हेमचन्दजी	,,
५)	मैनेजर पारसोवा अप्पाजी महाजन	शिरडशहापुर
५)	द्वारकाप्रसादजी पोष्टमाष्टर	जयपुर
५)	केशवलाल हीराचन्दजी	तलोद

९) अमेचंद कालीदास	जेसलपुर
९) धर्मपत्नी गुलाबचन्दजी जैन	लखनऊ
९) गणपतराम जगन्नाथजी जैन	जीरा (फीरोजपुर)
९) सेठ शोभाराम गंभीरमलजी टोंग्या	इन्दौर
९) ब्रह्मचारी कुंवर दिग्विजयसिंहजी	वीघूपुरा
९) दिगम्बर जैन पंच	नवागाम
९) मोड़ासिया फतेचन्दभाई ताराचन्द	विजयनगर
९) घीसारामसा रायचंदसा	भामगढ़
९) श्रीमती चन्द्राबाईजी हीरासा भीकासा	खण्डवा
९) केशवसा अमोलकचंदसा	,,
९) अमरासा फूलचन्दसा	,,
९) ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी पंचरत्न	
९) श्रीमती सरदारबहू ध० प० कड़ोरेलालजी	जगदलपुर
९) ,, छोटी बहू ध० प० सेठ मुन्नालालजी	,,
९) चन्दूलाल जमनादासजी वखारिया	कलोल
९) महावीर दि० जैन पाठशाला	साढूमल
९) दि० जैन कन्यापाठशाला	सहारनपुर
९) आत्माराम जयप्रसादजी रईस	,,
९) चन्द्राबाईजी रामस्वरूप सांवलदास	जालंधर छावनी
९) पद्मराजैय्या शालिग्राम	म्हैसूर
९) बा० शिवचरणलालजी जैन	जसवंतनगर
९) रघुवरप्रसादजी जैन	बैतूल
९) डॉ० भाईलाल कपूरचन्द शाह	नार
९) श्रीमती पुतलीदेवी डा० शंकरलालजी रईस	खतौली
९) गुरुचरणदास	करणप्रयोग—(गढ़वाल)

५) सौ० धर्मपत्नी निरंजनलालजी	फोर्ट अलवास
५) पं० दामोदरदासजी जैन भिलौवा	सागर
५) सौ० धर्मपत्नी मोतीलालजी	बाराबंकी
५) श्रीमती सोनादेवी हरीचंदजी ओवरसियर	हरदोई
५) रघुवरदयालजी जैन	लाहौर
५) विशेश्वरनाथ बालाप्रसाद	दिल्ली
५) नेमिचन्दजी वकील	जयपुर
५) श्रीमती महादेवी महावीरप्रसादजी रईस	खतौली
५) प्यारेलाल कन्हैयालालजी	कानपुर
५) नाथूराम चुन्नीलालजी	अजड़
५) पं० गुलाबबाईजी	बड़वानी
५) ब्रह्मचारी फतेहसागरजी	भिलोड़ा
५) रोशनलालजी जैन बी० ए०	लाहौर
५) ला० विशंभरदासजी जैन	,,
५) दिगम्बर जैन पंच	बलवाड़ा
५) कालिदास जगजीवनदास	मोगरी
१०) फुटकर	जगदलपुर मूडबिद्री व सागवाड़ा

७०२।।) कुल

इस फण्डका क्या उपयोग किया जावे उसपर अनेक भाइयों व बहिनोंसे तथा खास करके पं० ललिताबाईजी और ब्र० सीतलप्रसादजीसे परामर्श करनेपर अंतमें यह निश्चित हुआ कि स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीकी तरह मगनबाईजीका भी विस्तृत जीवन चरित्र इस फण्डमेंसे प्रकट करके ' दिगम्बर जैन, ' ' जैन महिलादर्श, ' और " जैनमित्र " के ग्राहकोंको भेटमें बांट दिया जाय। फिर हमने श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीसे निवेदन किया कि आपने श्री० सेठ माणि-

स्वर्गीय जैनमहिलारत्न श्रीमती पं० मगनबाईजी जे० पी०-बम्बई।

जन्म-
विक्र सं० १९३६ पौष वदी १०

स्वर्गवास-
विक्र स० १९८६ माघ सुदी ९

कचन्दजीका जीवन चरित्र लिख दिया था तो इनकी विदुषी पुत्रीका जीवन चरित्र भी आप ही लिख दीजिये क्योंकि श्री० मगनबहिनकी जीवनीसे आप अत्यधिक परिचित हैं। इसपर ब्रह्मचारीजीने कहा कि किसी विद्वान पंडितजीसे यह कार्य हो तो साहित्यकी दृष्टिसे ठीक होगा, परन्तु हमने कहा कि जैसा होसके वैसा आप ही इसको तैयार कीजिये अन्यथा यह काम होना कठिन है। इस प्रकार वारवार प्रेरणा करनेपर ब्रह्मचारीजीने इस कार्यके लिये स्वीकृति देदी जिसके लिये ब्रह्मचारीजी अत्यंत धन्यवादके पात्र हैं।

फिर हमने यथाशक्य प्रयत्न करके इस जीवनीका मसाला एकत्र करके मुरादाबाद भेज दिया, जहा चातुर्मासमें ब्रह्मचारीजीने इस जीवनचरित्रको लिखकर पूर्ण कर दिया था। फिर इसके लिये चित्र इकट्ठे करने व छपाने आदिमें अत्यधिक विलंब होगया तौभी हर्ष है कि आज यह "महिलारत्न मगनबाई" ग्रंथ तैयार होकर प्रकट किया जारहा है।

इसमें इस फंडसे अधिक खर्च हुआ है जिसकी व्यवस्था जैन-महिलारत्न पं० ललिताबहिनने स्व० पं० मगनबहिनकी दानसूचीकी एक रकममेंसे करदी है, जिसके लिये आप भी धन्यवादके पात्र हैं।

यह ग्रंथ तीनों पत्रोंको भेंट देनेके बाद कुछ प्रतियां बचेंगी तो वे श्राविकाश्रम बम्बईको देदी जायँगी। जहांसे १) में मिल सकेगा।

आशा है कि समाज इस ग्रन्थकी अच्छी कदर करके हमारे व ब्र० सीतलप्रसादजीके परिश्रमकी कदर करेगा।

वीर सं० २४५९
ज्येष्ठ वदी २
ता० १२-५-३३

समाज सेवक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
प्रकाशक।

भूमिका।

यह जीवनचरित्र जगतको अत्यन्त लाभदायक व अनुकरणीय होगा। दिगम्बर जैन समाजमें पुरुषोंके मध्यमें जैसे परोपकारी स्वर्गवासी दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचद हीराचंद्र जे० पी० होगए हैं वैसे ही स्त्रियोंके भीतर परोपकारसे समाजको उपकृत करनेवाली उनकी ही पुत्री जैन महिलारत्न मगनबाईजी होगई हैं। इन दोनों पिता व पुत्रीके जीवनचरित्र जगतके लिये आदर्श हैं। समाजकी सच्ची सेवा करनेवाले सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया—सूरतकी प्रेरणासे जैसे दानवीर सेठ माणिकचन्दजीका चरित्र मेरी तुच्छ लेखनीसे लिखा गया वैसे ही यह चरित्र भी उनहीकी वारवार प्रेरणासे लिखा गया है।

स्त्रियोंमें शिक्षा प्रचार करनेमें एक धनिक विधवा किस तरह अपना आराम छोड़कर किस तरह एक कर्मयोगी बनकर अपने जीवनके आधे वर्ष बिता देती है व रातदिन अपना नियमित धर्माचार पालती हुई परोपकारमें अनुरक्त रहती है यह बात पाठकोंको श्रीमती मगनबाईजीके चरित्रसे विदित होगी।

वैधव्य जीवनकी सफलता आत्मोन्नति, सदाचार व सेवाधर्म पालनेसे होती है। इस कर्तव्यका नमूना यह चरित्र है। समयको सदुपयोगमें लगानेसे एक महिला कैसी अपूर्व सेवा बजा सक्ती है उसका चित्र इस चरित्रमें है। मगनबाई रूपी दीपकने अपने पूज्य पिता द्वारा प्रदान किए हुए स्नेहके आधारसे प्रकाशित होकर अपने समान अनेक दीपकोंका प्रकाश करा दिया है यह बात बहुत बड़े गौरवकी है। मगनबाईजीने धनका लोभ छोड़ा था, अपने श्वसुरकी लाखोंकी सम्पत्तिके द्वारा होनेवाले भौतिक व क्षणिक सुखकी वांछा त्याग दी

थी और स्त्री समाजकी सेवाको ही सुख देनेवाली सम्पत्ति समझी थी।

उनके पूज्य पिताजीने इनके लिये बम्बईका एक मकान अलग कर दिया था उसकी मासिक आमदनी २००) या २९०) होती थी, उस ही द्रव्यसे यह समाजसेविका अपनी पुत्री केशरबाईके लिये कुछ खर्च करनेके सिवाय शेषमेंसे आश्रममें अपना भोजन खर्च देती थी। व श्राविकाश्रम व परिषद व अन्य प्रकारसे धर्मोपदेश देनेके लिये दूरदूर प्रवास करनेपर भी यात्राका समस्त खर्च इसी आमदसे बराबर करती थीं तथा जो इसमेंसे बचता था वह जैन समाजके उपकारी कार्यों में दान देदिया करती थीं।

एक गौरवपूर्ण जीवन बिताते हुए भी स्त्री शिक्षा प्रचारार्थ उक्त सेविकाको याचना करनेमें किञ्चित् भी लज्जा नहीं थी। जिस बड़े या छोटे भाई व बहनसे कुछ भी दानकी आशा होती थी उसके पास एक भिक्षुककी तरहं याचना करके द्रव्य एकत्र करती थी और समाजकी असमर्थ बहिनोंकी रक्षा व शिक्षाका प्रबंध करके उन्हें समाजसेविका बनाती थीं। लेखकको उक्त कर्मयोगिनीके चरित्रका विशेष अनुभव है। इस महिलामें जो २ गुण थे उनका वर्णन लेखनीसे होना अशक्य है। यद्यपि इनके शरीरका आकार स्त्रीकासा था परन्तु इनका मन पुरुषार्थसे भरपुर पुरुषवत् काम करता था।

यह स्त्री व पुरुषको समान दृष्टिसे देखकर हरएकसे बात करनेमें व समाजसेवाका काम निकालनेमें बहुत ही कुशलता वर्तती थीं।

कोई२ महिलाएं मात्र परोपकार करती हैं परन्तु स्वपरोपकारको नहीं पहचानती है। यह बात इस आदर्श भगिनीमें नहीं थी। यह जैन महिलारत्न अध्यात्मीक साहित्यकी भी पंडिता थी। भेदविज्ञानका मर्म जानती थी व आत्मानुभवके द्वारा अतीन्द्रिय आनन्दका रसपान करती थी। केवल निश्चयज्ञानसे ही विज्ञ न थी परन्तु व्यवहारनयके ज्ञानसे

भी भले प्रकार अलंकृत थी। चौदह गुणस्थान, मार्गणास्थानकी सूक्ष्म चर्चा जानती थी। अच्छे२ विद्वान पंडितोंकी चर्चा समझती थी व उनसे प्रश्न कर सक्ती थी। समाजमें कई पुस्तकें उक्त बाईजीकी प्रेरणासे ही प्रसिद्ध हुई हैं। जैसे—चौवीस ठाना चर्चा, जैन नियमपोथी, अर्थ प्रकाशिका, सामायिकपाठ व सुखसागर भजनावली जो आध्यात्मीक भजनोंका सार है।

मगनबाईजीको आत्मीक चर्चाकी इतनी रूचि थी कि यह श्री० १०८ वीरसेनजी भट्टारक कारंजा, पंडित फतहचंदजी लालन, महात्मा लघुराजजी रायचंद सनातन जैन आश्रमके अधिष्ठाता व इस लेखकसे व अन्य अध्यात्मप्रेमी जैन व अजैनोंसे आत्मा संबंधी चर्चा करके धर्म लाभ लेती थीं। मान अपमानका उक्त महिलाको जरा भी ख्याल न था। निंदा व स्तुति होनेपर इस रत्नमें विकार व दोष पैदा नहीं होता था। यह साम्य भावसे दिन रात अपने कर्तव्यमें लीन रहती थी। आलस्यको तो बम्बईके खारी समुद्रमें डुबो दिया था। आपका साथ देनेवाली जैन महिलारत्न ललिताबाई व धर्मचन्द्रिका ब्र० कंकुबाई थीं। ये तीनों बहिनोंमें इतनी एकता थी कि ये रत्नत्रयके नामसे प्रसिद्ध थीं। व ये तीनों विकसित "क-म-ल" की उपमा पा लेती थीं। इनके नामके आदि अक्षरको जोड़नसे नेत्रोंको आनन्दकारी "कमल" बन जाता है!

इस चरित्रके लिखनेका विचार इसीलिये मात्र नहीं किया गया कि उक्त रत्नकी चमक ही दिखलाई जावे, परन्तु इसलिये किया गया है कि अन्य महिलाए इसको पढकर अनुकरण करें व हजारों मगनबाई जैन महिलारत्न बनें जिससे जगतके स्त्रीसमाजका कल्याण हो।

मुरादाबाद
वीरस० २४५७
भादो सुदी ६ गुरुवार
ता० १७-९-३१

स्त्रियोंकी उन्नति चाहनेवाला—

ब्र० सीतल।

विषय-सूची।

भूल संशोधन।

इस पुस्तकमें पृष्ठ १४०–४२ पर महिलारत्न पं० मगनबाईजीकी अन्तिम दान-सूची छपी है उसमें वनिता विश्राम बम्बईके ८५) के स्थानमें २५) पढ़ें व निम्न रकम अधिक समझें–१०१) श्राविकाश्रम बम्बईमें रहनेवाली श्राविकाओं व शिक्षिकाओंको बाटे जावें, २५)-श्रीमती गरगट्टे, २५) श्रीदेवीबाई व ३०१) श्राविकाश्रम बम्बईमें जमा रखकर उसकी आयसे मगनबहिनकी जयंतिके दिन और वह न होसके तो किसी एक दिन भोजनखर्चके लिये, अर्थात् अब कुलजोड़ ६८१६) हो जायगी।

प्रकाशक।

“जैनविजय” प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला–सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया।

चित्र-सूची ।

स्व० दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंदजी जौहरी जे० पी० ।

[महिलारत्न मगनबाईजीके पूज्य स्व० पिताजी]

श्रीमती स्व० सौ० चतुरबाई।

(महिलारत्न पं० मगनबाईजीकी पूज्य माताजी)

जैनविजय प्रेस-सूरत।

॥ ॐ ॥

महिलारत्न मगनबाई।

अध्याय पहला।

जन्म और बाल्यकाल।

कुटुम्ब परिचय।

बम्बईप्रांतमें सूरत एक प्राचीन व्यापारी नगर है। मुसलमानी राज्यकालमें यह बहुत प्रसिद्ध व्यापारका केन्द्र था। इंग्रेजोंने भी अपना व्यापारका मुख्य स्थान इस नगरको बनाया था। यहां जैनियोंका अच्छा समुदाय है। दिगम्बर जैन और श्वेताम्बर जैन दोनों रहते हैं। श्वे० जैनोंकी संख्या अधिक है। दि० जैनोंमें वीसा हूमड़ जाति मंत्रेश्वर गोत्रधारी सेठ हीराचंद गुमानजीका कुटुम्ब वि० सं० १८४० में ईडर राज्य उदयपुरसे आकर सूरत बसा था। सेठ माणिकचंदजीके पितामह शाह गुमानजी लालजी सूरतमें व्यापारार्थ आए थे। इनके

पुत्र सेठ हीराचंद हुए। हीराचंदके तीसरे पुत्र माणिकचन्दजी थे। यह बड़े प्रतापशाली थे। बम्बईमें मोतीके व्यापारमें इन्होंने अच्छी उन्नति की थी। संवत १९२७ में बम्बईमें सेठ माणिकचंद पानाचंदके नामसे कोठी स्थापित की गई, जो अबतक बराबर उन्नतिरूप चल रही है। सेठ माणिकचदजीकी धर्मपत्नी शोलापुर जिलेके करमाला तालुकेके नान्नेज ग्रामवासी शाह पानाचन्द उगरचन्द दोभाड़ा हूमड़की पुत्री चतुरबाई थीं।

जब इनके गर्भमें मगनबाईका जीव आया तब इनके परिणाम जो धर्मसाधनमें साधारण थे वे कुछ अधिक चढ़ने लगे। पूजन व शास्त्र सुननेकी व दान देनेकी रुचि बढ़ गई। वास्तवमें गर्भस्थ बालकका प्रभाव मातापर व माताका प्रभाव बालकपर पड़ा करता है। सकुशल प्रसुति होनेके हेतु सेठ माणिकचंदजीने गर्भस्था पत्नीको उनके पिताके घर नान्नेज भेज दिया।

जन्म। सवत् १९३६ मिती पौष वदी १० (गुज० मगसिर वदी १०) का दिन बड़ा ही शुभ था जिस दिन चतुरबाईने मगनबाईको जन्मा। इसके सुन्दर शरीर, सौम्य मुख, गम्भीर आकारको देखकर माताको बड़ी ही प्रसन्नता हुई। यह कन्या सर्वको प्रिय लगती थी। हरकोई इसे गोदमें लेकर लाड़ प्यार करना चाहता था।

वास्तवमें जिस जीवके साथ पुण्य-कर्मके उदयकी तीव्रता होती है उसकी तरफ सबका प्रेम होता है। और वह जीव सुन्दर शरीर व साताकारी सम्बध पाता है। सेठ माणकचंदजी नान्नेज गये, जन्मपत्री बनवाई व मगनव्हेन नाम रक्खा। कुछ मास

पीछे उसे उसकी माता सहित बंबई ले आए।

बंबईमें यह सुन्दर व मनोहारिणी कन्या दिन दिन बढ़ने लगी, चन्द्रमा तुल्य अपनी कलाको बढ़ाती हुई प्रकाश करने लगी। सेठ माणिकचंदजीका मगनबाईसे बहुत ही स्नेह था। जब यह २॥ वर्षकी ही थी तबहीसे सेठजी इसको साथमें लेकर भोजन करते थे। फुरसतके समय लाड़ प्यार करते थे व अपने पास ही शयन कराते थे। व समय२ पर धर्मकी बातें सिखाते थे। इस तरह धर्मबुद्धि सेठजीका असर मगनबाईके कोमल चित्तपर जमता जाता था। जब वह शाला जाने योग्य हुई तब इसे गुजराती भाषाकी शिक्षा मिलने लगी। यह पढ़नेमें भी खूब दिल लगाती थी। सेठजीने घरपर भी एक शिक्षक नियत कर दिया था। सेठ-जीको विद्याका प्रेम था। वे पुत्रीकी शोभा विद्यामई हारसे ही समझते थे। विद्याके विना मानवमें मनुष्यता प्रकाशित नहीं होती है। लड़कोंकी अपेक्षा लड़कियोंको शिक्षा देना अधिक आवश्यक है, क्योंकि वे ही भविष्यकी संतानोंकी माताएँ होती हैं तथा वे ९ वर्षकी आयु तक एक बड़ी दृढ़ शिक्षिका होती है। शिक्षित माताएँ अपने छोटे २ बालक बालिकाओंको बहुतसी उपयोगी बातें सिखा सक्ती हैं। उनकी अच्छी आदतें बना सक्ती हैं। उनको निर्भय व वीर बना सक्ती हैं। उनमें धर्मका अंकुर पैदा कर सक्ती हैं। जैसा खेत होता है वैसा बलिष्ठ या निर्बल बीज फलता है। जैसी माता होती है वैसी संतान सबल या निर्बल, चतुर या मूर्ख होती है। यह एक साधारण नियम है। पूर्व कर्मोंके उदयकी विचित्रतासे इसमें अन्तर भी पड़ सक्ता है।

सेठजीको अपनी इस पुत्रीसे बड़ा ही प्रेम था। साथ ही जिनमंदिर लेजाते थे, साथ ही खिलाते थे व जब बैठते तब पास बिठते थे। क्या शिक्षा ली उसे

बाल्यकाल।

पूछते रहते थे। सेठजीके अब तक पुत्र न था। वे उसे पुत्रसे भी अधिक प्यार करते थे। जब कहीं परदेश जाते थे तब भी मगनबाईको साथ ही रखते थे। उदार, धर्मात्मा, परोपकारी, साहसी व निर-भिमानी पिताकी संगतिका वैसा ही असर इस होनहार पुत्रीकी बुद्धिपर पड़ता था। श्री शत्रुंजय या पालीताना तीर्थपर मंदिर, धर्मशाला आदि बनानेका काम सेठजीने सं० १९४४ में प्रारम्भ कराया था। तबसे १९४८ तक सेठजी सात आठ वार पालीताना गये। हर दफे मगनबाई उनके साथ जाती थीं। इन्हें पिताके साथ नित्य सवेरे भोजन करनेकी आदत पड़ गई थी। पालीतानामें काम देखते २ कभी २ सेठजीको दोपहर होजाती थी। यह उन्हींके साथ काम देखा करती और जब सेठजी जीमते तब ही साथ होजाती थीं। सवेरे मात्र थोड़ासा दूध सेठजीके साथ पीती थीं, फिर सेठजीके साथ ही भोजन करती थीं। कभी २ बहुत देर होजाती थी। परन्तु मगनबाई कई २ घंटे भूख दबाकर धैर्यसे बैठी रहती थीं।

सेठजीके साथ रहने व बहुतसे लोगोंकी वार्तालाप सुननेसे इसे बड़ा ही अनुभव बढ़ता जाता था। इसने बाल्यकालमें गुजरातीकी व बालबोधकी थोड़ीसी

शिक्षा।

शिक्षा प्राप्त की थी। सेठजीका ध्यान अधिक विद्या पढ़ानेपर न था किन्तु इसे अनुभवी, कार्यकुशल व मिहनती तथा धर्मप्रेमी बनानेका था। इनही गुणोंके कारण इन्होंने अपना भावी जीवन बहुत

उपयोगी बना दिया था। और पिताने जो परिश्रम मगनबाईके साथ किया था उसका फल यह हुआ कि पुत्रीने पिताके यशको अपने परोपकारमय जीवनसे चहुंओर फैला दिया। जैसा यश दिगंबर जैन समाजमें उच्च शिक्षाके प्रसारमें उक्त सेठजीने कमाया था वैसा ही यश उनकी होनहार गुणवती पुत्रीने दि० जैन स्त्री समाजमें अतुल्य शिक्षा प्रचार करके प्राप्त किया था। वास्तवमें मगनबाईके हृदयमें जितना असर पिताकी शिक्षाका था उतना माताकी शिक्षाका न था। जबसे यह स्वयं चलने फिरने लगीं थी तबसे यह अधिकतर अपना समय पिताकी संगतिमें बिताती थीं।

बाल्यावस्थाका समय मिट्टीके कच्चे घड़ेके समान होता है। जैसे कच्चे घड़ेपर जो नक्काशी की जावे वह कुछ कालमें पक्क कर जब तक घड़ा बना रहे तबतक बनी रहती है। उसी तरह बाल्यावस्थामें जो जो उपयोगी शिक्षा दी जाती है वह जन्मपर्यंत काम आती है। बहुतसे माता पिता अल्प वयमें बच्चोंके सुधारकी कुछ भी सम्हाल नहीं करते हैं, फल यह होता है कि वे बच्चे बहुतसी बुरी आदतें अपनें भीतर जमा लेते हैं फिर उनका मिटना कठिन होजाता है। जैसे माली छोटे २ वृक्षोंकी बहुत सम्हाल रखता है तब वे दृढ़ बने रहकर फलते व फूलते हैं, इसी तरह जो माता पिता बच्चोंके जीवनको शुरूसे उपयोगी बनानेकी चेष्टा करेंगे उन हीके बालक कार्यकुशल बनेंगे। मगनबाईकी आयु जब १२ वर्षकी होगई तब इनके भीतर पिताके प्रतापसे आलस्यने व अधिक निद्राने आक्रमण नहीं किया था। यह सदाही प्रफुल्लित-मुखी रहकर अपनी नियमित दिनचर्यासे अपना जीवन सार्थक करती थीं।

द्वितीय अध्याय।

विवाह व गार्हस्थ्य जीवन।

सेठ माणकचंदजीके फूलकुमरी नामकी बड़ी कन्या थी, उससे छोटी मगनबाई थी। सं० १९४८में सेठजी सुरत आए। उस समय दोनों कन्याओंकी

सगाई।

सगाई पक्की की। फूलकुमरीकी सगाई सेठ त्रिभुवनदास वृजलालके पुत्र मगनलालके साथ पक्की की तथा मगनबाईकी सगाई एक धनाढ्य घरानेके पुत्र खेमचंदके साथ पक्की की। सूरतमें तासवाले वेणीलाल केशुरदासकी कोठी प्रख्यात थी। इनके दो पुत्र नेमचंद व जयचंद थे, दोनोंके कोई सन्तान न थी तब नेमचंद ईडरसे खेमचंदको दत्तक लाए थे। यह साधारण लिखना पढ़ना जानते थे। स्वभाव मिलनसार, प्रेमालु व धैर्यवान था। जैसे मगनबाईका स्वरूप सुन्दर था वैसे यह भी स्वरूपवान थे परन्तु कमी यह थी कि इसको न धार्मिक शिक्षा थी न धर्म आचरणकी आदत थी। इनका मन सांसारिक प्रपंचमें बहुत फँसा रहता था। लौकिक मित्र सदा घेरे रहते थे, उनके साथ बेधड़क पैसा खर्च करता था। कुसंगतिके कारण भीतर २ कुआचरणकी तरफ जारहे थे। सेठजीने पुत्रको योग्य वयमें १९ वर्षका दृढ़ शरीर व धनवान देखकर सगाई करली। भीतरी कुटेवोंका कुछ पता न चला। यद्यपि माता पिता पुत्र व पुत्रियोंका संबंध ढूंढ़नेमें यथाबुद्धि परिश्रम करके ठीक ठीक ही संबन्ध जोड़ते हैं तथापि प्रत्येकके कर्मोदयसे संबन्ध कभी इष्ट कभी अनिष्ट बैठ जाता है।

सं० १९४९ में ही सेठजीने दोनों पुत्रियोंका एक साथ विवाह सूरतमें ही रचवाया। इस समय फूल-

विवाह।

कुमरीकी आयु १९ वर्षकी व मगनबाईकी आयु १३ वर्षकी थी। जिस समयका यह कथन है उस समय बालविवाहका जैन समाजमें बहुत अधिक रिवाज था। लोग ९, १० या ११ वर्षकी आयुमें पुत्रीका विवाह कर देते थे। सेठजी सुधारक भावके थे। बम्बईमें बड़े२ सुधारकोंके भाषण सुनने जाया करते थे। उनको बालविवाहसे बहुत घृणा थी। इससे फूलकुमरीका विवाह १९ वर्षतककी आयु तक नहीं किया था। इससे उनके रूढ़िभक्त जातिवाले सदा ही सेठजीको धिक्कारा करते थे। सेठजी बहुत सहनशील थे, तौभी वारवार टोकनेका कुछ असर हो ही जाता है, इसका फल यह हुआ कि उन्होंने मगनबाईको १३ वर्षकी आयुमें ही विवाहना मनमें ठान लिया। यद्यपि यह आयु उस समयमें बालवय नहीं समझी जाती थी, परन्तु सुधारक सेठजीको यह पसंद न था कि १९ या १६ वर्षके पहले पुत्रीकी शादी की जाय। उनको वैद्यक शास्त्र द्वारा यह ज्ञात था कि १६ वर्षके पूर्व कन्या गर्भधारणके ठीक २ योग्य नहीं होती है।

सेठजी यद्यपि धनाढ्य थे, परन्तु लौकिक कार्योंमें धनको बड़ी किफायतसे खर्च करते थे। धार्मिक व परोपकारमय कार्योंमें धन अधिक खर्च करनेका उत्साह सेठजीके मनमें सदा जागृत रहता था। इस कारण सेठजीने इन दोनों पुत्रियोंके विवाह एक साथ ही रचाए, जिससे दुगना खर्च न होकर एक साथ कम व्ययमें लग्न हो जावे। यद्यपि सेठजीने किफायत करनेका प्रयत्न किया

परन्तु धनवान तासवालेके पुत्र खेमचन्दके साथ मगनबाईके विवाहके कारण सेठजीको इच्छा न रहते हुए भी अधिक खर्च करना पड़ा। खेमचंदके पिता सेठ नेमचंदने बहुत अधिक व्यय किया क्योंकि उनके यह एक ही दत्तक पुत्र था और उनके भीतर धार्मिक लगनकी अधिकता न थी। लोक दिखावा व मानवृद्धिकी अधिक कामना थीं। इस कारण सेठजीको भी दोनों विवाहोंमें १० हजार रुपये लगादेने पड़े। यद्यपि यह रकम सेठजीके लिये कुछ अधिक न थी परन्तु सुधारक सेठजीके भावोंके प्रतिकूल थी। विवाह बड़ी धूमधामसे हुए। सूरतमें जीमनोंका बहुत रिवाज है। एक एक विवाहमें कई कई जीमन किये जाते हैं। सेठजीने भी कई दावतें बढ़िया बढ़िया सामान बनाकर कीं व मुनीम, नौकर चाकर व सम्बन्धियोंको अच्छी २ पौशाकें बांटी थीं।

ससुरालका जीवन।

विवाह होनेके पीछे मगनबाईको अपनी ससुरालमें रहना पड़ता था, परन्तु उनका चित्त जैसा अपने पिताकी संगतिमें प्रसन्न रहता था वैसा यहां नहीं रहता था। वहां वह स्वतंत्रतासे बैठती, धर्म सेवन करती, समुद्रतटके रत्नाकर पैलेसमें रहकर समुद्रकी मनोहर वायुका सेवन करती। इसी पैलेसमें श्री चन्द्रप्रभु भगवानका चैत्यालय भी स्थापित था, उसमें दोनों समय दर्शन करती, नित्य शास्त्र पढ़ती। शामको जाप करके जब सेठजी दीवानखानेमें बैठते तब यह भी साथ बैठती और अनेक प्रकारके सज्जनोंसे जब सेठजी वार्तालाप करते तब यह सर्व सुनती व मनको रञ्जायमान करती थीं व अनेक तरहके समाचारपत्रोंको पढ़ बहुत ही सुखशांतिमें अपना समय बिताती थी। परन्तु जब

महिलारत्न मगनबाईजी

(सौभाग्य अवस्थामें अपने पति सेठ खेमचंदजीके साथ)

इनको सुसरालमें रहना पड़ता तब इनकी चर्य्या ऐसी होजाती थी कि इनका मन ग्लानित रहता था। इनकी सास रात्रिदिन घरके काममें लगाए रखती, सीना, पिरोना, अनाज फटकना आदि काममें बहुत समय देना पड़ता। इन्हें पुस्तक पढ़नेका शौक था। परन्तु इनकी सास पुराने ढंगकी स्त्री थी जो पुस्तक पढ़ना अपशकुन समझती थी। इनके पति भी ऐसे विचारके थे। इसलिये मगनबाईका पढ़ना लिखना सब छूट गया था। धर्म पुस्तक बांचने तकका समय नहीं मिलता था। धर्मसेवन इतना ही रह गया था कि नित्यप्रति श्री चन्द्रप्रभके चैत्यालयके दर्शन कर आना और एक छोटीसी जाप देलेना। यह कभी कभी छिपकर यदि कोई पुस्तक पढ़ती व कहीं सास श्वसुर देख लेते तो इस विचारीको बहुत ही क्रोधके बाण सहने पड़ते। इनको अपने श्वसुरघरका निवास एक तरहका कारावास ही दिखता था। मात्र जब पतिके साथ एकांतमें संपर्क होता था तब कुछ मन विषयासक्तिके कारण प्रफुल्लित होजाता था। इनका मन पतिसे प्रेमालु व भक्तरूप था। यद्यपि यह घबड़ाकर बंबई चली आती और महीना दो दो महीने रह जाती फिर भी पति प्रेमके कारण व सासकी ताकीदके कारण वह शीघ्र ही सूरत आजाती थी। जितना २ प्रेम पतिसे बढ़ता गया उतना २ मगन-बाईका निवास सूरतमें अधिक होता गया।

खेमचंदजीमें बुरी सुहबतके कारण कभी२ मद्यपानकी कुटेव पड़ गई थी। पतिकी इस आदतसे मगनबाईको बहुत दुःख रहता था। वह बारबार समझाती थी परंतु कुटेव पड़ी हुई नहीं छूटती थी। वास्तवमें बाल्यावस्था या कुमारावस्थामें माता पिताको पुत्र पुत्रि-

योंके चारित्रकी बहुत सम्हाल रखनी चाहिये। मदिरा मांस मधुका त्याग तो आठ वर्षकी आयुमें करा देना चाहिये। जो माता पिता चारित्रकी तरफ ध्यान नहीं देते हैं उनहीके पुत्र बहुधा किसी न किसी व्यसनमें फंस जाते हैं। ये व्यसन कभी २ कुटुम्ब पर घोर आपत्ति ला देते हैं, यहांतक कि प्राण वियोगके कारण बन जाते हैं।

एक पुत्रीका लाभ।

मगनबाईको संवत १९१२ में एक पुत्रीका लाभ हुआ। इससे खेमचंदजीके सर्व कुटुम्बको बड़ा ही हर्ष हुआ। यह पुत्री चंद्रमुखी सुन्दर-बदन थी व मनको मोहित करनेवाली थी। मगनबाई इस पुत्रीको बड़े प्रेमसे पालने लगी। मोह व स्नेहके भावसे अधिक वासित होगई। अब यह सुरत अधिक रहने लगी, धार्मिक रुचि भी कुछ घट गई। पुस्तकोंके देखनेकी भी याद न रही। यह नियम है कि जैसा संस्कार पड़ता है वैसी बुद्धि होजाती है। धर्मरहित लौकिक वातावरणमें रहते हुए धार्मिक संस्कार कुछ शिथिल होजाय तो कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। यह गृहस्थके कार्योंको कुशलतासे करती थी और इस बातका बराबर ध्यान रखती थी कि सास श्वसुर व अन्य घरके लोग व पतिमहोदय किसी भी तरह असंतुष्ट न हों। इनका स्वभाव सहनशील था—लड़ाई झगड़ा करनेका व बकबक करनेका न था। यह अपनी सास व पतिके कठोरसे कठोर वचनोंको पीजाती थी, कभी उत्तर नहीं देती थी। घरमें मंगल रहे इस बातकी सम्हाल रखती थी। ऐसी प्रकृति व ऐसा व्यवहार होनेमें मात्र इनके पूज्य पिता स्वर्गीय जैनकुलभूषण दानवीर श्री० सेठ माणिकचन्दजी जे० पी०की शिक्षा व उनकी ही संगतिका फल समझना चाहिये।

तृतीय अध्याय।

संसार-सुख वियोग व उदासी।

मगनबाई सूरतमें पुत्रीको लाड़ प्यारसे पालती हुई अधिकतर रहने लगी। यह इसपर इस तरह मुग्ध थी जैसे पक्षी फूलपर आसक्त होता है। १ वर्ष भी नहीं बीता कि वह रुग्न होगई। लाख उपाय करनेपर भी यह अच्छी न हुई। जब यह चलवसी तो मगनबाईको बड़ा भारी इष्टवियोगका कष्ट हुआ। यह ऐसा समझने लगी, मानों किसीने इनकी सम्पत्ति लूट ली हो। इनको खाना पीना भी अरुचिकर होगया। यह एकांतमें बैठकर आंसु बहाती थी। इन्हें वही घर जो कुछ काल पहले इष्ट था अनिष्ट भासने लगा। सच बात यह है कि यह जीव अपनी मान्यतासे किसीको अच्छा व किसीको बुरा समझ लेता है। पदार्थ तो अपने स्वभाव रूप परिणमनमें परिणमन किया करते हैं। खेमचंदजीको भी बहुत शोक हुआ था, परन्तु इनका शोक थोड़े ही कालमें दोस्तोंकी सुहबतसे विलीन होगया। सेठ माणिकचंदजीने जब यह शोक-सम्वाद पाया तो उनके चित्तमें भी विषादने घर किया। परन्तु जिनधर्मके उपदेशको याद करते ही उन्होंने अपने मनको तुर्त ही संतोषित कर लिया और एक शिक्षापूर्ण पत्र अपनी परम प्रिय पुत्रीको लिखा। उस पत्रको पढ़ते ही मगनबाईका चित्त कुछ शोकके भारसे हलका हुआ व इनको धार्मिक बातें याद आगईं। वास्तवमें धर्मका ज्ञान परम उपकारी है। यही सच्चा मित्र है। यही दुःखमें सहाई होता है। यही शोक मिटाता है। यही

प्रथम पुत्रीका वियोग।

मनको शांत करता है। मित्रका लक्षण धर्ममें ही घटित होता है। कहा है—

शोकारतिभयत्राण प्रीतिविस्रम्भभाजनं ।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयं ॥

भावार्थ—शोक, दुःख व भयसे बचानेवाला तथा प्रेम व विश्वासका भाजन मित्र होता है। रत्नके समान यह दो अक्षरका 'मित्र' शब्द किसने बनाया है?

सेठजी अपनी पुत्रीको महिनेमें दोचार पत्र भेजते ही रहते थे, उत्तम शिक्षा देते रहते थे व कभी २ किसी २ बातमें सम्मति भी पूछते रहते थे। मगनबाईका कालक्षेप कभी२ बम्बईमें भी होता था। वहां यह पिताकी संगतिमें बहुत ही स्वाधीन व प्रसन्न रहती थी। रत्नाकर पैलेसका वास स्वर्ग सम भासता था। समुद्रकी ताजी हवा मस्तिष्कको ताजा कर देती थी। अनेक सज्जन पुरुषोंकी वार्तालाप मगनबाईके मनको अनुभवपूर्ण बना देती थी।

दो वर्ष पीछे सं० १९५४ में मगनबाईने द्वितीय पुत्रीको जन्म दिया। यह भी बहुत सुन्दर, सुडौल शरीर व मनहारिणी थी। माताको देखकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। खेमचन्दजीको आशा थी कि पुत्रका दर्शन होगा परन्तु इस संसारमें इच्छानुसार पदार्थका लाभ हरसमय हरएक जीवको नहीं होता है। इसका नाम केशरव्हेन रखा गया। अब यह इस पुत्रीको बडी सावधानीसे पालने लगी। पिताजीने एक शिक्षापुर्ण पत्र देकर मगनबाईको खानपान आदिमें विशेष सावधानी रखनेकी प्रेरणा की। बहुधा छोटे शिशु माताकी असावधानीसे रोगी हो प्राण गमाते हैं। जो माताएँ अशुद्ध व अनिष्ट-

द्वि० पुत्रीका लाभ।

कारी भोजन करतीं, स्वयं रोगी रहतीं, आलस्य करतीं, समयपर दुध नहीं पिलातीं, गर्मी शर्दीसे रक्षाका ठीक २ यत्न नहीं करतीं उनकी सन्तानकी प्राण रक्षा कठिन होजाती है। यह एक रत्नको हाथसे गमा चुकी थी इसलिये बड़ी सावधानीके साथ पुत्री केशर-बहिनका प.लन-पोषण करने लगी।

अशुभ कर्मका उदय। हरएक जीवके साथ पुण्य तथा पाप दोनों प्रकारके कर्मोंका सम्बंध है। इसीलिये जब २ उनका उदय आता है तब कभी सुख व कभी दुःख भोगना पड़ता है। इस असार संसारमें इष्टवियोग व अनिष्ट संयोगका बड़ा भ री रोग है। मगनबाई पुत्रीको गोदमें खिलाती हुई सांसारिक सुखमें मगन थीं। अपना समय कुछ सातामें विता रही थी, परन्तु पुण्य कर्मके साथ ईर्षा रखनेवाला पापकर्म कब चुप बैठ सक्ता था, यकायक उदय आजाता है और इस बिचारी अबलाको घोर कष्टमें डाल देता है। केशरबाईकी आयु १८ मासकी हुई थी कि संवत १९५९में एक दिन खेमचंदजीका मगज बहुत ही गर्म होगया। कहा जाता है कि इनको जो मद्य पीनेकी कुटेव थी इसीका यह परिणाम था। यका-यक खून चढ़ गया, पलंगपर लेट गए, माता भी आई, मगनबाई भी पहुंची, पिता भी आए, तरह२ के उपचार होने लगे परन्तु देखते देखते खेमचंदकी तो ऐसी बाधा बढ़ी की पूरे दो घंटे भी नहीं बीतने पाए थे कि इनका शरीर बिगड़ने लगा। मगनबाई बड़े संकोचके साथ केशरबहिनको लिये बैठी थी। माता घबड़ाई हुई दवाईका उपाय कर रही थी। उधर खेमचंदजीका आत्मा यकायक शरीरको छोड़कर चल दिया!

जो शरीर थोडी देर पहले कुटुम्बको सुखका कारण था वही शरीर परम शोकका कारण होगया। पिताने बारबार नाडी देखी, माताने शरीर टटोला,

वैधव्य प्राप्ति।

निश्चय होगया कि खेमचंदजीका मरण होगया। माता बहुत ही उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगी। पिता भी रुदन करने लगे। मगनबाई भी हायहाय करती हुई चिल्लार कर रोने लगी। सारा घर एक शोकका सागर बन गया। हां! कर्मकी विचित्र गति है, क्षणमात्रमें मगनबाई सुहागिनीसे दुर्भागिनी होगई–सधवासे विधवा होगई, १९ वर्षकी यूवा वयमें ही वैधव्यने डस लिया। सुन्दर कोमलांगी मगनबाईका सर्व सुख जाता रहा। जिस कमलपर यह आसक्त थी, जो इसे भोगरसका भाजन था, जिसे देखकर यह प्रसन्नता पाती थी, जो इसके जीवनका आधार था वह कमल आज मुरझा गया–टूटकर गिर पड़ा। इस जगतमें हरएक प्राणी अशरण है। मरणसे कोई रक्षा करनेवाला नहीं है, जब आयुकर्मका क्षय होजाता है तब किसीकी शक्ति नहीं है जो उसे रख सके। सारा घर व मुहल्ला खेमचंदजीके वियोगसे आश्चर्य व शोकके अन्धकारसे व्याप्त होगया। हरएक अत्यन्त सुन्दर व सुशील मगनबाईके ऊपर पड़ी हुई घोर आपत्तिको देखकर अनुकम्पावान होजाता था, थोड़ी देर पीछे कर्मोदय बलवान है इसी बातपर आके संतोष पालेता था, कोई कोई संसारकी विचित्रता विचार कर भाव अपने मुखकी आकृतिसे उदासी बतला रहे थे और झलका रहे थे कि संसारमें इष्टवियोग व अनिष्ट संयोगमई दुःखोंका पार नहीं है। जो संसारमें लिप्त होजाते हैं वे निराश होकर ही मरते हैं। धन्य हैं वे ज्ञानी वीतरागी

महात्मा जो संसारको असार व त्यागने योग्य समझकर मुक्तिके लिये उद्यम करते हैं। मगनबाई खेमचन्दके मृतक शरीरको देख-कर जैसे ही कुछ प्रेमालु होती थी वैसे ही उसे जीव रहित जान-कर अधिक शोकातुर होजाती थी। इसने अपना शृंगार उतार दिया। वैधव्यके भेषमें परिणत होगई। मगनबाईके देखते देखते सम्बन्धीजन खेमचन्दजीको लेगए और दाह क्रिया की।

शोक-निमग्न पिताजी।

बम्बई तार पहुंचा। सेठ माणिकचन्दजीके हृदयपर वज्रा-घात हुआ। आजतक सेठजीको ऐसा दुःख व शोक नहीं हुआ था जैसा इस कुसंवादसे हुआ। सेठजीको अपनी पुत्रीसे बड़ा स्नेह था। उसके ऊपर वैधव्यका संकट इतनी अल्पवयमें पड़ जाना एक दयालु पिताके दिलमें कैसा भाव पैदा करेगा इसे पाठकगण स्वयं विचार कर सक्ते हैं। माता चतुरबाई सुनकर पछाड़े खाने लगी, रोने, कूटने व बिलखने लगी। धीरे२ रत्नाकर पैलेस जो एक क्षण पहले हर्षभावमें मग्न था अब परम शोकभावमें परिणत होगया। सारा घराना शोकातुर हो संसा-रकी निर्दयतापर विचारने लगा। कुछ देरतक सेठजी अत्यन्त शोकभावमें भरकर मौनी रहे। सेठजीको शास्त्रका ज्ञान था जिसने उनको रुदन करनेसे मना किया. फिर ज्योंही उन्हें सीता, अंजना, द्रौपदी, चन्दना, अनंतमती आदि सतियोंकी दुःख कहानी याद आई व शम्भुकुमार तथा चंद्रलेखाका चारित्र याद आया कि सेठ-जीने अपने मनको भावी समझकर संतोषित कर लिया, सूरत सहानुभूतिका तार भेजा गया, सेठजी स्वयं सूरत आए और अनाथ शोकाकुल मगनको मिलकर व घंटे समझा कर उनके चित्तको आकु-

लता रहित किया। कर्मोंका नाटक विचित्र है। यह कभी किसीको सुखमें रत देख नहीं सक्ता। जो आज सुखी है उसे कल दुःखी दिखा देता है। ज्ञानी जीव इस कर्मकी लीलासे बचकर अपने स्वरूप लाभका ही यत्न करते हैं।

चतुर्थ अध्याय।

वैधव्यजीवनका सदुपयोग।

पितागृहमें निवास व शिक्षा।

मगनबाईका जीवनाधार छिन जानेसे इसे सूरतका वास बहुत ही अनिष्ट मालूम होने लगा। पिताका गाढ़ प्रेम स्मरण हो आया। पिताकी संगति रात दिन रहे यह दृढ़ कामना होगई। सेठ माणिकचन्दजीने भी यही विचार दृढ़ किया कि मगनबहिनको बंबई अपनी संगतिमें रखना चाहिये। तथा इसे विशेष विद्या देकर इसको आत्मकल्याणकी तरफ लगा देना चाहिये। यदि यह सूरत रहेगी तो धर्मज्ञान व धर्म साधनका कुछ भी अवसर न पासकेगी—घरके कामकाजमें ही अमूल्य मानव जन्मको खोदेगी। अनपढ़ सास-श्वसुर, विधवा बहूको बहुत ही घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं, उसका मनसे निरादर करते व उसको रुखा सूखा खानेको देते हैं। उसके जीवनको सुख हो ऐसा रंच मात्र भी विचार नहीं करते। ऐसी भारतके घरोंकी शोभनीय दशाको यादकर सेठजीने निश्चय किया कि मगनबाईको बंबई ही रक्खेंगे। एक मास पीछे सेठजी पुनः जाते हैं और मगनबहिनको बम्बई लाते हैं। कोमलांगी शोकग्रस्ता पुत्रीको देखकर चतुरबाई
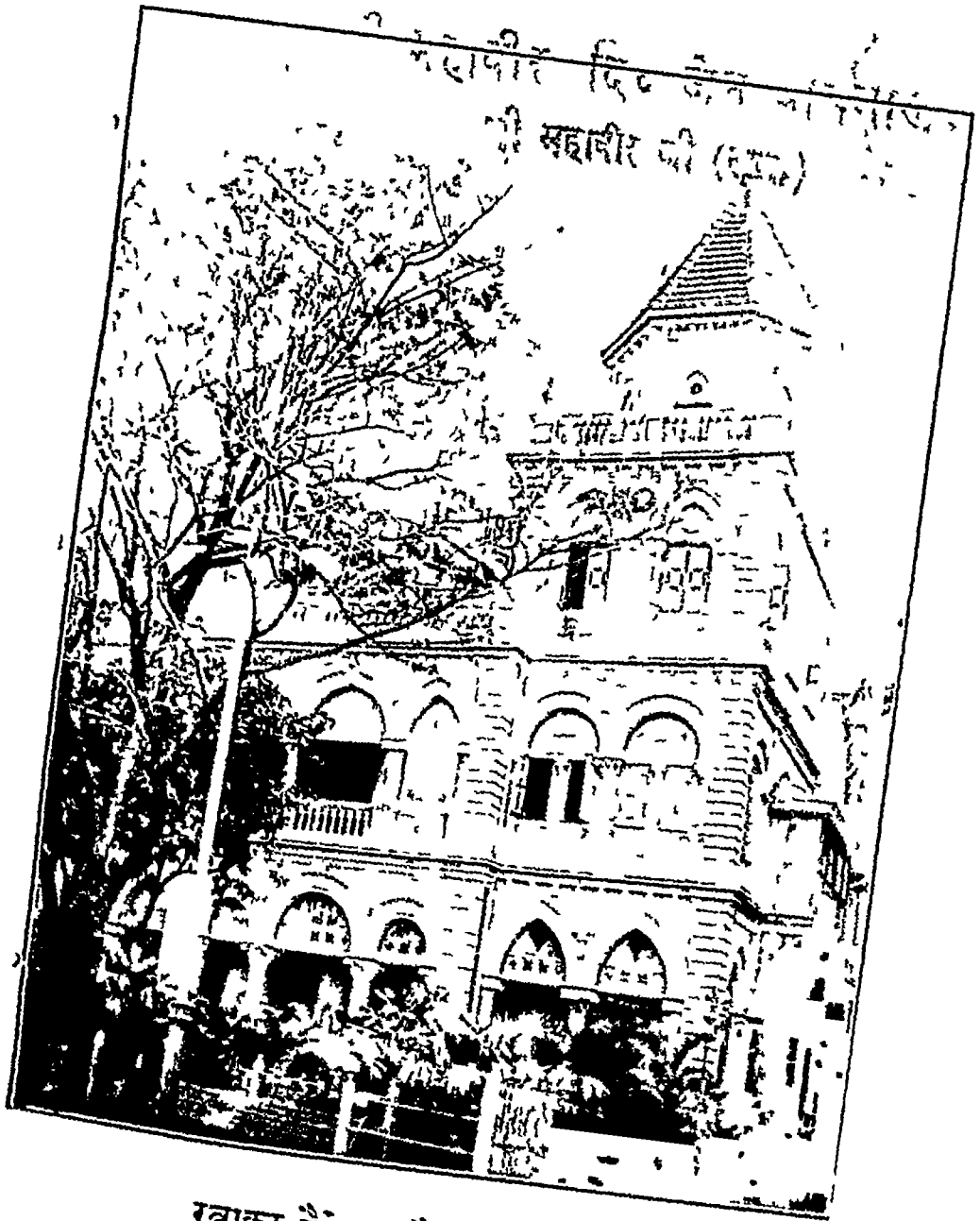
रत्नाकर पैलेस, चौपाटी–बम्बई।

[महिलारत्न मगनबाईजीके स्व० पिता श्री० दानवीर सेठ
माणिकचन्द हीराचन्दजी जे० पी० का भवन]

अत्यन्त उदास होजाती हैं। और मनमें आकुलित हो बेचैन होकर रोने लगती है। सेठजी सबको संतोषित करते हैं और यह विचारते हैं कि मगनबाईका जीवन किस तरह सार्थक किया जावे। इसके मनके भीतरसे किस तरह शोकको हटाया जावे और किस तरह शोकके बदले हर्षको भरा जावे? सेठजीकी बुद्धिने यही सलाह दी कि इसको संस्कृतका ज्ञान करा दिया जावे। जिससे यह जैन धर्मके शास्त्रोंको भले प्रकार देख सके।

बंबईमें एक विद्वान ब्राह्मण पंडित माधवजी थे, जो वयो-वृद्ध, सुशील और सुआचरणी थे। सेठजीने उनको नियत किया, मगनबाई उनके पास मार्गोपदेशिका संस्कृत व रत्नकरंडश्रावकाचार धर्मपुस्तक पढ़ने लगी। इनकी बुद्धि तीक्ष्ण थी, शीघ्र ही इनकी रुचि विद्यासम्पादनमें बढ़ गई। सेठजीने अपनी पुत्रीको शिक्षा दी कि तुम रात्रिदिन विद्यासाधनमें ही ध्यान दो, इसीसे तेरा भला होगा। तु घरके कामकाजकी भी चिन्ता न कर, न व्रत, उपवास करके शरीरको सुखाकर निर्बल बना, जैसे बहुधा जैन विधवाएं कर लिया करती हैं—बहुतसे उपवासोंको पालती हुई शरीरको कृश कर डालती हैं, सच्चे ज्ञान ध्यानमें अनुरक्त नहीं होती हैं, मात्र कायक्लेशको तप समझ लेती हैं। तुझे विद्या आजायगी तो तू स्वपर उपकार करके अपना जन्म सार्थक कर सकेगी। सेठजीके गुजराती भाषामें ये शब्द थे—

"बहेन! घरनुं कामकाज अने व्रत, उपवास बाजुए मुकीने भणो."

सेठजी मगनबाईको बहन कहकर पुकारते थे। सेठजीने चतुरबाईको भी समझा दिया कि तुम मगनसे घरका कामकाज न कराना, इसे एकचित्त हो विद्याभ्यास करने देना। परमोकारी सच्चे पिताकी योजनासे उदासीन मगनबाईका चित्त विद्यारसिक होगया। यह बड़े ध्यानसे एक विद्यार्थीकी तरह अभ्यास करने लगी। श्री मंदिरजीमें दर्शन पूजन करती, जाप देती व स्वाध्याय करती, विद्याका लाभ करती व रात्रिको सेठजीके साथ दीवानखानेमें बैठती व अनेक उपयोगी बातोंको सुनकर व देशकी कथाको जानकर चित्तको रंजायमान करती। बंबई प्रांतमें परदेका रिवाज नहीं है। स्त्रियां पुरुषोंसे व पुरुष स्त्रियोंसे विना संकोच निर्मल भावसे वार्तालाप करते हैं। जो सज्जन सेठजीसे मिलने आते थे वे मगनबाईजीसे वार्तालाप करते थे। मगनबाई भी विना संकोचके पुरुषकी तरह बात करती थी। इस तरह इन्हें जगतका अनुभव बढ़ता जाता था। गुजराती समाचारपत्र बांचती थी, कोई बात देशकी व परदेशकी उसके ज्ञानसे बाहर नहीं रहती। रात्रिको योग्यस्थानमें शांतभावसे शयन करती व शीलकी रक्षामें पूरा यत्न करती थी। पूज्य पिताकी दयामय व प्रेममय छायामें रहती हुई अपना काल सुखसे विताने लगी। मनमें वैराग्य व धर्मप्रेम बढ़ने लगा। धीरे२ परिश्रम करके मगनबाईने संस्कृत मार्गोपदेशिका व्याकरण दोनों भाग, थोड़ा अमरकोश, कुछ लघुकौमुदी, कुछ न्यायदीपिका पढ़ी व बंबई दि० जैन परीक्षालय द्वारा प्रवेशिकाके तीनों खण्डोंकी परीक्षा पास कर ली। जिससे इन्हें परमोपयोगी द्रव्यसंग्रह, रत्नकरंड व तत्वार्थसूत्रके अर्थोंका ज्ञान होगया।

मगनबाईको धर्मशिक्षा।

इन दिनों दिगम्बर जैनोंमें ग्रंथ मुद्रणके विरुद्ध बहुत बड़ा आन्दोलन था। सेठजी ग्रंथ मुद्रणको ज्ञान प्रचारका साधन मानते थे। जो भाई ग्रन्थ छपवाते थे, उनको सेठजी उत्तेजित करते थे। लाहौरमें बाबू ज्ञानचंद जैनीने दो बडे उपयोगी ग्रंथ छपवाकर प्रसिद्ध किये—आत्मानुशासन व मोक्षमार्ग प्रकाश। उसी समय देवबन्द निवासी जैनीलालने बडे रत्नकरंड श्रावकाचारको छपवाकर प्रसिद्ध किया। हरएक ग्रन्थ प्रकाशक सबसे पहले सेठ माणिकचन्दजीके पास पुस्तकें भेज देते थे। सेठजी पसंद करके उसकी बहुतसी प्रतियां मंगा लेते, बहुतोंको मुफ्त बांट देते व जो न्यौछावर देता उसे देदेते। ग्रन्थका प्रचार हो ऐसा दृढ़ प्रयत्न सेठजी करते थे। सेठजीने मगनबाईको उपदेश दिया कि वह ऊपर लिखित तीनों ग्रन्थोंकी स्वाध्याय मन लगाकर कर जावे। संस्कृतमें गति होजानेसे व मूल ग्रंथमें परीक्षित होजानेसे इनकी बुद्धि इतनी खिल गई थी कि यह आत्मानुशासन, रत्नकरंड व मोक्षमार्ग प्रकाशको पढ़कर समझ सकी। इनने अपने स्वाध्याय द्वारा धीरे२ समझते हुए इन तीनों ग्रंथोंको पूर्ण किया, जिससे इनके भावोंमें बड़ा ही परिवर्तन होगया। तबसे इन्हें स्वाध्यायकी बहुत ही गाढ़ रुचि होगई। बंबईके श्वेताम्बर जैन समाजमें माननीय विद्वान पंडित फतहचंद लालन हैं। इनको अध्यात्म विषयका अच्छा अभ्यास था, यह कभी२ सेठ माणिकचंदजीके पास आया करते थे। इनकी आत्मरस गर्भित बातोंपर मगनबाईका ध्यान बड़ी रुचिसे आकर्षित होता था। धीरे२ मगनबाईसे पं० लालनका परिचय बढ़ गया। पंडितजीकी कृपा भी इस अल्पवयस्क विधवापर विशेष हुई

और इसे अध्यात्मरंगमें रंगनेका उत्साह उनके दिलमें उठ आया। यह कभी कभी आते व घंटों बैठकर मगनबाईको आत्मचर्चा सुनाते थे। जब कुछ आत्मलाभ होनेका समय आता है तब उसके अनुकूल निमित्त मिल जाते हैं। अपने पिताकी कृपासे यह एक ब्रह्मचारिणी विद्यार्थीकी भांति रहकर काल यापन करने लगीं। इनके मनसे धीरे२ पतिवियोगका भाव निकलता गया व आत्मप्रेम बढ़ता गया।

पुस्तकोंके पढ़नेका इतना शौक होगया कि हाथमें कोई न कोई गुजराती अच्छी पठनीय पुस्तक रहा ही करती थी। छोटी पुत्री केशरको भले प्रकार पालती हुई, इसी फलको जीवनको संतोषदायक मानती हुई, प्रमादको टालती हुई मगनबाई अपनी दिनचर्यामें सावधान रहा करती थीं। पिताजी जबतक सवेरे या रात्रिको दीवानखानेमें बैठते थे यह भी उन हीके साथ दूसरी कुरसीपर विना सकोचके बैठी रहती थी। परोपकारी पुरुष व स्त्रियोंके जीवनचरित्र पढ़ती, बंबईमें कहीं व्याख्यान सभा होती तो यह पहुंच जाती और बड़ी रुचिसे समाज हितकारी व देशोन्नति कारक भाषणोंको सुनती। धीरे२ यह अपने जीवनको उपयोगी बनानेकी शिक्षा ले रही थी।

ससुरालसे उदासीन वृत्ति।

मगनबाईका चित्त सूरतमें जाकर श्वसुरालमें रहनेसे बिलकुल उचाट होगया था। सेठजीने भी यही ठीक समझा कि इसका वहां वास इसके जीवनको हितकारक न होगा। श्वसुरालका घराना, धनसंपन्न था। तौभी सेठजीने पुत्रकी दृष्टिसे अपनी पुत्रीको देखकर

यह कह दिया कि तू कुछ फिकर न कर। जो तुझे खर्चको चाहिये ले व दान पुण्य करना हो कर। तू अपने पतिके घरकी सम्पत्तिका मोह छोड़दे। यदि धनका मोह करेगी तो गृहस्थकी कीचड़में फंसकर आर्तध्यानसे जीवन बिताएगी। जिस तरह साधारण विधवाएँ रोती हुई व क्लेश मानती हुई जीवन बिताती हैं इससे तुझे धनकी चिन्ता न करनी चाहिये। यह मैं जानता हूं कि तू वहां पुत्र गोद लेकर गृहस्वामिनी रह सक्ती है, परन्तु मैं तुझे अपने आंखोंके सामने तुझे आदर्श धर्मसेविका बनाना चाहता हूं। तू भी विचारले। मगनबाई पिताके वाक्योंको ब्रह्मवाक्यसम मानती थी। इन्हें तो सुरतका वास कारावास या नर्क निवास दिखता था। जब कि इस समुद्र तटपर रत्नाकर पेलेसका वास परम कृपालु पिताकी संगतिमें व सर्व गृह चिन्तासे रहित होनेसे व धर्म रसके पीनेका अवसर मिलनेसे स्वर्गपुरी या अहमिन्द्र लोकसे अधिक सुहावना मालूम होता था। मगनबाईने धनकी स्वामिनी बननेका लोभ छोड़ दिया और एक साध्वीके समान जीवन बितानेका ही भाव दिलमें ठान लिया। अपने पिता ऐसे कृपाकर रक्षकको पाकर मगनबाई अपनेको कृतार्थ मानती थी।

समाचारपत्रोंके पढ़नेसे इनके भावोंमें गंभीरता आती जाती थी। देश विदेशका चरित्र आंखोंके सामने नजर आता था। यद्यपि इनको और स्त्रियोंसे बात करनी पड़ती थी, परन्तु इनका चित्त या तो पिताजीसे या विद्वान पुरुष या स्त्रियोंसे ही बात करनेमें रंजायमान रहता था।

पांचवां अध्याय।

शिक्षाका उपयोग।

मगनबाई अपनी पुत्रीकी पालना करती हुई अपना समय शिक्षा व अनुभवके लाभमें यापन करती थी व अपने पूज्य पिताजीके धार्मिक कामोंमें सहयोग दिया करती थी। वैशाख सुदी ३ संवत

ललिताबाईका परिचय।

१९५६में सूरतमें सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्द जौहरीकी ओरसे चंदावाड़ीके निकट ही श्री शांतिनाथजीके मदिरका जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ था। सेठजी भी सकुटुम्ब पधारे थे। उसी मौकेपर मगनबाईको श्रीमती ललिताबाईसे पहिले पहिले मुलाकात हुई। यह शत्रुंजय तीर्थके मुनीम धर्मचंदजीकी भानजी अंकलेश्वर जिला भरूच निवासिनी थी, मगनबाईके समान आयुधारक विधवा थी। यह भी सस्कृतका अभ्यास कर रही थी। सेठजी व मगनबाईने इन बाईको विद्याभ्यासमें अधिक दत्तचित्त रहनेकी प्रेरणा की। मगनबाईको अपने समान एक विद्याप्रेमी विधवा महिलाका समागम मिलनेसे बहुत ही हर्ष हुआ।

मगनबाई विद्याभ्यासमें निरत थी, परन्तु इनकी माता चतुरबाईको अपनी पुत्रीके वैधव्यसे बड़ा भारी शोक था। शास्त्रज्ञानकी कमीसे यह अपने दिलपर बैठी हुई चोट नहीं भर सकी। जब यह मगनबाईको देखती थी इनकी आंखोंमें आंसू भर आते थे। इनके पुत्रका जन्म तो होता था परन्तु वह जीवित नहीं रहते थे। यह दुसरी चिन्ता इसके घावको और भी गहरा किये हुए थी।

मगसिर सुदी ८ सं० १९५७ की रात्रिको इन्हें निश्चय हो गया कि अब मेरा जीवन नहीं रहेगा। इनने सेठजीको बुलाकर मनका हाल कहा। सेठजीने तुरन्त २०००) का दान उनसे कराया और मगनबाईको सूची उतरवा दी कि यह रुपया किस२ काममें खर्च किया जावे। इस सूचीमें अधिकतर विद्यादान था व तीर्थोंको भेट थी। ९०) का दान सेठजीने इसमें अपनी पुत्री मगनबहिनके लाभके लिये कराया। अर्थात् ९०) देकर मगनबाईको सेठजीने गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी अहमदाबादका लाइफ मेम्बर बना दिया। यह सोसायटी गुजराती भाषामें बहुत उपयोगी साहित्य प्रगट करती है। मगनबाई इस सर्व साहित्यको प्राप्त करके अपने ज्ञानको बढ़ावें ऐसा स्तुत्य हेतु दीर्घदर्शी सेठजीका था।

दूसरे दिन प्रभात ही चतुरबाईका आत्मा शरीर छोड़ गया।

माता चतुरबाईका वियोग।

मगनबाईको अपनी माताका बड़ा भारी सहारा था। अभी इन्हें विधवा हुए दो ही वर्ष बीते थे कि इनके पाससे यह सहारा भी छिन गया। इस समय मगनबाईकी १ छोटी बहिन तारा ७ वर्षकी थी। इसकी रक्षा व शिक्षाका भार मगनबाईने अपने हाथमें लिया।

माघ सुदी ९ सं० १९५७ को आकलूज जि० सोलापुरमें बिम्बप्रतिष्ठा थी। उस समय सेठ माणिकचन्दजीके परिश्रमसे ही स्थापित बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभाको भी निमंत्रण दिया गया था। सेठजी इतने धर्मात्मा थे कि इन्होंने अपनी स्त्रीके वियोगका शोक अधिक नहीं मनाया। यह सकुटुम्ब इस उत्सवमें गए व बड़े उत्साहसे प्रांतिक सभाका कार्य किया। सेठजीने अंकलेश्वर नि०

ललिताबाईको भी इस समय बुला लिया था। माघ सुदी १२ को सेठजीने वहां स्त्रीशिक्षाके उत्तेजनार्थ एक बड़ी स्त्रीसभाका प्रबन्ध कराया और मगनबाई व ललिताबाईको प्रेरणा की कि वे भी कुछ भाषण देवें।

मगनबाईको जैन स्त्रीसभामें भाषण करनेका यह पहला ही अवसर था। साहस करके इनने अनित्य पंचाशतके संस्कृत श्लोक सार्थ नोट कर लिये व संसारकी अनित्यता दिखाते हुए स्त्रीशिक्षा पर जोर दिया। इनका ललित भाषण सुनकर सर्व स्त्रियोंको बहुत प्रसन्नता हुई। ललिताबाईने भी व्याख्यान दिया। इनका भी यह भाषण एक महती स्त्री सभाके मध्यमें पहला ही था। दोनों बहनोंको आज बहुत ही हर्ष हुआ कि उनके भाषणको उपस्थित स्त्री समाजने पसंद किया। सभामें अनेक अजैन प्रतिष्ठित स्त्रियां भी विराजमान थीं वे भी बहुत खुश हुईं।

मगनबाईका प्रथम व्याख्यान।

श्री० सेठ माणिकचंदजीने परिग्रह प्रमाण व्रत लिया था। उसके अनुसार जब संपत्ति पूर्ण होगई तब सेठजीने सं० १९५७ के अंत तकका हिसाब करके अपना भाग कर लिया। सेठजीने तीनों पुत्रियोंके लिये कुछ जायदाद अलग कर दी। उन्होंने एक मकान अपनी बड़ी पुत्री फूलकुमरीके नाम व एक मकान मगनबाईके नाम कर दिया, जिसकी आमदनी (किराएकी) २००) या ३००) मासिक आती है। इस लिखापढ़ीसे मगनबाईको बहुत ही सन्तोष हुआ। क्योंकि इनका लोभ श्वसुरालकी सम्पत्ति परसे तो उदास

मगनबाईको मकानका लाभ।

ही था। अब इनकी जीवनयात्रा निर्वाहनेको यह सदाकी आमद बहुत ही साताकारी होगई।

नियमित काल विताते हुए व ज्ञान साधनसे लगे हुए मगनबाईका समय बीतता चला जाता था। यह पिताके साथ संतोषसे रहती थी। परन्तु धीरे२ कुछ न कुछ चिन्ता कांटेके समान बीचमें आकार दिलमें प्रवेश कर ही जाती थी।

बड़ी बहिनका वियोग।

सं० १९६० में सेठजीकी बड़ी पुत्री फूलकुमरीका यकायक मरण हो गया। यह एक बहुत छोटी वयधारी कमला नामकी कन्याको छोड़ गई थी। इसकी रक्षाका पूरा भार भी मगनबाईपर आपड़ा। अब यह अपनी छोटी बहिन तारा, पुत्री केशर व कमला इन तीनोंकी रक्षा शिक्षाके प्रबंधमें अपना मन भलेप्रकार लगाती थी, तथापि विद्या साधनमें पूर्ववत् उत्साही थी।

शिखरजीकी यात्रा।

संवत् १९६१ में शोलापुरके सेठ रावजी नानचंदजी श्री सम्मेदशिखरकी यात्राको पधारे, उनहीके साथ सेठजीने यात्राका लाभ व परदेशका अनुभव प्राप्त करानेके लिये मगनबाईको भेज दिया। साथमें ललिताबाईको भी कर दिया। रसोइया नौकर चाकर भी साथमें कर दिये जिससे यह स्वतंत्रतासे अपना धर्म साधन कर सकें व निराकुलतासे तीर्थयात्रा करें। सेठजीको पूर्ण विश्वास था कि मगनबाई यात्रामें कभी कष्ट पानेवाली नहीं है। यह इस योग्य थी कि हिंदीमें भी बात कर सकें, इंग्रेजी अक्षर व नाम पढ़ सकें, टिकट मंगवा सकें, असबाब तुलवा सकें। परदेके रिवाजके न होनेसे

यह सब योग्यता एक २९ वर्षकी विधवाके भीतर प्राप्त थी।

बुन्देलखण्डकी, शिखरजीकी व काशी तथा अयोध्याजीकी यात्रा करके लखनऊ पधारीं। सेठजीने प्रसिद्ध बाबू धरमचन्द फतहचंदजी जौहरीका नाम व पता नोट करा दिया था। यह चौकमें ठहरीं। मंदिरजीमें श्री पार्श्वनाथजीकी वेदीके सामने एक दिन प्रातःकाल ९ बजे श्रीमती मगनबाई व ललिताबाई अष्ट द्रव्यसे बड़े भाव सहित व ललित स्वरसे पढ़ती हुई पूजा कर रही थीं, उस समय मंदिरमें अग्रवाल दि० जैन श्री० सीतलप्रसादजी भी और भाइयोंके साथ शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। इनकी आयु २६ वर्षकी थी व परोपकार भावमें निरत थे। धर्मका बहुत प्रेम था। लखनऊके जैन भाइयोंने अपने जीवनमें कभी स्त्रियोंको पूजन करते हुए नहीं देखा था। इन दोनों बाई-योंकी भक्ति देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। जब ये दोनों बाइयें पूजन कर चुकीं तब श्री० सीतलप्रसादजीने साहस करके इनका पता (ठिकाना) पूछा। यह मालूम करके कि यह मगनबाई बम्बई निवासी सुप्रसिद्ध सेठ माणिकचन्दजीकी पुत्री हैं, बड़ा ही हर्ष हुआ। सेठजीका नाम प्रसिद्ध था व श्री० सीतलप्रसादजीने सेठजीको मथुरामें भारत० दि० जैन महासभाके मेलेपर देखा था। तब मगनबाईने पूछा कि क्या यहां कोई श्राविका पढ़ी हुई है? तब उनको श्रीमती पार्वतीबाईका नाम बता दिया गया।

सीतलप्रसादजीका परिचय।

पार्वतीबाईसे मिलकर इन बहिनोंको बहुत हर्ष हुआ। सेठजीने मगनबाईको लखनऊमें बाबू अजितप्रसादजी वकीलका भी नाम

लिखा दिया था। श्री० सीतलप्रसादजीने मगनबाईकी मुलाकात वकील साहबसे कराई। बाईके साथ उनकी कन्या केशरबाई भी थी। उस समय जिस खुले दिलसे मगनबाईने बाबूजीसे वार्तालाप की उससे पता चलता था कि मगनबाईको दुनियांका व सभा सोसायटीका अच्छा अनुभव है। दो दिन तक लखनऊ ठहरीं। श्री० सीतलप्रसादजीके साथ उनकी धर्मचर्चा होती रही, तब सीतलप्रसादजीने इनको उत्तेजित किया कि ये स्त्री शिक्षाके प्रचारार्थ उद्यम करें व लेख लिखकर भेजें जो जैनगजटमें छपा दिये जांयगे। उस समय महासभाका जैनगजट लखनऊ हीमें छपता था व प्रबंध श्री० सीतलप्रसादजीके हाथमें था।

उज्जैनकी बिम्बप्रतिष्ठा।

इसी वर्ष चैत्र सुदी ९ से १३ तक उज्जैनमें बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव इन्दौरके सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजीकी तरफसे था। इस मेलेकी बड़ी धूम थी। इसलिये बहुत दूर दूरसे लोग आए थे। सेठ माणिकचंदजी भी मगनबाईजी व कुटुम्बके साथ पहुंचे। ललिताबाई भी साथ थीं। अब तो मगनबाई व ललिताबाईका गाढ़ सखापन हो गया। दोनों बहनें बहुधा साथ रहनेका प्रयत्न करती थीं। मगनबाईजीने वहां कन्याओंकी परीक्षा ली व इनाम बांटा व श्रीमती शृंगारबाई व हंगामीबाई आदिके साथ धर्मचर्चा करके आनंद उठाया।

जैनगजटमें प्रथम लेख।

श्री० सीतलप्रसादजीकी शिक्षाको मान्य करके मगनबाईने एक लेख स्त्रीशिक्षापर लिखकर भेजा जिसको शुद्ध करके श्री० सीतलप्रसादजीने जैनगजट अंक २२ ता० १-६-१९०९ में मुद्रण करा-

दिया। यह लेख हिंदीमें था। मगनबाईकी मातृभाषा गुजराती थी, परन्तु हिंदी शास्त्रोंके स्वाध्याय करनेसे व हिंदी जाननेवालोंके साथ वार्तालाप करनेसे इनको हिंदी बोलने व लिखनेका कुछ अभ्यास होगया था। व्याकरणकी अशुद्धता बहुत रहती थी। इस लेखके कुछ वाक्य पाठकोंके जाननेके हेतु इसलिये लिखे जाते हैं कि यह विदित हो कि उस समय जैन स्त्रियां विद्या पढ़ना अपशकुन समझती थीं। वे वाक्य हैं–"मालवा, बुन्देलखण्ड आदि प्रांतोंमें मैंने यात्रार्थ पर्यटन करते बड़ी ही आश्चर्योत्पादक किम्वदन्ती सुनी! उस देशमें हमारी स्त्रियाँ बतलाती हैं कि पढ़नेसे स्त्रियाँ विधवा होती हैं–दोष लगता है!" अब यह बहुधा लेख भेजा करतीं थीं जो शुद्ध करके जैनगजटमें छप जाया करते थे।

उपदेशका असर।

लखनऊमें मगनबाईकी प्रेरणासे श्रीमती पार्वतीबाईको धर्मोपदेश देनेकी रुचि बढ़ गई थी। इससे उन्होंने प्रति चौदसको सभा करना निश्चय किया। उस सभाका नाम श्राविका तत्वबोधिनी रक्खा था।

सहारनपुरमें उपदेश।

सहारनपुरमें सन् १९०९ के दिसम्बरकी छुट्टियोंमें भारत० दि० जैन महासभाका वार्षिकोत्सव था। सेठ माणिकचंदजी सभापति थे। सेठजी सकुटुम्ब व मगनबाई सहित पधारे थे। अब मगनबाईको स्त्रियोंमें धर्मोपदेश देनेकी रुचि बढ़ गई थी। ता० २६ दिसम्बरको जैन यगमेन एसोसियेशनके जलसेमें जब मंडप स्त्रीपुरुषोंसे भरा हुआ था, तब मगनबाईजीने स्त्रीशिक्षापर हिंदीमें बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया। उस भाषणको सुनकर जनता बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि जैन

स्त्रियोंमें यह पहली ही महिला थी जिनने विना संकोचके व बेधड़क अपनी वक्तृतासे जनताको मोहित किया था। पं० अर्जुन-लालजी सेठी जयपुरने महासभाकी ओरसे प्रगट किया कि उक्त बाईको एक सुवर्णपदक प्रदान किया जाय। बाईजीके उपदेशसे स्त्रीशिक्षार्थ कुछ फंड भी होगया। ता० २७ की रात्रिको स्त्रीसभामें मगनबाईजीने श्री रत्नकरंड श्रावकाचारका वाचन भी किया था।

स्तवनिधिमें उपदेश।

कोल्हापुर राज्यके स्तवनिधि क्षेत्रपर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन ता० ९ से ११ जनवरी सन् १९०६ तक हुआ था तब सेठ माणिकचंदजीके साथ मगनबाईजी भी पधारीं व ता० ११ की रात्रिको स्त्रियोंकी महती सभा हुई। जिसमें सभापतिका आसन श्री० मगनबाईजीको दिया गया। इनकी विद्वत्ता व वक्तृ-ताकी महिमा जैनजनतामें फैल गई थी। मगनबाईने अपने भाषणसे सारी सभाको प्रसन्न किया व स्त्रीशिक्षार्थ कुछ चंदा भी कराया व अनेक बहिनोंको पढ़नेकी प्रेरणा की।

वम्बईमें उपदेश।

बंबईमें सेठ माणिकचंद पानाचंदजीकी हीराबाग धर्मशालामें पानीपत, सिवनी व दिहलीके संघ यात्रार्थ आए हुए थे। तब उसमें कईसौ स्त्रियोंका समागम देखकर मगनबाईके भाव हुए कि उनको धर्मोपदेश देना चाहिये। इसलिये ता० १९ जनवरीको हीराबाग लेक्चर हॉलमें एक सभा करके उसमें शिक्षाके ऊपर भाषण देकर स्त्रियोंसे धार्मिक प्रतिज्ञाएं कराई थीं।

श्रीमान् सीतलप्रसादजी चौपाटीके रत्नाकर पैलेसमें ही रहते हुए सेठ माणिकचन्दजीके साथ परोपकारके कार्योंमें रात दिन निरत थे। तब मगनबाईको एक आदर्श श्राविका स्वपर उपकारका बनानेके भावसे आप मगनबाईको घण्टा डेढ़ घण्टा रोज शास्त्र स्वाध्याय कराते थे। कई वर्षोंकी संगतिसे मगनबाईने इनकी सहायतासे श्री अर्थ प्रकाशिका, बृहत द्रव्य संग्रह, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार आदि ग्रन्थोंका सस्कृत टीका सहित मनन किया जिससे संस्कृत व धर्म दोनोकी योग्यता बढ़ी। स्त्रीशिक्षाके प्रचारके लिये श्री० सीतलप्रसादजी निरंतर मगनबाईको प्रेरणा करते रहते थे और यह समझाते थे कि जबतक जैन अध्यापिकाएँ न बनेंगी तबतक जैन कन्याशालाएं नहीं खुल सक्तीं। इसलिये तुम्हें एक श्राविकाश्रम खोलके उसमें विधवाओंको शिक्षा देकर तय्यार करना चाहिये। मगनबाईजीके चित्तमें यह बात जम गई थी। वह वारवार सेठजीको समझाया करती थीं, परन्तु सेठजी ध्यान नहीं देते थे।

विशेष स्वाध्याय।

एक दिन सवेरे मगनबाईजीके सामने श्री० सीतलप्रसादजीने सेठजीको १ घण्टा समझाया, सेठजीके दिलमें बात जम गई तब सेठजीने कहा कि पहले देखना चाहिये कि कोई विधवा यहां आती भी है। मैं ३–४ कोठरियां खाली कर देता हूँ। बहिन मगन! पत्रोंमें नोटिश देकर पढ़नेवालियोंको बुलावो, उनके खानपानादिकी सर्व व्यवस्था हो जायगी। मगनबाईजीको बड़ा ही हर्ष हुआ। इन्होंने तुर्त एक नोटिस ता० १६ फर्वरी १९०६के जैनगजटमें

श्राविकाश्रमका प्रयत्न।

छपवाया कि बंबईमें श्राविकाश्रम खोलनेका प्रबंध हुआ है, श्राविकाएं फार्म मंगाकर स्वीकारता होनेपर यहां आवें। यही वर्तमान श्राविकाश्रमका बीजारोपण है।

मगनबाईजीको यह भी प्रेरणा की गई थी कि वे बाहरकी पढ़ी लिखी बहनोंसे पत्रव्यवहार करके स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजना करें। मगनबाईने नित्यप्रति पत्र लिखना प्रारम्भ कर दिये इसके फलका नमूना यह है कि मुरादाबादकी श्री० गंगाबाईने लिखा कि मैंने मंदिरजीमें सवेरे ८से ९ तक स्त्रियोंको पढ़ाना शुरू किया है, चार स्त्रियां छःढाला पढ़ती हैं व अष्टमी व चौदश उपदेश सभा नियत की है। ईडरसे जानकीबाईने लिखा कि मैंने रात्रिको शास्त्र सुनाना शुरू किया है व प्रतिमासकी सुदी १४को स्त्री धर्मप्रकाशिनी सभाका अधिवेशन हुआ करेगा। अंकलेश्वरकी ललिताबाईने ४ स्त्रियोंको मार्गोपदेशिका संस्कृत पढ़ानी शुरू की व लेख लिखना प्रारम्भ किया है। जैनगजट अंक ११ वर्ष ११ ता० १६ मार्च १९०६ के अङ्कमें ललिताबाईका एक लेख निकला जिसका शीर्षक था "जैन भगिनियों प्रति उत्तेजना"। इस तरह मगनबाईजीको नित्य पत्र लिखनेकी व स्त्री शिक्षाके प्रचारकी आदत पड़ गई। इनका वैधव्य परोपकार व आत्म विचारमें भलेप्रकार बीतने लगा, खाने पीने आदिका मौज शौक बिल्कुल जाता रहा।

स्त्रीशिक्षार्थ पत्रव्यवहार।

मगनबाईजीके पत्रव्यवहारके फलसे श्री० सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी आनरेरी मजिस्ट्रेट शोलापुरकी विधवा पुत्री कंकुबाईसे विशेष

कंकुबाईजी कार्यक्षेत्रमें।

परिचय होगया। यह भी स्त्रीसमाजकी सेवामें सलग्न होगई। लेख लिखना भी स्वीकार किया। इनका पहला लेख सप्त तत्त्वपर जैनगजट अंक १७ ता० १ मई १९०६ में मुद्रित हुआ। सेठ माणिकचन्दजीने जबलपुर जैन बोर्डिंगके मुहूर्तके लिये जब प्रस्थान किया तब साथमें मगनबाईको भी लिया। अब तो मगनबाईजीका यही धार्मिक व्यापार होगया था कि जहां भी जाना वहां स्त्रियोंको धर्ममार्गपर व शिक्षापर उत्तेजित करना। मगनबाईके भाषणकी प्रशंसा भी यत्रतत्र फैल गई थी। पुरुष भी चाहते थे कि उनका व्याख्यान सुने।

जबलपुरमें कन्याशालाकी स्थापना।

ता० २७ अप्रैल १९०६ को प्रातःकाल जैन पाठशालामें स्त्री व पुरुषोंकी संमिलित सभा हुई। सभापतिका आसन यहांकी फीमेल ट्रेनिग कालेजकी सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस एस० इग्रेजने ग्रहण किया। बाईजीने १॥ घण्टा स्त्री शिक्षाकी आवश्यक्ता पर बहुत ही असरकारक भाषण दिया व कन्याशालाके स्थापनकी प्रेरणा की। सभापतिने इस प्रस्तावपर जोर दिया व स्वयं ९) प्रदान किये। स्त्रियोंने तुर्त १९००) का चंदा कर दिया। रात्रिको मगनबाईजीका उपदेश स्त्रियोंमें विनय व शील धर्मपर हुआ।

सूरतमें कन्याशाला।

श्रीमती मगनबाईको यह चिन्ता हुई कि अपने कुटुम्बकी जन्मभूमि सूरतमें कोई भी दिगम्बर जैन कन्याशाला नहीं है, तब मगनबाईजीने सेठजीको प्रेरणा की। जिसका फल यह हुआ कि जब सूरतमें ता० २९ मई १९०६ को नवापुराकी फूलवाड़ीमें यहांके सर्व
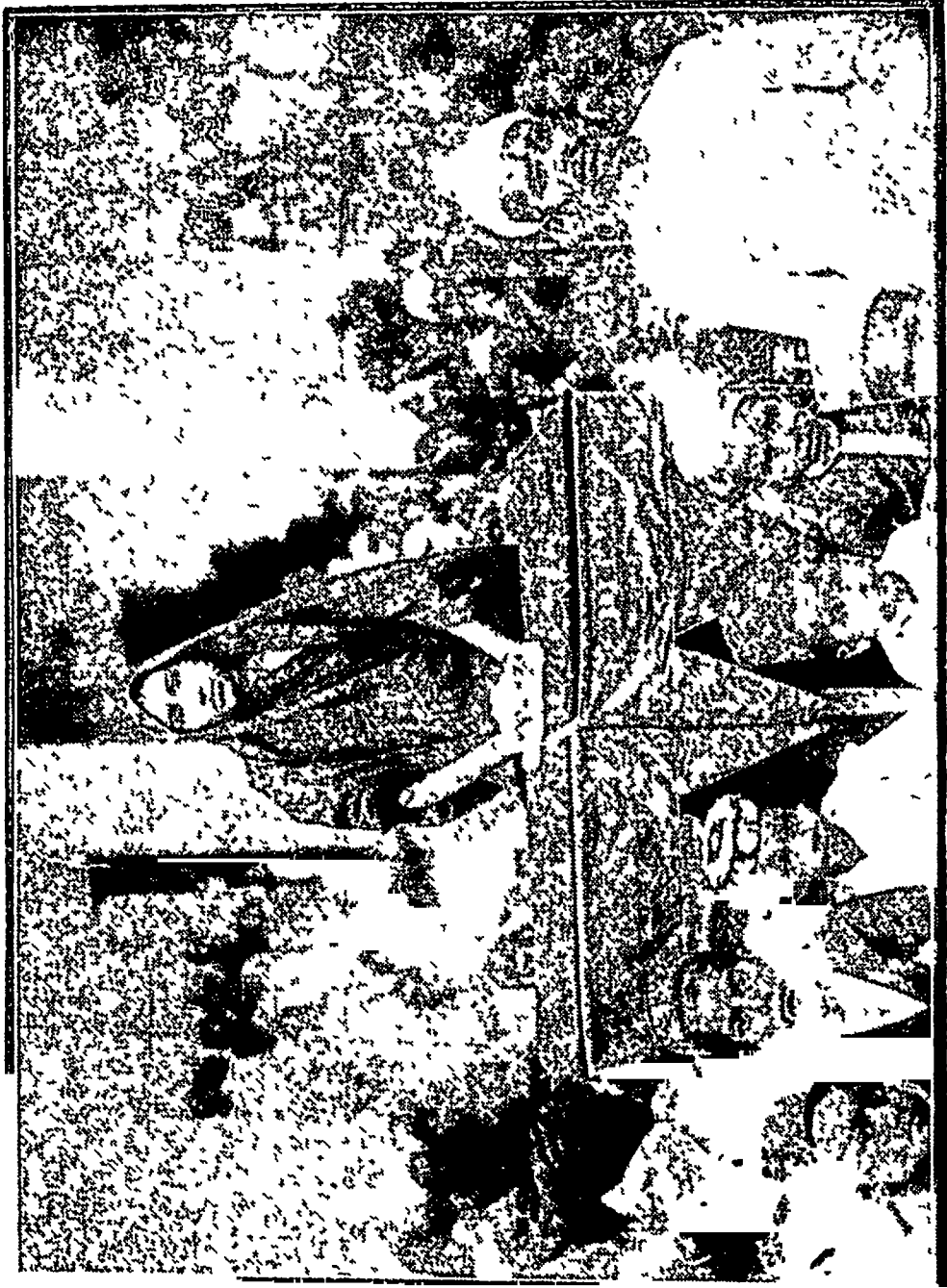
महिलारत्न मगनबाईजी जैन शिक्षा प्रचारक समिति जयपुरमें व्याख्यान देरही हैं।

जैनविजय प्रिन्टिंग प्रेस-सूरत.

दि० जैनोंकी तरफसे एक सभा सेठजीको जे० पी० की पदवी मिलनेके उपलक्षमें मानपत्र देनेके लिये हुई तब सेठजीने अपनी लघुता प्रगट करते हुए नवापुरामें अपनी स्व० पुत्री फूलकुमरीके नामसे 'फूलकौर कन्याशाला' खोलनेके लिये ९०००)का दान किया।

भातकुलीमें उपदेश।

बरार प्रांतके भातकुली क्षेत्रपर बरार और मध्यप्रदेश दि० जैन प्रांतिक सभाका वार्षिकोत्सव ता० ६ व ७ नवम्बर १९०६ को था व सेठ माणिकचंदजी सभापति निर्वाचित हुए थे। सेठजी सकुटुम्ब पधारे। ता० ७ को महिलापरिषद्का जलसा हुआ। २५०० स्त्रियोंकी उपस्थिति थी। सौ० गुंजाबाई प्रमुखा थीं। उस समय मगनबाईने स्त्रियोंके कर्तव्यपर बहुत ही असरकारक भाषण दिया व पढ़ी हुई स्त्रियोंको जैनधर्मकी छपी पुस्तकें वितरण कीं।

कलकत्तेमें सुवर्ण-पदक।

दिसम्बर १९०६ के अंतिम सप्ताहमें जब कलकत्तेमें राष्ट्रीय महासभाका २२ वां अधिवेशन दादाभाई नौरोजीके सभापतित्वमें हुआ था तब कलकत्तेके जैनियोंने भा० दि० जैन महासभा और जैन यंगमेन्स एसोसियेशनको निमंत्रण दिया था। सेठ माणिकचंदजीको जरा भी आलस्य न था। धर्मप्रभावनाके लिये आप सकुटुम्ब मगनबाई सहित कलकत्ते पधारे। सहारनपुरके महासभाके अधिवेशनमें जैसा निर्णय हुआ था तदनुसार महासभाके जलसेके समय श्रीमती मगनबाईजीको सुवर्णपदक प्रदान किया गया। लाला रूपचंदजी रईस सहारनपुर सभापति थे। उस समय मगनबाईजीकी सुकीर्ति व भाषणकलाकी प्रशंसा करते हुए बिना किसी

परदेके व विना किसी संकोचके पुरुषोंकी सभामें उपस्थित होनेवाली वीर महिलाको जब यह पदक दिया गया तब इस प्रतिष्ठित धर्मवीरांगनाने अपनी मिष्टध्वनिसे श्री जिनेन्द्रको नमस्कार करके अपनी अति लघुता प्रगट करते हुए परम हर्ष प्रकाशित किया व महासभाको धन्यवाद दिया। इस स्वर्णपदकमें दोनों ओर इस भांति लेख अंकित है—

एक तरफ है—Gold Medal awarded to Pandita Maganbai for her excellent lecture on femal education.

दूसरी तरफ है—Presented by Digamber Jain Maha Sabha of India 1906.

भावार्थ—भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने १९०६ में स्त्री शिक्षाके उत्तम भाषणके उपलक्ष्यमें पंडिता मगनबाईको सुवर्णपदक भेट किया।

गजपंथामें भाषण। माघ सुदी १३ (सं० १९६३) १९ व ता० २७-२८-२९ जनवरी १९०७ को बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाका चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र जिला नाशिकमें हुआ था। उस समय श्रीमती कंकुबाई शोलापुर व मगनबाईने स्त्रियोंमें जागृति की। ता० २९ की रात्रिको स्त्री शिक्षाके उत्तेजनार्थ भाषण दिये थे।

फलटनमें जागृति। चैत्र सुदी ९ से फलटन जिला सतारामें बिम्बप्रतिष्ठा थी तथा बंबई दिगम्बर जैन प्रांतिक व दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका संयुक्त नैमित्तिक अधिवेशन भी था। मगनबाई भी पधारी थीं। कंकुबाई भी आई थीं।

दोनों महिलाओंने नित्य स्त्रियोंको नाना प्रकारके उपदेश दिये। ता० २७ अप्रेलको एक बड़ी महिला परिषद् हुई, अध्यक्ष स्थान कंकुबाईने ग्रहण किया था। अध्यक्षाके व मगनबाई व अन्य कई महिलाओंके भाषण हुए। धार्मिक शिक्षाकी रुच स्त्रियोंमें पैदा हो इसलिये मगनबाईने ५०० भाषा प्रवेशकी पुस्तकें वितरण कीं। स्त्री शिक्षार्थ कुछ चंदा भी हुआ।

फूलकौर कन्याशाला-का उद्घाटन।

ता० २३ मई १९०७को सूरतमें सेठ हीराचन्दजी शंकापुरके हाथसे फूलकौर कन्याशाला स्थापन हुआ जिसके लिये सेठ माणिकचंदजीने ५०००) प्रदान किये थे। इस समय मगनबाईजीने भी १२५) प्रदान किये व इस संस्थाके खुलनेका महान् हर्ष माना व कन्याशालाकी सर्व व्यवस्था सेठजीकी सम्मतिसे की व इसमें धार्मिक शिक्षाका प्रबन्ध किया।

बम्बईमें जागृति।

आरा निवासी बाबू देवकुमारजी दक्षिणकी यात्रा करते हुए जब बंबईमें पधारे तब ता० २० जूनको श्रीमती मगनबाईजीने एक स्त्रीसभा भोईवाड़ेके दिगम्बर जैन मंदिरमें की। उक्त बाबू साहबकी धर्मपत्नी गुलाबदेवीने अध्यक्षताका स्थान ग्रहण किया फिर मगनबाईजीने धर्म-शिक्षा व गृहस्थ धर्मपर बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया व मासिक स्त्री सभा करनेका निश्चय किया।

जबलपुरमें भाषण।

जबलपुर दि० जैन बोर्डिंगके वार्षिकोत्सवके हेतु सेठ माणिकचंदजी मगनबाई व ललिताबाई सहित जबलपुर पधारे। पंडिता चंदाबाईजी अपने जेठ बाबू देवकुमारजीके साथ पधारी थीं। ता० २३, २९ व २९

जूनको तीन स्त्रीसभाए बड़े जोर शोरके साथ हुईं जिनमें मगन-बाई, ललिताबाई व चंदाबाईजीने बड़े प्रभावशाली भाषण दिये। यहां पहले कन्याशाला मगनबाईजीके उपदेशसे खुल चुकी थी। मगनबाईजीने कन्याओंकी परीक्षा लेकर पारितोषिक बांटा। सभामें ता० २९ जूनको लेडी सुप्रिन्टेन्डेन्ट फीमेल ट्रेनिंग कालेज भी पधारीं थीं जो मगनबाईजीके भाषणको सुनकर बड़ी ही प्रसन्न हुईं।

बम्बईमे आमसभा।

मगनबाईजी स्त्रीसमाजमें जागृति करनेके कार्यमें प्रयत्न करती हुई अपने नित्य धर्मसाधनमें व ज्ञानलाभमें उद्यमवंत थी। यह नित्य पूजा करतीं व सवेरे व शामको सामायिक करतीं थीं। श्री० सीतलप्रसादजीके साथ स्वाध्याय करके अबतक अर्थ प्रकाशिकाका अच्छी तरह मनन किया व बृहत् द्रव्य संग्रह व पंचास्तिकायकी संस्कृत टीका भी देख डाली थी। पत्रोंके लिये हिन्दी भाषामें लेख लिखती थीं जिन्हें सीतलप्रसादजीसे शुद्ध करा लेती थीं। बंबईमें हेमंत व्याख्यानमालाकी ओरसे प्रति शनिवार भाषण हीराबाग धर्मशालामें प्रारम्भ हुए। योजकोंकी इच्छानुसार मगनबाईजीने भी ता० ७ नवम्बर १९०७को "आर्य स्त्रियोंके चरित्र" पर एक बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया जिसको सुनकर बम्बईकी आमजनता मुग्ध होगई और मगनबाईकी भाषण कला व विद्याकी भूरि २ प्रशंसा करने लगी।

सूरतमें आम भाषण।

सन् १९०७ दिसम्बरके अन्तमें सूरतमें राष्ट्रीय महासभाका अधिवेशन था जो गर्म व नर्म दलमें मतभेद होनेके कारण स्थगित होगया था। इसी अवसर पर कांग्रेसके मण्डपमें भारतीय सोशल कान्फरेन्सका

जलसा हुआ। उस समय मगनबाईने स्त्रीसमाजके सुधार व शिक्षा-पर बहुत ही असरकारक भाषण दिया। सर्व पबलिक-स्त्री पुरुष भाषण सुनके आश्चर्यमें भर गए व मगनबाईकी बुद्धिकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करने लगे।

कोल्हापुरमें श्राविकाश्रम।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन ता० १७ जनवरीसे २० तक स्तवननिधि क्षेत्रमें था। इस जलसेमें मगनबाईजी अन्य धार्मिक कार्यके कारण स्वयं उपस्थित नहीं होसकीं थीं, परन्तु आपने कोल्हापुरमें श्राविकाश्रमकी आवश्यक्तापर एक लेख भेज दिया था। यह लेख सच्चे हार्दिक भावसे लिखा हुआ था। ता० १८ जनवरीकी सभामें यह पढ़कर सुनाया गया। इस लेखने ऐसा असर किया कि द० म० जैन सभाने पांचवा प्रस्ताव यह किया कि कोल्हापुरमें एक श्राविकाश्रम खोला जावे। इसके लिये कुछ फंड भी होगया। ता० ३० जनवरीको इसका मुहूर्त करना भी निश्चित होगया। यह तय हुआ कि श्रीमती मगनबाईके द्वारा इसका उद्घाटन किया जावे। बाईजी पहुंची व सभा एकत्र हुई। उस समय डाक्टर कृष्णाबाई केलवकर एल० एम० डी० भी हाजिर थीं। मगनबाईने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया व बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया। इस समय बाईजीने मराठी भाषामें ही कहा। मगनबाईजीको गुजरातीके सिवाय हिन्दी व मराठीमें भी व्याख्यान देनेकी अच्छी चतुरता आगई थी। इस भाषणमें आपने दिखलाया कि केवल कोल्हापुर प्रांतमें ५००० विधवाएँ हैं व दक्षिण महाराष्ट्रमें १५००० हैं। ये बिचारी अबलाएँ ज्ञान विना अपना जीवन व्यर्थ बिता रही

हैं। इनके ज्ञान संपादनार्थ श्राविकाश्रम जैसी संस्थाओंकी बहुत जरूरत है। द० म० जैन सभा इस कार्यको प्रारम्भ कर रही है इसलिये यह सभा धन्यवादकी पात्र है। बाईजीने आश्रमको खोलना प्रकाशित करते हुए १००) की मदद दी व जो कमेटी प्रबंधके लिये बनी उसमें मगनबाईजीको अध्यक्ष नियत किया गया।

पावागढ़में जागृति।

पावागढ़ सिद्धक्षेत्र जिला बड़ौदामें मुंबई प्रांतिक सभाका ता० १२ फर्वरीसे १९ तक वार्षिक अधिवेशन हुआ, उस समय श्री मगनबाईजीकी प्रेरणासे कंकुबाई और ललिताबाई भी पधारीं। तीनों बहनोंने इस मेलेमें स्त्रियोंके अंतर धर्मजागृति फैलानी शुरू करदी। ता० १७ फर्वरीकी रात्रिको एक बड़ी महिलापरिषद् हुई। अध्यक्ष स्थान सेठ माणिकचन्दजीकी धर्मपत्नी नवीबाईने ग्रहण किया था। इस समय तीनों विदुषी बहनोने बड़े ही असरकारक गुजराती भाषामें भाषण दिये। गुजरातकी स्त्रियोंमें गाली गाने व रोने कूटनेका रिवाज था, उसका निषेध करके बाईजीने स्त्रियोंसे उनके त्यागका नियम कराया व स्त्रियोंको बाईजीने श्रावकाचार नामकी पुस्तकें भेट दीं।

कुण्डलपुरमें प्रचार।

ता० २८ मार्चसे ३१ तक कुण्डलपुर अतिशयक्षेत्र जिला दमोह मध्यप्रांतमें भारत० दिगम्बर जैन महासभाका वार्षिकोत्सव बाबू देवकुमारजी रईस आराके सभापतित्वमें हुआ था। सेठ माणिकचन्दजी मगनबाई सहित पधारे थे। लखनऊसे श्रीमती पार्वतीबाई व शोलापुरसे कंकुबाई भी आगई थीं। बहुत बड़ा समूह एकत्र था। तीनों बाइयोंने अनेक विषयोंपर नित्य उपदेश दिया। मगनबाईने २००० भाषा

प्रवेशकी पुस्तकें स्त्रियोंमें बांटीं व स्त्रियोंको शिक्षाकी तरफ प्रेरित किया। दमोहमें कन्याशालाके लिये २२६) रुपया वार्षिकका चन्दा करा दिया।

यहींपर बड़वाहा (नीमाड़) निवासिनी श्रीमती केशरबाईने मगनबाईकी मुलाकात ली। केशरबाई एक धनिक विधवा थी। मगनबाईने उपदेश देकर उन्हें दृढ़ किया कि वह अपना धन स्त्री शिक्षा प्रचारार्थ खर्च करें।

जैपुरमें उपदेश।

जैपुरमें पंडित अर्जुनलालजी सेठी बी० ए०ने एक जैन शिक्षा-प्रचारक समिति स्थापित की थी, इसके द्वारा वह जैनियोंमें शिक्षाका प्रचार कर रहे थे। कार्तिक सुदी १—२ को इसका वार्षिकोत्सव था। मगनबाईजीको अतिशय प्रेरणा रूप निमंत्रण आया। बाईजीको तो निरंतर यह ध्यान रहता था कि सारे भारतमें भ्रमण करके स्त्रियोंमें शिक्षाकी उत्तेजना की जावे। इसलिये राजपूतानामें जागृति करनेका अच्छा अवसर समझकर बाईजी जयपुर पधारीं। बाईजीके भिन्न२ स्थानोंमें कई भाषण हुए, स्त्रियोंमें शिक्षा ग्रहणकी विजलीसी फैल गई। बाईजीके उपदेशसे गुमानी मंदिरमें पद्मावती कन्याशाला खोली गई, जिसमें बाईजीने १०) मासिक विधवाफंडसे व ५) मासिक अपने निजफंडसे मदद देना प्रारम्भ किया। पाठकोंको ज्ञात हो कि बाई-जीने विधवाओंकी सहायतार्थ एक फंड अपने पास खोल रक्खा था।

स्तवनिधिमें जागृति।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिकोत्सव ता० ५ से ८ जनवरी १९०९ को स्तवनिधिक्षेत्रपर था। सेठ माणिकचंदजी अपनी परोपकार—कुशल पुत्री मगनबाईके साथ पधारे। इस समय महिला परिषदका एक

बृहत् अधिवेशन श्रीमती कंकुबाईकी अध्यक्षतामें हुआ। उस समय श्रीमती मगनबाईने बड़ा ही उत्तेजक भाषण दिया। उसमें ये शब्द भी कहे—"हे बहिनो! जैसे तुम अपने पुरुषोंसे गहनोंके वास्ते हठ करती हो वैसे ही विद्या सीखनेमें हठ करो।" सभामें दो कन्याओंने मगनबाईकी स्तुतिमें ललित पदोंमें एक कविता पढ़ी जो नीचे दीजाती है—

धन्य! धन्य! तू सुगुणशालिनी मगनबाइ भगिनी।
भूषविला स्त्री समाज आजी ज्ञानदान करुनी॥ धृ०॥
इहलोकी स्त्रीपुरुषा मोठे भूषण ज्ञान असे।
भगिनिजनां तें प्राप्त हो कसें तुज चिंता विलसे॥

कलिकालाचा दुस्तर फेरा अज्ञाना वितरी।
त्यायोगें ज्ञानाध जाहले समाज एकसरी॥
भरतजननिच्या शुभ दैवानें आगलप्रभृ मिळले।
ज्ञानबलें आर्यातें त्यानी बुद्धिवन्त केले॥

आमुचा बनला जैनसंघ तव प्रागतीक जगतीं।
हिरे माणकें तयात रत्नें चकाकती पुढतीं॥
ज्ञानार्जनि गृहिसंघ पुढें हों स्त्रीसमाज मागें।
उरला देखुनि भगिनीहृदयीं चिन्ता बहु जागे॥

'अनभिषिक्त भूपा' ची कन्या धर्मशील बाला।
स्त्री उन्नति होण्यास स्थापी 'श्राविकाश्रमाला'॥
त्या आश्रमिच्या आम्ही बाला ज्ञानार्जन करुनी।
सद्धर्म वागोनी जाऊं भावोदधी तरुनी॥

स्त्रीवर्गावर मगनबाईनें केला उपकार।
जन्मोजन्मीं न हो! तयाचा आम्हांतें विसर॥

अनभिषिक्त राजा करवीं हो! समाजहितकृत्यें।
स्त्री उन्नतिपर कार्यें होवो! भगिनीच्या हस्तें॥

भो! **जिनवरा** जगन्मगला, ठेव सुखी आम्हुची।
राजकन्यका **मगनबाई** ही पित्यासवें साची॥ १॥

स्तवनिधिके पीछे ही तारंगाजी सिद्धक्षेत्र राज्य बड़ौदामें बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका वार्षिकोत्सव माघ सुदी २से था। सेठजी मगनबाई सहित पधारे। इस अवसरपर एक बड़ी भारी स्त्रियों-की सभा सेठ हीराचंद अमीचंदकी धर्मपत्नी नवलबाईकी अध्यक्षतामें हुई। इसमें मगनबाईने बड़े ही जोरदार शब्दोंमें बम्बई प्रान्तमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रमके स्थापनकी आवश्यक्ता प्रगट की व स्वयं १०००) देनेका वचन दिया। इसी समय ४०००) का चंदा होगया। और यह निश्चय किया गया कि अमदावादमें श्राविकाश्रम खोला जावे। वास्तवमें मगनबाईजी अब दिन रात जैन स्त्री समाजके उद्धारके लिये प्रयत्नशील थीं।

तारङ्गामें श्राविकाश्रमका प्रस्ताव।

जब सेठजीकी सम्मतिसे मगनबाईने जैनगजटमें यह सूचना निकाली थी कि जो बाई पढ़ना आना चाहे व बंबई आसक्ती है, तब एक बालविधवा १८ वर्षकी आई थी जो बिलकुल अक्षरज्ञानशून्य थी। आज यह बाई सोजित्रा श्राविकाश्रममें मुख्य अध्यापिका हैं। ट्रेनिंग पास हैं व धर्मशास्त्रसे विज्ञ हैं व स्त्री समाजका उद्धार कर रही हैं। इनका नाम प्रभावती है। इस विधवाकी दशा देखकर सेठजीको व मगनबाईजीको दोनोंके दिलमें यह बात आगई थी कि विधवाओंके जीवनके सुधारके लिये श्राविकाश्रम जरूर खोल देना चाहिये। तथा एक इन्दौरनिवासिनी आनन्दीबाई आई थी जो बराबर मगन-बाईजीके साथ रहकर शिक्षा लेती रहती थीं।

ता० ९ मई १९०९ को बम्बईमें ऐलक पन्नालालजीका केशलोंच समारम्भ था, बहुत नरनारी एकत्र हुए थे। यद्यपि मुनि तथा एक लंगोटधारी ऐलकको केशलोंच एकांत हीमें करना चाहिये तथापि उत्तर भारतमें कुछ कालसे दिगम्बर जैन समाजमें केशलोंच कर्ता पात्र नहीं दिखाई पड़ते थे, इसलिये जनताको यह कार्य आश्चर्यकारी भासता था। इसलिये लोगोंने ऐसे अवसरपर एकत्र होनेका समारंभ करडाला। मगनबाईजीको अब यही धुन लगी थी कि किसीप्रकार शीघ्र ही अहमदाबादमें श्राविकाश्रम खोला जावे व इसके लिये उदार पात्रोंसे धन भी एकत्र किया जाय। इस समय बड़वाहा नि० श्रीमती केसरबाई आई हुई थीं। उनको उपदेश देकर उनसे मगनबाईजीने ११००) का दान ध्रुवफंडमें कराया। रातदिन श्राविकाश्रमकी चिन्तामें दत्तचित्त मगनबाईने सेठ माणिकचंदजीकी सम्मतिसे यह निश्चय कर लिया कि आसौज सुदी ११ ता० २९ अक्टूबर १९०९ को अहमदाबादमें श्राविकाश्रमका अवश्य मुहूर्त किया जावे। यह वही श्राविकाश्रम है जो इस समय बंबईमें स्थापित है व जो जैन स्त्रीसमाजकी अपूर्व सेवा कर रहा है।

श्राविकाश्रमको दान।

छठा अध्याय।

श्राविकाश्रमकी सेविका।

पाठकगण! देखेंगे कि बड़े धनिककी पुत्री अब अपना सर्व जीवन एक श्राविकाश्रमकी सेवामें अर्पण करती है। रातदिन बहनोंकी रक्षा व शिक्षामें अपना तन मन धन लगाती है। जो महिला समुद्र-तटपर रत्नाकर पैलेसके सजे हुए कमरेमें आराम-कुरसी पर बैठकर समुद्रकी ताजी हवा लेती, चिंता रहित हो संसारकी चरचा करती, निःसंकोच हरएकसे पुरुषवत् मिलती व नाना विषयोंपर संभाषण करती, वही महिला अब निर्धन बहनोंकी सुश्रूषा व वैय्यावृत्यमें एक सेविकाके समान अपना समय बिताती है।

अहमदाबादमें श्राविकाश्रम।

आसोज सुदी ११ संवत १९६६ ता० २९ अक्टूबर सन् १९०९ का बड़ा ही शुभ दिन था। उस दिन सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग अहमदाबादके सामने एक किरायेका मकान लेकर श्राविकाश्रमके स्थापनका मुहूर्त किया गया। इस संस्थाके उद्घाटनके लिये जो महती सभा स्त्री पुरुषोंकी जोड़ी गई उसकी प्रमुखाका स्थान बंबईकी परोपकारिणी महिला श्रीमती जमनाबाई सकाईने ग्रहण किया। ललिताबाई व मगनबाई दोनोंने अपना सर्व जीवन आश्रमकी सेवार्थ अर्पण किया। अध्यक्षाने कहा—"धर्म व नीतिकी ज्ञाता पवित्र माता बनानेसे ही इस आर्य-भूमिमें धर्मिष्ठ व परोपकारी प्रजारत्न उत्पन्न होंगे। अज्ञान माताकी अज्ञान प्रजा देशको अधम बनावेगी।" भाषणके साथ२ ५१)रु०

भी प्रदान किये। रात्रिको सभामें ३००) का चन्दा भी होगया। इस समय आश्रममें चार बाइयें भरती हुई। परन्तु एक वर्षके भीतर १२ श्राविकाएं भरती होगई जिनमें कन्याएं ७, सधवाएं ३ व विधवाएं १२ थीं। जो आमोद, छाणी, बड़ौदा, वसो, शाहपुर, अंकलेश्वर, कलोल, सोजित्रा, जम्बूसर आदि ग्रामोंसे आई थीं। इनमें एक बेलगाम निवासी श्रीमती बहिन तवनप्पा थी व एक प्रभावती बहिन शीतलसा मलकापुरनिवासिनी थीं।

मांगीतुङ्गीमे जागृति।

जिला नासिकमें मांगीतुंगी एक सिद्धक्षेत्र है जहांसे श्रीरामचन्द्र, हनूमान, सुग्रीव आदि महात्मा मोक्ष पधारे हैं। यहां कार्तिक सुदी ११ से १५ ता० २४ नवम्बरसे २८ नवम्बर १९०९ तक बंबई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाका जल्सा था। इससमय स्त्रियोंमें जागृतिके लिये श्रीमती मगनबाईजी पधारीं। मगनबाईने नित्य प्रति स्त्रियोंमें धर्मोपदेश दिया तथा मगसिर वदी १ की रात्रिको एक भारी महिला परिषद् जोड़ी गई जिसमें बाईजीने उपदेश दिया व जैन नियमपोथी व गीतावली, पढ़ी हुई बहनोंको बांटीं जिससे कि वे नित्य संयमके नियम धारें व अश्लील गीत न गाकर सुन्दर धर्मवर्द्धक गीत गावें। स्त्रीशिक्षाके लिये १६५॥=)॥ का चंदा भी किया।

मगनबाईकी धर्मार्थ प्रेरणा।

शोलापुरमें मगसिर सुदी १ वीर स० २४३६ ता० १३ दिसम्बर १९०९ को श्री ऐलक पन्नालालजीका केशलोंच समारम्भ था तब बहुतसी जनता एकत्र हुई थी। श्रीमान् सीतलप्रसादजीने उसी समय ब्रह्मचारीके नियम सर्व सभाके सन्मुख यकायक

ले लिये । इस बातकी सूचना किसीको नहीं की थी । मात्र एक दिन पहले अपने मनका हाल मगनबाईको प्रगट किया था । मगनबाई बड़ी धर्मात्मा थी, वह सदा ही श्री० सीतलप्रसादजीके परिणामोंको आत्महितके लिये उत्तेजित करती रहतीं थीं ।

हृदयोद्गार ।

इस समय भी बाईजीने बहुत ही योग्य शब्दोंमें प्रेरणारूप वचन कहा कि यदि आप निर्वाह कर सको तो इससे बढ़कर दूसरा काम नहीं है । तथा बाईजीने नए उदासीन वस्त्रोंका सामान भी तैयार कर दिया । इसकी खबर सेठ माणिकचन्दजीको भी नहीं की । उस समय श्री० मगनबाईने गुजरातीमें अपने भावोंको प्रदर्शित करनेवाला पद बनाया था जिसका थोड़ा नमूना नीचे देते हैं—

सद्गुरु मारा शीतल भाई, तजी संसार थया वैरागी ।
एक नव छयासठ माघ सुदीए, पडवाने चंद्र प्रातःकाले ।
सोलापुरमां पन्नालालजीना, लोच समये थया ब्रह्मचारी ॥
॥ सद्गुरु० ॥ १ ॥

शील खडग हृदयमां धारी, मुजने शिक्षा देईने तारी ।
मुज अबलामां न्होती शक्ति, ते निज गुरुए कीधी व्यक्ति ॥
॥ सद्गुरु० ॥ ६ ॥

महिला परिषद्की स्थापना ।

श्रीमन्त सेठ पूरणशाहजी सिवनी मध्यप्रांत निवासीने श्री सम्मेदशिखरजी तेरापंथी कोठी जिका हजारीबाग मधुवनमें एक नया मंदिर बनवाया था, उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा थी । उस समय ३० हजार जनसमूह एकत्र था । यहां भारत० दि०जैन महासभाका

वार्षिक अधिवेशन माघ सुदी १ वीर संवत् २४३६ ता० १० फरवरी १९१०से प्रारम्भ हुआ। इसमें श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी भी गए थे व बंबईसे सेठ माणिकचंदजी, मूलचंद किसनदासजी कापड़िया (सूरत) व मगनबाई भी पधारीं थीं। तत्र अन्य भी विदुषी बहनें वहांपर उपस्थित थीं जैसे श्रीमती पार्वतीबाई, ललिताबाई, पं० चंदाबाई, लाजवंतीबाई आदि। इस मेलेमें मगनबाईजीकी कुशल प्रेरणासे छः स्त्री सभाएँ हुईं, जिनसे स्त्रियोंमें बड़ी ही जागृति फैली। ६० मुद्रित पुस्तकें बांटी गईं व स्त्री शिक्षार्थ ९९०) का फंड हुआ। तथा एक बड़ी भारी बात यह हुई कि दिगंबर जैन समाजकी स्त्रियोंके उद्धारके लिये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्की स्थापना की गई व इसकी नियमानुसार प्रबंधकारिणी कमिटी बनी। अध्यक्षाका स्थान श्री० पार्वतीबाईने व मंत्रीका काम मगनबाईजीने हाथमें लेलिया।

लखनऊमें भाषण।

शिखरजीसे लौटकर श्रीमती मगनबाई सेठजीके साथ बनारस, अयोध्या होती हुई लखनऊ दुबारा पधारीं। यहां भी स्त्रियोंमें बाईजीने बहुत ही उत्तेजना पूर्ण उपदेश दिया व उनको एक कन्याशाला खोलनेके लिये प्रेरणा की।

जैनबिद्रीमें जागृति।

बम्बई लौटकर मगनबाई तुर्त ही सेठ माणिकचंदजीके साथ जैनबिद्री (श्रवणबेलगोला) मैसूरके प्रसिद्ध श्री बाहूबलि या गोमट्टस्वामीके मस्तकाभिषेकके उत्सवमें पधारीं। जो चैत्र वदी १ से ९ व ता० २६ से ३० मार्च १९१० तक था। भारत० दि० जैन महासभाका नैमि-

त्तिक अधिवेशन भी था। सभापति सेठ माणिकचंदजी नियत किये गए थे। यहां ५६ फुट ऊँची कायोत्सर्ग श्री बाहूबलिकी मूर्ति दुनियांमें एक आश्चर्यजनक वैराग्यकी प्रतिमा है। इस समय श्री० कंकुबाई, पार्वतीबाई व चन्दाबाईजी भी मौजूद थीं। इन महिलाओंने स्त्रियोंमें बहुत जागृति उत्पन्न की। जिस महिला परिषद्को १ मास पहले ही स्थापित किया था, उसका जलसा यहां बड़ी धूमधामसे महासभाके मण्डपमें किया गया। सभापतिका स्थान श्रीमन् सेठ हीराचन्द नेमचन्द शोलापुरकी धर्मपत्नी श्रीमती सखुबाईने ग्रहण किया था। अनेक प्रकार उपदेश-हिन्दी, मराठी आदि भाषाओंमें हुए। मैसूरकी भी एक दो पढ़ी लिखी महिलाओंने कनड़ी देश भाषामें उपदेश दिया। श्रवणबेलगोलामें एक कन्याशालाके लिये मगनबाईजीने ५००) का चन्दा करा दिया। बाईजी जहां भी पधारती थीं वहांकी स्त्रियोंका उद्धार करनेका घोर प्रयत्न करती थीं।

ताराबहिनका विवाह।

मगनबाईजीने अपनी छोटी बहन तारका माताके सदृश पालन किया था। सेठजीकी कृपासे इसने बम्बईकी कन्याशालामें शिक्षा प्राप्त की थी। जब यह १४ वर्षकी होगई तब वैशाख सुदी १०को इसका विवाह सूरतमें शाह गुलाबशाह किसनदास जौहरीके साथ किया गया। वरकी उम्र करीब २२ वर्षकी थी। इस समय मगनबाईजीकी सम्मतिसे सेठजीने सर्व विधि जैन पद्धतिके अनुसार कराई। खोटे गीत स्त्रियोंने नहीं गाए। सेठजीने सब मिठाई स्वदेशी खांडकी बनवाई। १०००) की 'नर्क चित्रादर्श' पुस्तकें

छपवाकर आगन्तुकोंको बांटीं व गीतावली पुस्तक भी बांटी । फुल-कोर कन्याशालाकी कन्याओंको इनाम बांटा व ५००) का दान किया। मगनबाईकी सलाहसे सेठजी सर्व काम करते थे। सेठजी व मगनबाई दोनों सुधारप्रेमी थे। दिनरात बालविवाह निषेध, अनमेल विवाह निषेध, व्यर्थव्यय निषेधकी शिक्षा दिया करते थे। मगनबाईजीके खास प्रयत्नसे यह विवाह जैनत्वकी दृष्टिसे बहुत महत्वका हुआ।

करमसदमें मानपत्र।

श्रीमती मगनबाईजी श्रावण सुदी १४ वीर सं० २४३६ को करमसद पधारी थीं। वहांके भाई बहनोंने जो मानपत्र दिया वह नीचे मुद्रित है—

धर्मस्वरूपी धर्मानुरागी गंगास्वरूपी धर्मोद्योगिनी श्रीमती व्हेन मगनव्हेन ते दानवीर जैनकुलभूषण सेठ सा० माणिकचन्द हीराचंद जे० पी० नां पुत्री. मु० मुंबाई।

वीनंती के—श्री करमसद "जैनधर्म हितेच्छु मंडळ" तरफथी आपने आ मानपत्र आपवामां आवे छे ते स्वीकारशो.

(१) आपे आपनी बाल्यावस्थामां विद्याभ्यास करी संस्कृत, प्राकृत, मराठी, हिन्दी, गुजराती वीगेरे भाषाओनुं उत्तम ज्ञान मेळववा जे अथाग श्रम वेठ्यो, तेनो सदुपयोग आपणी जैन कोमनी व्हेनोने शुभ रस्ते दोरववाने माटे कर्यो. प्रथम पगलुं भरनार अर्थात पहेल करनार आपज छो.

(२) आपणो जैन धर्म शुं छे तेमां आपणी कोमनी घणी व्हेनो अज्ञान हती तेमनो अज्ञान रूपी अंधकार दुर करवा माटे
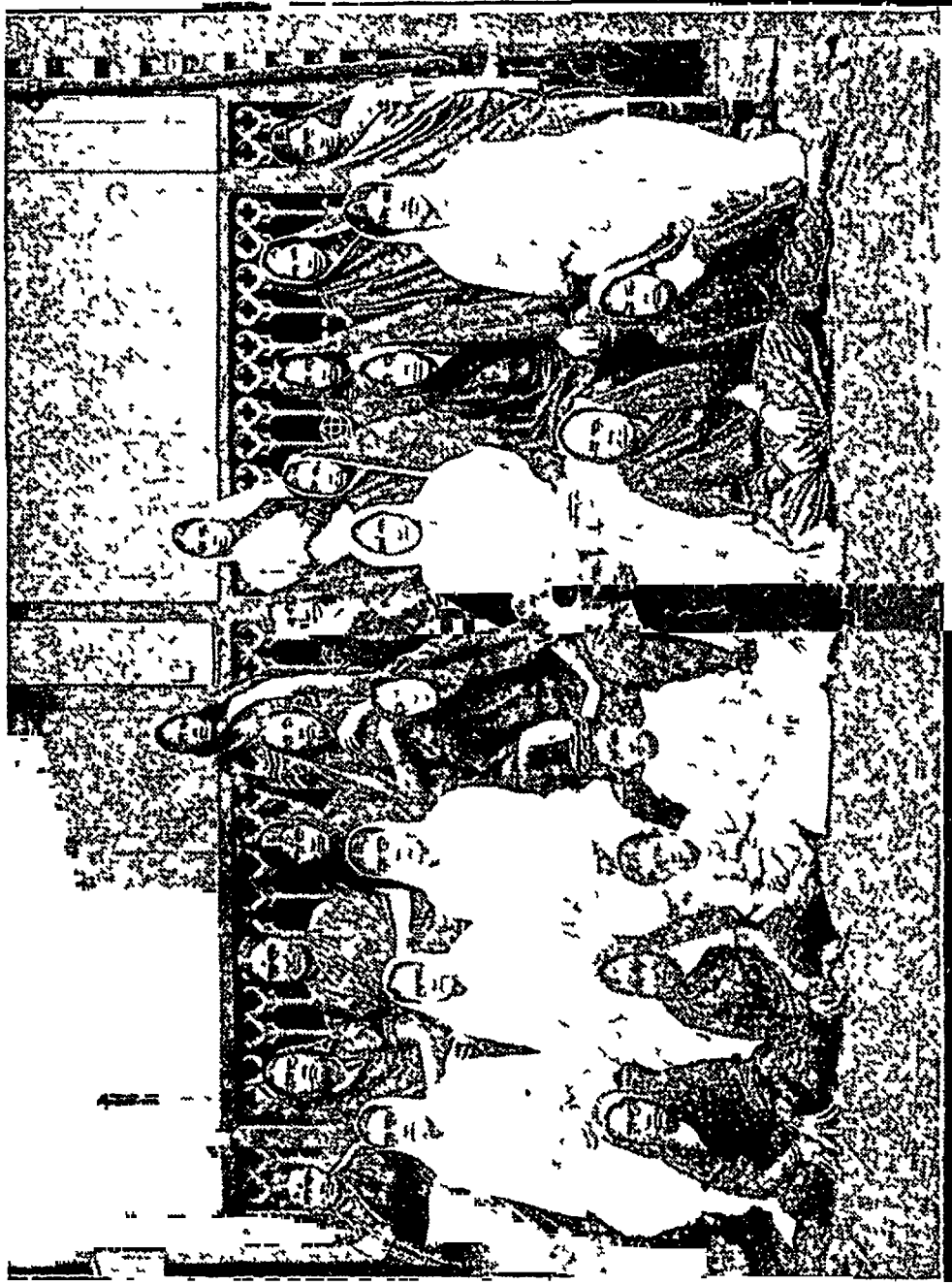
१० रु० श्राविकाश्रम—बम्बई ।

(प्रारम्भिक समयका एक ग्रूप । संस्थापिका—महिलारत्न मगनबाईजी बीचमें विराजित हैं)

जे अथाग श्रम वेठो छो तेने माटे अमो आपनो आभार मानीए छीए.

(३) स्वधर्मनी केळवणीमां घणी व्हेनोने पछात पडेली जोई तेमने ज्ञान आपवाना हेतुथी तेवी व्हेनोने एकत्र स्थळे राखवा व्यवहारीक तथा धार्मिक ज्ञान आपवा 'श्राविकाश्रम' नामनी संस्था स्थापी आप तन, मन ने धनथी अमदावाद शहेरमां धर्मकृत्य कार्यमां खरी उदारता बतावो छो (धन्य छे आपना जेवी धर्मीष्ट वीर बाळाने).

(४) जैनी व्हेनोने शुभ रस्ते चढाववा मुम्बई सरखो अलबेली नगरी छोडी कोई जातनु साधन मळी शके नहि तेवां गामडांओमां फरी पोताना तननी कंई पण परवा नहिं राखतां ते शुभ कार्योमां मंड्यां रहो छो तेथी अमो सघळा आपनु भलु इच्छीए छीए ! (सद्गति).

(५) दरेक जैन कोन्फरन्सोमां तथा सभाओमां आप आगळ पडतो भाग लई "महिला परिषद" मां धर्मनी खरी छाप पाडो छो तेथी अमो खरा अन्तःकरणथी अत्यन्त धन्यवाद आपीए छीए.

धर्म सम्बंधी पूर्ण प्रेमथी आपे अमारा (करमसद) गामे पधारी जातिव्हेनोने जे लाभदायी बोध आप्यो छे तेथी अमो सघळा आपनुं कल्याण इच्छीए छीए. तथास्तु। द० मोतीभाई भीखाभाई जाति भाइयोनो सेवकना धर्मस्नेह. श्रीजैनधर्म हितेच्छु मंडळ करमसद तरफथी—

पाठशालाना विद्यार्थिओ तरफथी.
करमसद–मीति श्रावण सुदी १४
शुक्रवार वीरे संवत २४३६
वि० संवत १९६६.

काळीदास भीखाभाई शाह सेक्रेटरी
भाईलालभाई रणछोड „ मास्तर
भाईलालभाई कपुरचंद „ „
नाथालाल मोतीलाल „ „
मोतीलाल भीखाभाई „ सेवक

श्राविकाश्रमको स्थापित हुए एक वर्ष होचुका। ललिताबाई रातदिन बराबर आश्रममे रहती थीं। मगनबाईका भी केन्द्रस्थान अहमदाबाद था, परन्तु इनको सेठजीके साथ स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजनार्थ भ्रमण भी करना पड़ता था व कभी२ बंबई भी ठहरना पडता था। इस तरह एक वर्ष श्राविकाश्रमको काम करते हुए होगया तब मगनबाईजीने प्रथम वार्षिकोत्सव ता० १६ अक्टूबर १९१० को बडे ही उत्साहसे मनाया। सभापतिका आसन सौभाग्यवती विद्यागौरी बी० ए० ने ग्रहण किया। १९ श्राविकाओंमेसे १४ परीक्षामें उत्तीर्ण हुईं थी उनको इनाम वितरण किया गया। जीवकोरबाई आदि कई श्राविकाओंने भाषण दिये। आश्रमके खर्चेके लिये ४८४) का फंड हुआ। मगनबाईजीने सानन्द सबका आभार माना।

प्रथम वार्षिकोत्सव।

ता० २६ अक्टूबरको ही मगनबाई और ललिताबाई—दोनों जीवन अर्पण करनेवाली परोपकारी बहिनें प्रचारके लिये अजमेर आईं। यहा दो दिन ठहरकर धर्मोपदेश दिया। ता० २८ को जयपुर आईं। यहां कई सभाएँ भिन्न२ मंदिरोंमें कीं। ता० २९ अक्टूबरको पाटोदीके मंदिरमें स्त्रियोंका अज्ञान कैसे मिटे, इस विषयपर कहा। ता० १-११-१०को महावीरस्वामीके मंदिरमें ज्ञानकी महिमापर भाषण दिया। ता० २ को शास्त्रसभा द्वारा नियम कराये व सरस्वती कन्याशाला-देखी। ता० ३ को सांगानेरमें जाकर दर्शन किये व पूजन की, ता० ६ को एक बड़ी पबलिक सभाका संगठन किया गया। उस समय मगनबाईने शीलव्रतके महात्म्यपर बड़ा ही प्रभा-

राजपूतानामें प्रचार।

चर्याको भाषण दिया। २०० बाइयोंने ब्रह्मचर्यका नियम लिया। ता० ७को रत्नत्रय धर्मपर भाषण किया। ता० १२को दारोगाजीके मंदिरमें सभा हुई तब स्त्रीशिक्षाके लिये २००) का फंड हुआ। पं० अर्जुनलालजी सेठीकी शिक्षाप्रचारक समिति द्वारा तीन जैन कन्याशालाएं चल रही थी। उन सबकी बाईजीने परीक्षा ली व इनाम बांटा। जैपुरमें अबतक स्त्रीशिक्षाको बुरा समझा जाता था। कई उपदेशोंका यह असर हुआ कि स्त्रीशिक्षासे घृणा जाती रही व बहनोंमें यह रुचि होगई कि विद्या पढ़े विना स्त्रीका जन्म सफल नहीं है।

प्रयागमें बोर्डिङ्गकी प्रेरणा।

सेठ माणिकचंदजी व मगनबाईके उपदेशसे लाला सुमेरचंदजीकी विधवा धर्मपत्नीने अलाहाबादमें एक जैन बोर्डिंग खोलनेका निश्चय कर लिया। बाईने २५०००) की रकम इस हेतु अर्पण की। ता० २९ दिसम्बर १९१० की सभामें यह घोषणा बाईकी तरफसे पक्की होगई। यहां प्रदर्शनी व राष्ट्रीय महासभा भी थी। मगनबाईजीने अनुभव प्राप्त किया व स्त्रियोंको उपदेश देकर १५०) का चन्दा श्राविकाश्रमके लिये कराया।

पावागढ़में उपदेश।

पावागढ़में माघ सुदीमें मंदिर जीर्णोद्धार उत्सव था व बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभाका वार्षिकोत्सव था। श्रीमती मगनबाई कई श्राविकाओंके साथ पधारीं व खूब ही स्त्री शिक्षाके लिये आन्दोलन किया। ता० १० फरवरी १९११ को सेठ चुन्नीलाल हेमचंदजीकी धर्मपत्नी सौ० श्रीमती नंदकोरबाईके प्रमुखत्वमें एक बड़ी स्त्री सभा हुई। मगनबाईजी व अन्य श्राविकाओंके भाषण हुए। श्राविकाश्रमके

लिये २९०) का चंदा होगया। दूसरी बड़ी सभा ता० १२ फरवरी माह सुदी १३ को प्रतिष्ठा मण्डपमें हुई तब मगनबाईजीने भाषण दिया। यहां भी बहिनोंमें सुधारके लिये बहुत जागृति फैली।

करहलमें जागृति।

करहल जि० मैनपुरीमें ता० २४से २९ मार्चतक रथोत्सव था। श्रीमती मगनबाईको निमंत्रित किया गया था। बाईजीको आलस्य बिलकुल न था, वहां जाकर स्त्रीसुधारपर कई भाषण दिये। कई बाइयोने बालविवाह न करनेके नियम लिये व कन्याशालाके लिये चन्दा होगया।

महिला परिषद्का वार्षिक जलसा।

मुजफ्फरनगरमें भारत० दिगम्बर जैन महासभाका पन्द्रहवां वार्षिकोत्सव था। श्रीमती मगनबाई, गंगाबाई, चन्दाबाई आदि विदुषी महिलाएं पधारीं। चैत्र सुदी ३ ता० २ अप्रैल १९१२ को भारत० दि० जैन महिला परिषदका वार्षिकोत्सव श्रीमती चमेलीबाई देहरादूनके सभापतित्वमें हुआ। ३००० स्त्रियां उपस्थित थीं। नियमानुकूल प्रस्ताव स्वीकृत कराए गए। तारीख ३ अप्रैलकी बैठकमें पण्डिता चन्दाबाईने दानका स्वरूप कहा, जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। तब प्रमुखाने ९००) दान किये-२९०) सरस्वती भवन आरा व २९०) श्राविकाश्रमके लिये व अन्य स्त्रियोंने ६२६|||≈)||| का चंदा दिया। ४ अप्रैलको परदेशी कन्याओंकी परीक्षा लेकर इनाममें पुस्तकें व श्राविकाश्रम अहमदाबादकी बनी दस्तकारी दी गई। मुजफ्फरनगरकी जैन

कन्याशालाका निरीक्षण करके मगनबाईने स्त्रीशिक्षा फंडसे ९०) प्रदान किये । सभामें कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए । उनमें एक यह भी हुआ कि स्त्रियोंमें जागृति उत्पन्न करनेके लिये एक मासिकपत्र निकाला जाय, परंतु सेठ माणिकचंद्रजीकी सम्मतिसे अभी भिन्न पत्रका चलना कठिन समझकर 'जैनमित्र' पत्रके साथ दो पत्र महिला परिषद्की तरफसे बढ़ा दिये गए । मगनबाईजीकी कार्यकुशलता, शांति व वक्तृत्वकला स्त्री व पुरुष दोनोंको अचंभा उत्पन्न करतीं थी । युक्तप्रांतकी महिलाओंमें इस अधिवेशनसे स्त्री शिक्षाकी ओर बहुत ही उत्तेजना फैल गई थी ।

श्राविकाश्रमका बम्बईमें स्थानांतर ।

अहमदाबादमें श्राविकाश्रम रहनेसे मगनबाईजीका केन्द्र-निवास बम्बई छुट गया था । वह कभी कभी ही बम्बई दो चार दिन ठहरती थी । सेठ माणिकचंदजीको इस वियोगसे बहुत दुःख रहता था । उनके जीवनकी आधार मगनबाई थी । बाईके द्वारा धार्मिक व लौकिक कामोंमें बहुतसी सुसम्मति प्राप्त हुआ करती थी । सेठजीको यह वियोग असहनीय हुआ और उन्होंने यही निश्चय किया कि श्राविकाश्रमको बंबई लाया जावे । यहां लानेमें यह भी लाभ समझा गया कि परदेशी जैनी निरीक्षण कर सकेंगे व उनसे द्रव्यकी मदद भी मिलेगी । सेठजी बड़े ही उदार थे । तुर्त अपने जुबिलीबागमें करीब १००) मासिकका बंगला आश्रमके लिये खाली करा दिया व अक्षयतृतीया वैशाख सुदी ३ वीर सं० २४३७ को बंबईमें इसके संस्थापनका उत्सव किया गया । सेठ हीराचंद नेमचन्दजी दोशी शोलापुरके द्वारा आश्रम स्थापन किया

की गई। १॥ वर्ष तक इसने अहमदाबादमें काम किया। अब यह आश्रम बम्बईमें स्थित है व भलेप्रकार अपनी सेवा बजा रहा है। सेठजी दूसरे तीसरे दिन जाते थे, घंटा दो घंटा बैठकर सर्व व्यवस्था देखते थे। बाइयोंकी संख्या अधिक देखकर सेठजीने ७०) मासिकके कमरे और खाली करा दिये। एक कोठरीमें जैन चैत्यालय भी स्थापित करा दिया। कुछ परदेशी बाइयें नलका पानी नहीं पीती थीं उनके लिये एक कुआँ भी खुदवा दिया। स्वास्थ्य लाभार्थ श्राविकाश्रमके बंगलेके आगे वृक्षावली व पुष्पावली भी लगवा दी गई, जिसमें श्राविकाएँ विहार करके ताजी व सुगंधित पवन प्राप्त कर सकें।

मुरादाबादमें–श्राविकाश्रम।

श्रीमती मगनबाई व पंडिता चन्दाबाईके उपदेशसे श्रीमती गंगाबाईने मुरादाबाद लोहागढ़के जिन मंदिरमें आषाढ़ वदी ११ वीर सं० २४३७ को एक श्राविकाश्रम स्थापित किया। खेद है अब वह नहीं रहा है। बंबईमें श्राविकाश्रमको आए हुए ६–७ मास होगए थे। कार्तिक सुदी १४ वीर सं० २४३८ ता० ६ नवंबर १९११को श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव किया गया। मगनबाईजीने गोंडलकी महारानी राजकुँवरबाईको प्रमुख बनाया। ललिताबाईने रिपोर्ट पढ़ी। आश्रमकी बाइयोंने पद भजन व संस्कृत श्लोक पढ़े। प्रमुखाने इनाम बांटा व अपने भाषणमें कहा–"दया धर्मके कारण जैनधर्म प्रसिद्ध है इससे यह धर्म स्त्रियोंकी तरफ–विशेष करके विधवाओंकी तरफ दुर्लक्ष्य रखेगा यह बात संभव नहीं है। उनको शिक्षा देना यही उनके साथ दया करना है।"

कर पीने व रात्रिको भोजन न करनेका नियम लिया। ता० १८ को हरद्वार आकर कांगड़ी गुरुकुलको देखकर अनुभव प्राप्त किया। ता० २० जूनको आकर मुरादाबाद श्राविकाश्रमको देखा व जैन धर्मपर उपदेश दिया। ता० २४ को देहली आई। पहाड़ीधीरजकी कन्याशाला देखी। सभामें सदविद्या व रत्नत्रयकी दुर्लभता पर भाषण दिया। ता० २५ को शहरमें तीनों बाइयोंने षट्कर्म व ब्रह्मचर्य पर उपदेश दिया। दिहलीमें अच्छी जागृति हुई। ता० २६जूनको प्रयाग आकर सुमेरचन्द दि० जैन बोर्डिंगका मुहूर्त कराया। ता० २ जुलाईको मगनबाईजी मुम्बई आगई।

शोलापुरमें श्राविकाश्रम।

श्रीमती मगनबाईके प्रयत्न व आन्दोलनसे सारे भारतवर्षमें स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजना होगई थी। गुंजेटी जिला शोलापुर नि० सेठ गुलाबचन्द देवचन्दजीने अपनी पूज्य माताकी स्मृतिमें ११०००) का दान किया व उससे शोलापुरमें चतुरबाई श्राविकाश्रम खोलनेका मुहूर्त श्रावण सुदी २ ता० १९ अगस्त १९१२को किया गया। सेठजी अपनी परमप्रिय पुत्री मगनबाई सहित पधारे। आप दोनोंके उपदेशसे सेठ देवचंद हीराचंदकी पत्नी राजूबाईने भी १००००) दान किये व श्राविकाश्रमके खोलते समय २६९७) का चंदा और भी भाई व बहनोंने किया। मगनबाईजीने प्रबंधार्थ योग्य सम्मति दी।

वर्धामें उपदेश।

वर्धा—मध्यप्रांतमें रथोत्सव था। सेठजीकी प्रेरणासे यहां बोर्डिंग खुलनेका मुहुर्त ता० २ अक्टूबर सन् १९१२ को था। परमोपयोगी सेठजी अपनी प्रिय पुत्री मगनबाईजी व शोलापुर नि० कंकुबाई सहित पधारे। ता०

जैन महिलारत्न पं० मगनबाईजी जे० पी०

(अवस्था वर्ष ३९)

३ को इन बाइयोंने स्त्री शिक्षापर बड़ा ही उत्तेजक भाषण दिया। सेठ जमनालाल बजाजकी स्त्री जानकीबाई भी उपस्थित थीं। श्राविकाश्रमकी अपील मगनबाईजीने की तब जानकीबाईजीने १००) दिये व अन्य स्त्री समाजने १००) एकत्र किये। एक पब्लिक सभा की गई। दोनों बहनोंने स्त्रियोंके कर्तव्य पर बहुत ही उत्तम भाषण दिये, जिसके प्रभावसे बहुतसी स्त्रियोंने गाली गाना व होली खेलनेका त्याग किया।

मथुरामें महिला परिषद्।

मगनबाईजीने जबसे भा० दि० जैन महिलापरिषद्का काम हाथमें लिया था तबसे इसके उद्देश्योंकी पूर्तिमें यह रात दिन दत्तचित्त थीं। रोज स्वयं तीसरे पहर १०-१५ पत्र लिखकर बाहर भेजती थीं। मथुरा चौरासीके मेलेपर महिला परिषद्का तीसरा जल्सा नियत किया। ता० १ से ३ नवम्बर १९१२ तक यह अधिवेशन स्व० राजासेठ लक्ष्मणदासजीकी धर्मपत्नी चांदबाईके सभापतित्वमें बड़ी सफलताके साथ हुआ। कई प्रस्ताव पास हुए। अध्यक्षाने श्राविकाश्रमको १०) मासिककी मदद दी व १००)का चन्दा दूसरा होगया।

बम्बईमें सभाएं।

वीर संवत २४३९ मिती पौष वदी ३से ९ तक-ता० २६ दिसम्बरसे १ जनवरी १९१३ तक बम्बईमें रथोत्सव व मुम्बई दि० जैन प्रांतिक सभाका १२ वां वार्षिक अधिवेशन बड़े समारोहके साथ हुआ। उस समय श्रीमती मगनबाईजीने ता० २८ और ३१ दिसम्बरको दो स्त्रीसभाएं की। एकमें श्रीमती नानीबाई गज्जर, वनिताविश्रामकी संचालिका व दूसरीमें श्री० सेठ सुखानंदजीकी धर्मपत्नी सभापति हुईं। अनेक

उत्तमोत्तम भाषण हुए । श्राविकाश्रमके लिये २६७)का चंदा हुआ।

इन्दौरमें प्रचार ।

इन्दौर छावनीमें फर्वरी १९१३ के अंतिम सप्ताहमें सेठ गेंदालाल द्वारा निर्मापित नवीन जिनमंदिरकी बिम्ब प्रतिष्ठा थी । निमंत्रण पानेपर बाईजी कई श्राविकाओंके साथ पधारीं । पार्वतीबाई, गुलाबबाई, इंगामीबाई आदि कई पढ़ी लिखी बहनें भी मौजूद थीं । ८ दिन तक मिथ्यात्वत्याग, शीलव्रत, शिक्षाका महत्त्व आदि विषयोंपर स्वयं भी भाषण दिये व अन्य बहनोंसे कराए; बहुत जागृति फैली । स्त्रियोंका बहुत समूह एकत्र हुआ था । अब मगनबाईजीको तत्त्व-चर्चाकी अच्छी योग्यता होगई थी । इनकी ज्ञानगुदड़ीसे सबको बहुत आनंद आया । इस समय सैकड़ों स्त्रियोंने मिथ्यात्व त्यागा, शीलव्रतके नियम लिये ।

राज्यभक्ति ।

मुम्बईमें मगनबाईजी पब्लिक सभाओंमें भी जाती रहतीं व भाषण दिया करती थीं । जब बम्बईमें कई जगह भारतके वायसराय लार्ड हार्डिञ्ज महोदयकी वर्ष-गांठके उत्सव होरहे थे तब मगनबाईजीने भी उचित समझा कि श्राविकाश्रम द्वारा भी उत्सव किया जावे । ता० २० जून १९१३ को सेठ हरनारायणदास रामनारायणदासके सभापतित्वमें एक सभा हुई जिसमें लार्ड साहबकी दीर्घायु होनेका गीत गाया, मिष्टान्न बांटा व शिक्षा विभागसे जो लार्ड हार्डिञ्ज व लेडी हार्डिञ्जके फोटो प्राप्त हुए थे सो बांटे । बम्बईकी प्रायः सर्व शिक्षा संस्थाओंने यह उत्सव मनाया तथा सर्कारी शिक्षाखातेकी तरफसे भी प्रेरणा हुई थी । इस समय दीर्घदर्शी मगनबाईने श्राविकाश्रमकी

स्थितिकरणके लिये उत्सव करना ही उचित समझा। करीब १९०) का फण्ड श्राविकाश्रमके लिये होगया। मगनबाईको यह चिंता नित्य रहती थी कि श्राविकाश्रममें रहनेवाली बहिनोंके खानपान व शिक्षाके प्रबंधमें द्रव्याभावसे कभी त्रुटि न हो, इसलिये लज्जा त्यागकर परोपकारके लिये जब अवसर होता था तब फंड एकत्र कर लिया करतीं थीं। इस समय मगनबाईने सबका आभार मानते हुए उत्तेजक भाषण किया था।

५०००) का दान।

सेठजीके भानजे सेठ चुन्नीलालजी झवेरचंदकी पुत्री कीकी बहिन (परसनबाई) का अचानक मरण ता० २९ जून १९१३ को होगया। इसने मरणके पहले मगनबाईकी सम्मतिसे ९०००) स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ व ९००) अन्य धर्मकार्यके लिये दिये। पाठकगण! देखेंगे कि शिक्षाप्रेमी सेठ माणिकचन्दजी व उनकी पुत्री मगनबाईके संसर्गसे उनके सम्बंधी भी शिक्षाप्रचारमें अधिक दान करते थे।

जैन महिलारत्नकी उपाधि।

ता० २३ से २९ दिसम्बर १९१३ तक काशीमें स्याद्वाद महाविद्यालयका वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधामसे श्री० कुमार देवेन्द्रप्रसादजी (आरा) मंत्रीके उद्योगसे मनाया गया। उस समय सेठ माणकचंदजीको व उनकी सुपुत्री मगनबाईजीको पधारनेकी बहुत प्रेरणा की गई। परन्तु सेठजी चिंता व शरीरकी अस्वस्थतासे निर्बल थे अतः नहीं आसके, न मगनबाई आसकीं। उसी समय ता० २९ दिसम्बरको जैन यंगमेन्स एसोसियेशन या भारत जैन महामंडलका भी अधिवेशन मिस० एनीबेसेन्टके सभापतित्वमें किया गया था।

तब दिगम्बर जैन समाजमें स्त्रीशिक्षाका डंका बजानेवाली व अविद्या राक्षसीको भगाकर सरस्वतीका महत्व जमानेवाली श्रीमती मगनबाईजीका बहुत उचित शब्दोंमें सम्मान किया गया व उनकी अपूर्व सेवाके उपलक्ष्यमें उनको सभापति द्वारा "जैन-महिलारत्न" का पद प्रदान किया गया । व एक मनोहर कविताके साथ यह पद श्री० मगनबाईजीको बंबई भेजा गया ।

नकल कविता–उपाधि जैनमहिलारत्न ।

श्री मगनबाई देवि !, जय जयति जिन–पद सेवि ।
तुम धन्य है सु–प्रयत्न, हो जैन–महिला–रत्न ॥ १ ॥
तुम्हारो सबै स्वच्छन्द, स्वागत करैं सानन्द ।
तुम किये बहु शुभ कृत्य, ह्वै चुकी तुम कृतकृत्य ॥ २ ॥
महिला रहीं जो अज्ञ, तुम्हारी भई सु कृतज्ञ ।
"शिक्षा" प्रचार प्रशस्त, तुम कियो घूमि समस्त ॥ ३ ॥
दै "धर्म" को उपदेश, पूरण कियो उद्देश ।
मृदु मधुर बानी बोलि, शुभ "श्राविकाश्रम" खोलि ॥ ४ ॥
"छात्रालयन" खुलवाय, "विधवाश्रमन" बनवाय ।
करि सकै नर न प्रवीन, वह काम तुम करि दीन ॥ ५ ॥
सत् दानवीर अमंद, श्रीसेठ माणिकचन्द ।
जे. पी., कुलालङ्कार, जिन लह्यो शुभ सत्कार ॥ ६ ॥
तिन योग्य तुम सन्तान, कहि सब करैं सन्मान ।
बढ़ि पुत्र सौं काज, कीन्ह्यो सुता है आज ॥ ७ ॥
"जैनी–महिला–परिषद" का सस्थापन करनेवाली ।
करैं कहातक, देवि, प्रशंसा, तुम हो नारि निराली ॥ ८ ॥
भारत–जैन–महामण्डल यह, आदर सौं आराधि ।
"जैनी–महिलारत्न" नामकी, अर्पण करैं उपाधि ॥ ९ ॥
आशा है, निज जननको, यह सादर उपहार ।
उत्सवके आनन्द महँ, ह्वै है अङ्गीकार ॥ १० ॥

—कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन–काशी ।

मगनबाईकी पुत्री केशरब्हेन गुजराती व हिन्दीकी शिक्षा लेकर अंगरेजी पढ़ रही थी, परन्तु उसको विवाह योग्य जानकर उसका लग्न मगसिर सुदी ३ वीर सं० २४४० में सूरत शहरमें ही पूना निवासी सेठ जयचंद मानचंदके पुत्र चंदूलालके साथ जैन पद्धतिके अनुसार करीब १९ वर्षकी आयुमें कर दिया। चंदूलाल कालेजमें पढ़ते थे, द्वि० भाषा संस्कृत थी। अब ये दोनों दंपति पेरिसमें जवाहरातकी दूकान करते हुए रहते हैं। इनके एक पुत्री भी है जो बहुत प्रवीण है।

केशरबहिनका विवाह।

श्रीमती मगनबाईको अब लौकिक काम अच्छे नहीं लगते थे। उनको करना पड़ते थे वह करती थी। इनकी रुचि रात दिन परोपकारमें ही रहती थी। नीमाड़ प्रांतमें बड़वानी स्टेट है। यहीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र है जहांसे इन्द्रजीत व कुम्भकरण मोक्ष पधारे हैं।

बड़वानीमें जागृति।

यहां पौष सुदी ८ से १९ तक वार्षिक मेला था। बाईजी पधारीं और वहां स्त्रियोंमें धर्मोपदेश देकर बहुत जागृति उत्पन्न की। बाईजीके पबलिक भाषण भी हुए। राज्यवर्गकी महिलाओंने भी सुनकर आनंद प्रदर्शित किया। अनेक स्त्रियोंने भांतिभांतिके नियम लिये। श्राविकाश्रमके लिये २००) का चन्दा किया। यहांपर दिगम्बर जैन बोर्डिंगके खोलनेका मुहूर्त हुआ। उस समय मगनबाईजीने भी १०१)प्रदान किये। बाईजी अपने जातीय खर्चसे यात्रा करती थीं व समय२ दान भी करती रहती थीं।

यद्यपि मगनबाईका शरीर कुछ अस्वस्थ था। इसीसे वह पालीतानामें बम्बई प्रांतिक सभाके जलसेमें न जासकीं, किन्तु उन्होंने ललिताबाईको व श्राविकाश्रमकी बहनोंको भेज दिया था। महिलापरिषदकी बाईजीको बड़ी फिक्र थी। अतः शोलापुरमें चौथा वार्षिक जलसा सेठ जीवराज गौतमचन्दकी धर्मपत्नी रतनबाईके सभापतित्वमें हुआ। मगनबाई न जासकीं थी। ललिताबाईने परिषदका काम संतोषपूर्वक निबटाया व श्राविश्राश्रमके लिये २९०) का चंदा किया। १०१) स्वयं ललिताबाईजीने भी अर्पण किये। यह परोपकारी महिला आनरेरी रीतिसे आश्रमके खुलनेके प्रारंभसे बराबर अब भी आश्रमकी सेवा बिलकुल निःस्वार्थ भावसे कर रही हैं। अपनी निजी सम्पत्तिमेंसे बाईजीने यह दान किया था।

सोलापुरमें महिला पारषद।

इन्दौरमें रायबहादुर सेठ तिलोकचद कल्याणमलजीने तकूगंजमें एक नवीन मंदिर निर्माण कराया था उसकी प्रतिष्ठाका उत्सव चैत्र सुदी ६ से १२ ता० ३१ मार्चसे ६ अप्रैल १९१४ तक था। शरीर अस्वस्थके कारण सेठ माणिकचन्दजी भी नहीं पधारे थे परंतु उन्होंने अपने पुत्रसम पुत्री मगनबाईजीको भेज दिया था। कंकुबाई भी पधारी थीं। इनके व अन्य विदुषी महिलाओंके निमित्तसे स्त्रियोंमें खूब जागृति हुई, बहुतसी स्त्रीसभाएँ हुईं। स्त्रीशिक्षा फंडमें ८००)का चंदा हुआ। सेठ कल्याणमलजीकी माताने २१०००) कन्याशालाके लिये निकाला जिसका मुहूर्त मगनबाईजीके सामने ता० ६ अप्रैलको हुआ। यह सब मगनबाईजीकी उपदेशरूप बिजलीका प्रभाव था।

इन्दौरमें उपदेश।

बंबई श्राविकाश्रममें कई वर्ष तक रहकर तैयार होनेवाली

जीवकोरबाईका वियोग ।

जम्बूसर जिला भरुच निवासी जीवकोरबाई विधवाका अचानक स्वर्गवास वैशाख वदी ३ ता० १३ अप्रेल १९१४ को होगया। यह अर्थ प्रकाशिकाका मनन कर चुकी थीं व धनवती थीं इससे बहुत कुछ स्त्रीसमाजके कल्याणकी आशा थी। इसके ऊपर मगनबाईका इतना प्रभाव था कि मरणके पहले इसने अपनी १९ हजारकी सम्पत्तिमेंसे ३०००) का दान किया जिसमेंसे १०००) श्राविकाश्रम बंबईको दिये व ५००) अर्थ प्रकाशिका ग्रन्थके मुद्रणके लिये अर्पण किये। यह बाई, इस ग्रन्थके पढ़नेसे इसका प्रचार हो ऐसी दृढ़ भावना रखती थी। ५००) जंबुसरमें संस्कृत पाठशालाके लिये दिये। यदि यह बाई श्राविकाश्रममें रहकर विद्याभ्यास न किये होती तो इसका दान मात्र मंदिरके लिये व उसके उपकरणोंके लिये ही होता, ज्ञान प्रचारका भाव कभी नहीं आता। यह सब उपकार श्री० मगनबाईके प्रयत्नका था।

दानवीर सेठ माणकचन्दजीने अपने धर्मखातोंका बहुतसा

पूज्य पिताजीका वियोग ।

द्रव्य स्पेशी बेंक बम्बईमें जमा करा दिया था, यकायक उसका दिवाला निकलनेसे सेठजीके चित्तको बड़ा भारी आघात पहुंचा। एक तो सेठजी कुछ मास पहलेसे ही साधारण अस्वस्थ थे। इस मानसिक चोटने ऐसा बुरा असर किया कि श्रावण वदी ९ वीर सं० २४४० ता० १६ जुलाई १९१४ को सेठजी नित्यके समान प्रक्षालपूजन स्वाध्याय करके व भोजन करके श्राविकाश्रम व बोर्डिंगका निरीक्षण

करते हुए हीराबाग धर्मशालामें तीर्थक्षेत्र कमेटीका काम देखके शामको बंगलेपर आए। भोजन किया, शामको समुद्र तटपर टहलने भी गए। रात्रिको ९॥ बजेतक मगनबाईजीसे धर्म व जातिकी उन्नति सम्बंधी वार्तालाप भी की। मगनबाईजी श्राविकाश्रममें ही शयन करती थी। अतः १० बजे वहां चली गई। सेठजीको ११ बजे रातको उदरमें पीड़ा हुई वह मिटी नहीं व एकाएक उस ही रात्रिको आपका धर्मात्मा आत्मा, शरीरको छोड़ गया! ६२ वर्षके पूज्य पिताश्रीके वियोगसे मगनबाईजीका बड़ा भारी आश्रय जाता रहा। वह रात्रिको ही श्राविकाश्रमसे आई और पूज्य पिता श्रीको जिनसे वह कई घंटे पहले बात करकर गई थी, इस समय जीवन रहित देखकर अतिशय शोकातुर होगई। पति वियोगसे जितना दुःख व शोक नहीं हुआ था उसका हजारगुणा दुःख इस समय मगनबाईजीको होगया। इसके हृदयके तापको शांत करनेवाला एक आध्यात्मिक ग्रंथोंका स्वाध्याय था, उस तत्त्वज्ञानके बलसे इसने अपने मनको थांभकर रक्खा व संसारकी अनित्यताका चिन्तवन करते हुए काल विताया। मगनबाईजीके पास बहुतसे भाई बहनोंने शांति प्रदायक पत्र भेजे। यह हरसमय संसारका अनित्य व अशरण स्वरूप विचारकर मनको सम्हालती थी, व दूसरी शोकातुर मंडलीको भी समझाती रहती थी। सबको यह विश्वास था कि सेठजीने प्राणांत समय कोई विशेष वेदना नहीं भोगी। सेठजीका आत्मा अवश्य शुभ गतिका पात्र होगा। अब मगनबाई पहलेसे अधिक वैराग्यवान स्वकल्याण व परोपकारमें तत्पर होगई।

श्री० धर्मचन्द्रिका ब्रह्मचारिणी कंकूबाईजी—सोलापुर।
(महिलारत्न मगनबाईजीकी धर्मभगिनी व धर्मकार्य सहोदरा)

जैनविजय प्रेस—सूरत।

नव्वां अध्याय।

जीवनकी सफलता।

मगनबाईजी पूज्य पिताजीके वियोगसे अब वास्तवमें अनाथ होगई। इनके दिलको थांभनेवाला-इन्हें पुत्रवत् प्यार करनेवाला, इन्हें मित्रवत् माननेवाला, इनके सुखमें सुखी व दुःखमें दुखी होनेवाला आधार एकदम छिन गया, अब इनने निश्चय किया कि धर्म व परोपकारको ही अपना आधार मानना चाहिये व इसीको अपना नाथ मानकर इस हीकी सेवा करनी चाहिये। श्रीमती कंकुबाई व ललिताबाईने भी सम्भोषा। मगनबाईने यही ठानी कि जीवनका एक एक समय सफल करना चाहिये। नित्य पूजा व सामायिक करते हुए शेष समय श्राविकाश्रम व भारत० दि० जैन महिला परिषदकी उन्नतिमें विताना चाहिये। अबसे जीवनभर आत्मोन्नति व परोपकार यही मगनबाईका व्रत होगया। जीवन पर्यंत बहुतसे परोपकारके कार्य किये जिनमेंसे यहां मात्र प्रसिद्ध२ ही कुछ कामोंका उल्लेख किया जाता है।

सेवा कार्य।

महिलापरिषद्की ओरसे "जैनमित्र" पत्रमें २ सफे निकलने लगे, उसमें श्रीमती कंकुबाई, मगनबाई, ललिताबाई व अन्य श्राविकाएं स्त्रियोंमें जागृति उत्पन्न करनेवाले लेख लिखकर प्रकाशित करने लगीं। बाईजी देशोन्नति सम्बंधी सभाओंमें भी जाती थीं व देशसेवामें भी अपना मन लगाती थीं।

बम्बईमे आमसभा।

देशके प्रसिद्ध नेता-पूना निवासी माननीय आनरेबिल गोपाल कृष्ण गोखले ४९ वर्षकी आयुमें ही ता० १९ फर्वरी १९१५ को शरीर छोड़

गए। इन्होंने अपूर्व देशसेवा की थी। बड़ा भारी स्वार्थ त्याग किया था। राष्ट्र महासभाके आप प्राण थे। मगनबाईजीने ऐसे पुरुषकी स्मृतिमें श्राविकाश्रममें एक सभा ता० २८ फर्वरीको की। यह पबलिक सभा थी, जैन अजैन बहुतसी बहनें एकत्र थीं। सभापतिका पद श्रीमती मगनबाईको दिया गया। यशोदाबाई सुपरिन्टेन्डेन्ट श्राविकाश्रमने मराठीमें व ललिताबाईने गुजरातीमें शोक दर्शक भाषण किया। फिर अन्तमें मगनबाईने आध घण्टा बड़ा ही मार्मिक भाषण करते हुए यह बताया कि हमारी बहिनोंको यह समझना चाहिये कि उक्त पुरुषकी निस्वार्थवृत्ति अनुकरणीय है।

उपदेशार्थ भ्रमण।

श्रीमती मगनबाईको यह लग्न थी कि श्राविकाश्रमका फंड चिरस्थाई ऐसा कर दिया जावे कि जिसके व्याजसे इसका खर्च चले व चालू फंडमें भी घाटा न रहे। इसलिये बाईजी श्रीमती तवनप्पा गांगट्टेके साथ ता० ९ अप्रैल १९१९ को बंबईसे चलकर बेलगाम (दक्षिण) आई व उपदेश देकर श्राविकाश्रमके लिये कुछ फंड किया। बेलगाम जैन बोर्डिंगका निरीक्षण किया, फिर कोल्हापुर जाकर जैन बोर्डिंगको देखा। धर्मात्मा सेठ भूपाल अप्पा जिरगेसे मिली। स्त्रियोंको मराठीमें उपदेश दिया। ता० १६ अप्रैलको बंबई लौट आए। तुर्त ही पत्र द्वारा यह मालूम करके कि जबलपुरकी कन्याशालाके काममें शिथिलता आरही है, ता० २७ अप्रैलको बंबईसे चलकर जबलपुर आई। वहां कन्याशालाका निरीक्षण कर उसके लिये चंदा कराया। पठनक्रम ठीक किया। तीन सभाओंके द्वारा

स्त्रियोंको धर्मोपदेश दिया। फिर तीसरे दिन यहांके जैन बोर्डिंगका निरीक्षण किया जिसका स्थापन सेठ माणिकचन्दजी द्वारा हुआ था। उसके सुधारकी सम्मति मंत्री बाबू कंछेदीलालजी वकीलको दी। ता० १ मईको कटनी आई। कन्याशालाकी परीक्षा ली, बोर्डिंगका निरीक्षण किया। ता० २ मईको एक स्त्री पुरुषकी संयुक्त सभामें धर्मोपदेश दिया। यहांसे चलकर ता० ७ मईको इन्दौर गई और कंचनबाई श्राविकाश्रमका व कल्याण मातेश्वरी कन्याशालाका निरीक्षण किया। श्राविकाश्रमके नियम ठीक किये, कन्याशालाके सुधारके लिये सलाह दी। आश्रममें रामदेवीबाई भगनी महात्मा भगवानदीनजी १ वर्षसे अच्छा काम कर रही थीं। फिर ९ मईको बंबई आगईं।

ध्रौव्य फण्डका प्रयत्न।

ता० २६ अगस्त १९१९ के जैनमित्रमें मगनबाईने भा० दि० जैन महिला परिषद द्वारा निकलनेवाले दो पृष्ठोंमें श्राविकाश्रम बंबईमें ध्रौव्य फण्डके लिये समाजसे अपील की। अबतक बाईजीके प्रयत्नसे नीचे लिखे भांति रकमें भर गई थीं। ११००) केसरबाई बड़वाहा, १००१) स्व० सेठ हीराचंद गुमानजी (सेठ माणिकचंदजीके पिता), १००१) सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजी, १००१) सेठ ओंकारजी कस्तूरचन्दजी इन्दौर, १००१) सेठ स्वरूपचंद हुकमचन्दजी इन्दौर, १००१) स्वयं मगनबाईजी, १५००) नवीबाई धर्म० सेठ माणिकचंदजी, १००१) जीवकोरबाई, ५००) सेठ भंवरलालजी मऊ, ५००) सेठ झुन्नालालजी इन्दौर। पाठकगण देखेंगे कि इन रकमोंमें ३५००) रु० सेठजीके ही घरका है।

सन् १९१९ की शीत ऋतुके प्रारम्भमें श्रीमती मगनबाईने आठ श्राविकाओंको साथ लेकर श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रकी यात्रार्थ प्रयाण किया। अहमदाबाद आकर महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधीके आश्रमका निरीक्षण किया व गांधीजीके साथ कन्या शिक्षा व विधवा शिक्षाकी रीतियोंपर करीब १ घंटा वार्तालाप की। गिरनारजी आकर आठ दिन यात्रा व धर्मध्यानमें बिताए, फिर पालीताना आकर श्री शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा की। भावनगर आकर स्त्री शिक्षापर भाषण दिया। यहांसे तारंगा, आबू व केशरियाजीकी यात्रा की। केशरियाजीमें एक व्याख्यान सभा द्वारा इस विषयपर भाषण दिया कि ज्ञानके विना आचरण व्यर्थ है व ज्ञान ही आत्मोद्धारका कारण है इसलिये हरएक पुरुषको ज्ञानकी उत्तेजनाके लिये यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिये। फिर कार्तिक सुदी ७को उदयपुर आकर स्त्रीशिक्षापर भाषण दिया व श्राविकाश्रमके लिये कुछ फंड किया। फिर रतलाम दि० जैन बोर्डिंगका निरीक्षण करके कार्तिक सुदी ११ को बम्बई आईं। फिर ता० २से २२ दिसम्बर १९१९ तक श्रीमती कंकुबाईके साथ भ्रमण किया बड़ौदा आकर स्त्री ट्रेनिंग कालेज आदि संस्थाओंको अनुभव प्राप्त करनेको देखा। फिर दाहोद ता० ६को आकर तीन सभा स्त्रियोंमें कीं व एक आमसभा की जिसमें यहांके सबजज भी उपस्थित थे। भाषणोंकी धूम मच गई। १८०) श्राविकाश्रमके लिये प्राप्त किये व एक कुशलगढ़की महिलाको आश्रममें प्रवेश किया। फिर मंदसोर होकर परतापगढ़ गए। वहां चार सभाओंके द्वारा उपदेश दिया। महावीर कन्याशालाका

निरीक्षण किया । यहां आश्रमको ३५०) की मदद मिली । यहां कई बाइयोंको भिन्न२ नियम कराए । चार पांच महिलाओंने आश्रममें प्रवेश करना स्वीकार किया । फिर मंदसोरमें उपदेश दिया । यहां इंगामीबाईसे धर्मचर्चा करके लाभ उठाया ।

बड़वाहामें उपदेश ।

ता० ७ फर्वरी १९१६ को बड़वाहा कन्याशालाका वार्षिकोत्सव महाराणी होलकरके सभापतित्वमें था । यहां मगनबाई व कंकुबाई दोनोंने पधारकर अपने उपदेशोंसे जनताको संतोषित किया ।

महिलापरिषद्का छठा वार्षिकोत्सव गजपंथा ।

गजपंथामें मुंबई दि० जैन प्रांतिक सभाका १४ वां वार्षिक अधिवेशन चैत्र सुदी ५ से ८ तक था । चैत्र सुदी ६-७ को भा० दि०जैन महिलापरिषद्का छठा वार्षिकोत्सव आलंदकी सौ० सखुबाईके प्रमुखत्वमें हुआ । तीन बैठकें हुईं । मगनबाईजीने रिपोर्ट सुनाई व कई उपयोगी प्रस्ताव पास कराए । बेसरबाईजीको २५०००)के दानके उपलक्षमें 'दानशीला'का पद दिया गया । आश्रमके लिये ३००)का फण्ड हुआ ।

सिद्धवरकूटमें महिलापरिषद ।

श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र मालवामें श्रीमती बेसरबाई बड़वाहाने ५०००) खर्च कर ढाईद्वीपका पाठ कराया था व मेला भरवाया था । यहां दि०जैन मालवा प्रांतिक सभाकी बैठक मगसर वदी ४ से ६ तक हुई । उसी समय महिलापरिषद्का अधिवेशन भी धूलिया निवासी श्रीमती सुन्दरबाईके सभापतित्वमें हुआ । मगनबाईजीने इसकी सफलतामें पूर्ण प्रयत्न किया । कुरीति निवारणके

भी प्रस्ताव पास किये। २९०००) का दान स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ केसरबाईजीसे करवाया। ३९०) स्त्रीशिक्षा फण्डमें एकत्र किया।

बड़नगरमें परिषद्।

इसी वर्ष बड़नगरमें बिम्बप्रतिष्ठा वैशाख वदी २ से ६ तक थी। मालवा प्रांतिक सभाके अधिवेशनके साथ२ महिलापरिषद्का भी नैमित्तिक अधिवेशन मगनबाईजीने करवाया। सभापति सौ० गुलाबबाई इंदौर हुई। अनेक भाषण स्त्रियोंमें सुधारके लिये हुए। श्राविकाश्रम बम्बईको १९०) का लाभ हुआ।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

श्राविकाश्रम बम्बईका सातवां वार्षिकोत्सव ता० १० नवम्बर १९१६ को सौ० श्री० कृष्णागौरी चिमनलाल सेतलवड़ अजैनके प्रमुखत्वमें हुआ। श्राविकाओंके गायन व सम्वाद होकर इनाम बांटा गया। सभापतिने मगनबाईको इस स्तुत्य कार्यके संचालनके लिये धन्यवाद दिया। अन्तमें मगनबाईने आभार मानते हुए स्त्री शिक्षाके उत्तेजनार्थ प्रभावशाली भाषण किया। श्राविकाश्रमको १३९) की आय हुई।

बड़ौदामें जागृति।

बड़ौदामें मगसिर सुदी १० से १९ तक ढाईद्वीप विधानका उत्सव था। रथ विहार हुआ था। उस समय बंबईसे मगनबाई ललिताबाई व अन्य श्राविकाओंको लेकर पहुंची। ता० ७ दिसम्बर १९१६ की रात्रिको मनुष्य जन्मकी दुर्लभतापर मगनबाई व ललिताबाईके प्रभावशाली भाषण हुए। दो दिन और भी सभाएँ कीं। अनेक बहिनोंने स्वाध्याय, जाप, रात्रिभोजन त्याग आदिके नियम लिये व श्राविकाश्रमके लिये १९०) का फण्ड किया।

दाहोदमें बिम्बप्रतिष्ठा थी। बंबई मालवा प्रांतिक सभाओंके जलसे थे। उसी समय मगनबाईके प्रयत्नसे ता० २३-२४ व २५ फरवरी सन् १९१७ को महिला परिषद्का सातवां अधिवेशन श्रीमती

दाहोदमें महिला परिषद्।

नन्दकौंरबाई ध० सेठ चुन्नीलाल हेमचन्दजीके सभापतित्वमें हुआ। कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य थे कि बेसरबाई बड़-बाहाको दानशीलाका पद दिया गया उसके लिये अभिनन्दन व लड़कोंके विवाह १८ व लड़कियोंके विवाह १२ वर्षसे पहले न किये जावें। मगनबाईका बहुत ही उत्तेजक भाषण हुआ। ३००) का फण्ड हुआ। उस समय मगनबाईने जो रिपोर्ट सुनाई इससे प्रगट हुआ कि बाईजीके आन्दोलनसे नीचे लिखे आश्रम व कन्या-शालाएँ काम कर रही हैं—(१) मुरादाबाद श्राविकाश्रम, (२) कंच-नबाई श्राविकाश्रम इन्दौर, (३) बड़वाहा विद्यावर्द्धिनी कन्याशाला, (४) कन्याशाला दिल्ली, (५) जबलपुर कन्याशाला, (६) अजमेर कन्याशाला, (७) अम्बाला कन्याशाला, (८) मेरठ कन्याशाला, (९) वर्धा कन्याशाला, (१०) कोसी कन्याशाला, (११) सनावद कन्याशाला, (१२) ईडर कन्याशाला। इन संस्थाओंकी रिपोर्ट मगनबाईजीके पास आई थी। और भी कन्याशालाएं अबतक स्था-पित हुई थीं उनकी रिपोर्ट नहीं आई थी।

श्रीमती मगनबाई कंकुबाईको लेकर दाहोदसे इसी मार्च मासमें कारंजा आई। यहां श्री वीरसेन भट्टारक अध्यात्म विद्याके अच्छे विद्वान हैं।

मध्यप्रांतमें भ्रमण।

उनका उपदेश सुना। तीनों मंदिरोंमें तीन सभाएं कीं व स्त्रियोंको

धर्मोपदेश दिया। श्राविकाश्रम बंबईके लिये १३५)का चंदा किया फिर श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ (सिरपुर) व मुक्तागिरीकी यात्रा की। अंजनगांवमें आकर धर्मोपदेश दिया। वर्धा आकर दो स्त्री सभाएं कीं। आश्रमके लिये करीब २००) का चंदा हुआ। नागपुर आकर उपदेश दिया व यहांसे १३ वर्षकी एक विधवा आश्रममें भरती की व साथ लाए, भुसावलमें सभा की, फिर बंबई लौटे।

पौत्रीका जन्म। मिती चैत्र सुदी १३ वि० सं० १९७३ ता० ५ अप्रेल १९१७ को जिस दिन श्री महावीर भगवान जैनियोंके २४वें तीर्थंकरका जन्म दिन था मगनबाईजीकी पुत्री केशरबहनको एक पुत्रीका जन्म हुआ जो सानन्द अब पेरिसमें अपने मातापिताके साथ विद्याभ्यास कर रही है।

सूरतमें उपदेश। मगनबाईजी कभी२ सूरत भी जाया करती थी। ता० १ मई १९१७ को सूरत आकर वनिता विश्रामकी सार्वजनिक संस्थाको देखा। ता० ३ मईको फूलकौर कन्याशालाका निरीक्षण किया। संध्याको दशाहूमड़की फूलवाड़ीमें सूरत जिलेके दशाहूमड़ विद्योन्नति फंडकी तरफसे सभा थी। पुस्तकालय खोलनेके ऊपर चर्चा चली तो विद्याप्रेमिणी मगनबाईने २५) की मदद जाहिर की व विद्या वृद्धिपर बड़ा ही असरकारक भाषण दिया व प्रगट किया कि जो बाला सर्वोत्तम पास होगी उसे ५) इनाम दिया जायगा। ता० ४को फूलकौर कन्याशालाकी सभा हुई उसमें मगनबाईजीने भाषण करके शालाके वृद्ध माष्टर परमानन्ददासकी सेवाकी कदर की व उनको शाला छोड़ते हुए पोशाक व कुछ रुपयोंकी भेट की।
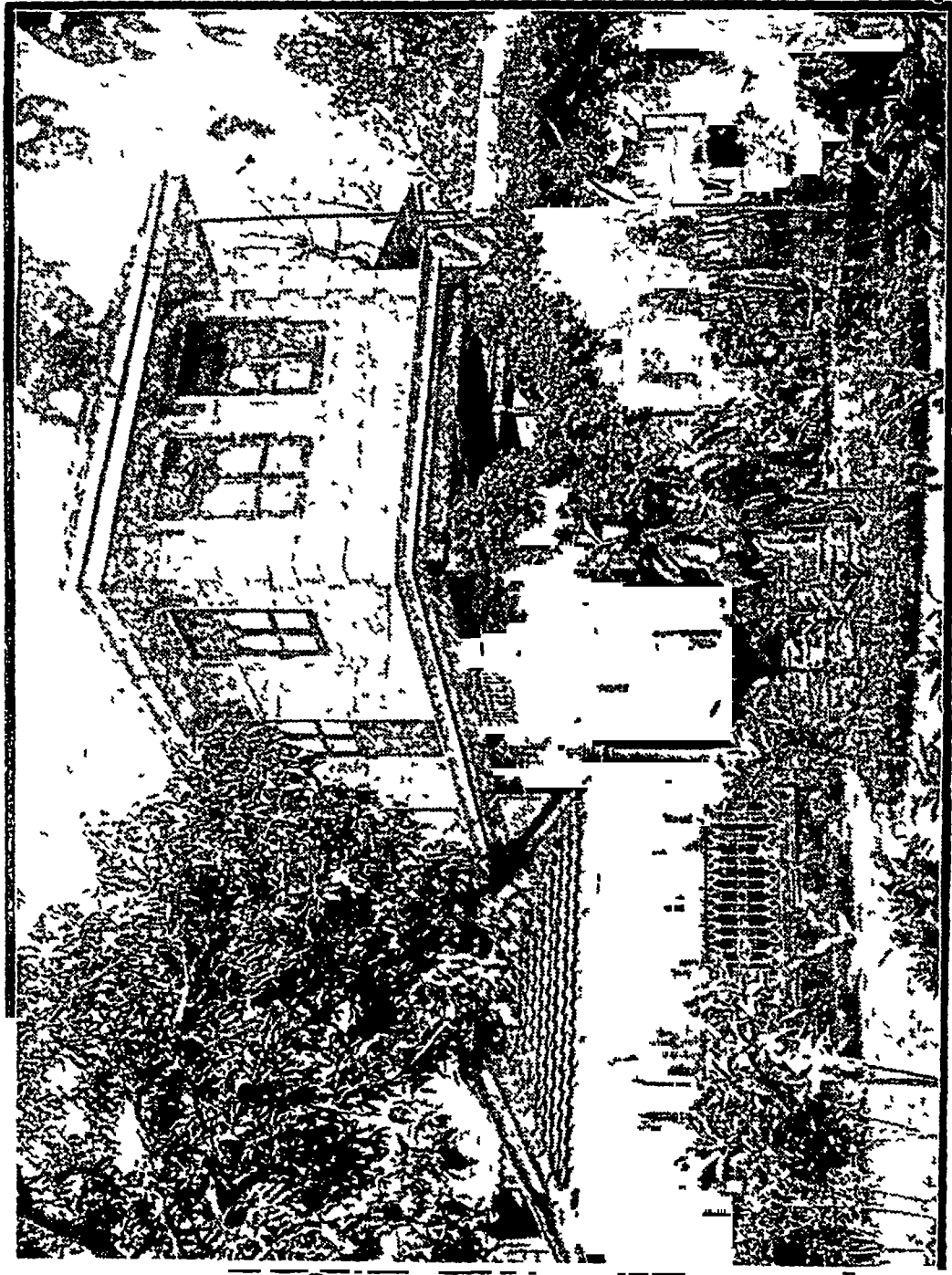
दानवीर सेठ माणिकचंद ट्रस्ट जुबिलीबाग बम्बईमें स्थित उस मकानका आगेका दृश्य जिसमें महिलारत्न मगनबाईजी द्वारा स्थापित ए० ए० श्राविकाश्रमको कायमके लिये स्थान दिया गया है।

ब्रह्मचारी सीतलप्रसादजी जब कभी मुम्बई जाते थे तो श्राविकाश्रमकी बहनोंको धर्मलाभ देनेके लिये चैत्यालयमें पूजन करते थे व शास्त्र द्वारा उपदेश सुनाया करते थे। मगनबाई भी पूजामें भाग लेती थीं। बाईजीने अपनी डायरीमें ता० २९ मई १९१७ के दिन लिखा है कि ब्रह्मचारीजीके साथ पूजा करी, आनंद रहा।

भक्तिमें आनन्द।

धरणगांव जिला खानदेशमें बिम्बप्रतिष्ठा ता० ९ जून १९१७ से थी। मगनबाई निमंत्रण आनेसे पधारी थीं। ता० ११ जूनको मंदिरमें स्त्रियोंकी सभा की। आश्रमके लिये २००)का फण्ड किया। यहां श्री वीरसेनजी भट्टारक कारंजा प्रतिष्ठाकारक थे। इनके पास कई दफे उपस्थित होकर बाईजीने अध्यात्मचर्चा की व आनंदलाभ किया।

धरणगांवमें उपदेश।

ता० १३ जून १९१७ को खण्डवा आकर रात्रिको जैन पाठशालाका निरीक्षण किया व शास्त्रसभामें शामिल हुई। ता० १४ को बड़वाहा जाकर जैन कन्याशालाका निरीक्षण कर शिक्षाकी उत्तेजनाके लिये इनाम बांटा। ता० २९ को इन्दौर आईं। यहांके श्राविकाश्रमका निरीक्षण किया। रात्रिको नये मंदिरमें सभा करके पांच अणुव्रतपर उपदेश किया व स्त्रियोंसे पंच पापका त्याग कराया। दूसरे दिन जज जुगमंदरलालजी जैन व ब्र० अमरचंदजीसे मिलकर धर्मचर्चा की। ता० १९ को मलकापुर आकर रात्रिको संयुक्त सभामें उपदेश दिया। श्राविकाश्रमके लिये ८९) का चन्दा कराया।

मालवाका भ्रमण।

हैदराबाद यात्रा । भादोंकी दशलाक्षणी। इस वर्ष हैदराबाद दक्षिणमें वितानेके लिये श्रीमती मगनबाई, कंकुबाई, राजूबाई, रुखमाबाई, भीमाबाई व सेठ रावजी सखाराम ता० २० सितम्बरको आकर केशरबागके रमणीक स्थानमें ठहरे। दशलाक्षणी पर्वके प्रथम दिन भादों सुदी ५को सेठ रावजीने तत्वार्थ-सूत्रके पहले अध्यायका अर्थ समझाया, दूसरे दिन कंकुबाईजीने दूसरे अध्यायका अर्थ कहा। तीसरे दिन मगनबाईजीने तीसरे व चौथे अध्यायके अर्थ समझाए। चौथे दिन रावसाहबने पांचवें अध्यायके अर्थ कहे। ता० २६को पं० माणकचंदजीने छठे अध्यायका अर्थ कहा। ता० २७ को रखाबाईने सातवें अध्यायका अर्थ समझाया। आज धूपदशमी थी। बेगम बाजारके मंदिरमें मगनबाई व कंकुबाईके भाषण हुए व श्राविकाश्रमके लिये फंड भी प्रारम्भ हुआ। ता० २८को रावजीसाहबने आठवें अध्यायका अर्थ किया। यति मंदिरमें सभा थी। मगनबाई, कंकुबाई व राजूबाईके भाषण हुए। ता० २९ भादों सुदी १४ को नौमें दशमें अध्यायका अर्थ कंकुबाईजीने किया। आज शामको बेगमबाजारके मंदिरमें अभिषेक था। यहां आजके दिन सब स्त्री पुरुष परस्पर क्षमा कराते हैं। बड़ा आनन्द आता है। ता० ३० को आश्रमके लिये फण्डकी विशेष चेष्टा की गई। यहां करीब १०००) का फण्ड श्राविकाश्रमके लिये किया। फिर बंबई आईं।

वर्धामें उपदेश । मगनबाईका जीवन मात्र सेवार्थ बीतता था। वर्धाका निमंत्रण होनेसे ता० ३ अक्टूबरको चलकर ता० ४को वर्धा आए। यहां आसौन वदी ४—५को रथोत्सव आदि होता है। ता० ४को कन्याशालाकी परीक्षा की व

सेठ जमनालालजी परोपकारी भाईसे मिलकर देश व समाजहितमें वार्तालाप की। ता.५को जैन बोर्डिंगके मकानमें रात्रिको स्त्रीपुरुषोंकी संयुक्त सभा हुई। कन्याशालाकी बालाओंने सम्वाद किया, उनको इनाम दिया गया। मगनबाईजीने अपने मनोहर भाषणसे सबको संतोषित किया। पंडिता चन्दाबाई व ललिताबाई भी पधारी थीं उनके भी भाषण हुए। ता० ६ को तीसरे पहर स्त्रियोंकी सभा बोर्डिंगमें हुई। सुरीति प्रचारपर महिलाओंके भाषण हुए। कन्याशालाके लिये फंड किया गया। इस तरह जैन कन्याशालाकी स्थिरता करके व स्त्रियोंको जगाकरके परिश्रमी जैन-महिलारत्न बम्बई आगई। यह कन्याशाला मगनबाई जैन कन्याशालाके नामसे चल रही थी।

मगसर वदी १ सं० १९७४ ता० २९ नवम्बर १९१७को

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

श्राविकाश्रमका आठवां वार्षिक उत्सव सौ० रतनबाई त्रिभुवनदासके सभापतित्वमें हुआ। सम्वाद हुए, इनाम बांटा गया। मगनबाईजीने शिक्षापर असरकारक भाषण किया।

मगनबाईजीकी डायरीमें ता० १२ दिसम्बर १९१७ के

उपदेशी दोहे।

दिन नीचे लिखे दोहे लिखे हैं, संभव है बाईजीके द्वारा सम्पादित किये गये हों।

दोहा।

आदि संग आई नहीं, अंत संग नहिं जाय।
बीच आदि बीचहि गई, तासो करे बलाय ॥ १ ॥
संसारीका संग न कीजे, जो दुख अपना रोवे।
वे तो फिरे करमके मारे, जती जनम क्यों खोवे ॥ २ ॥

राग द्वेषको जीतनो, कठिन जगतके माहिं।
अमर भए सो कह गए यामें संशय नाहिं ॥ ३ ॥
राग द्वेष कल्लोल विन, जो मन जल थिर होय।
सो देखे निज रूपको, और न देखे कोय ॥ ४ ॥
मरघट सम अति मलिन तन, निर्मल आतम हंस।
कर इसका सरधान तू, मिटै कर्मका वंस ॥ ५ ॥
जगत मूल यह राग है, मुकत मूल वैराग।
मूल दोउको यों कह्यो, जाग सके तो जाग ॥ ६ ॥
आयु घटत है रैन दिन, ज्यों करवतसे काठ।
हित अपना जल्दी करो, पड़ा रहेगा ठाट ॥ ७ ॥
चेतन जी तुम चतुर हो, कहा भए मतिहीन।
ऐसे नर भव पायके, विषयनमें चित दीन ॥ ८ ॥

अध्यात्मप्रेम।

ता० ३१ जनवरी सन् १९१८से एक सप्ताह श्रीमती मगनबाई व कंकुबाई कारंजा इसलिये पधारी कि श्री वीरसेन स्वामीसे अध्यात्मलाभ लिया जाय। इस समय ब्र०सीतलप्रसादजी भी आगए थे। श्री आत्मख्याती समयसारकी पंडित जयचंदकृत भाषा टीकाका वाचन उक्त स्वामीके सामने प्रतिदिन तीनवार चलता था। सवेरे ८से १० तक, तीसरे पहर ३॥से ५॥ तक, रात्रिको ८॥से ११ तक। महाराजजी बीच बीचमें बहुत उत्तम विवेचन करते थे। जिसके सुननेसे मन जगतके प्रपंचसे हटकर सिद्ध भावमें चला जाता था। अध्यात्मचर्चाका कुछ सार श्रीमती मगनबाईजीने अपनी डायरीमें लिख लिया था, उसकी नकल यहां दीजाती है:-

(१) आत्मा अनादिकालसे जैसेका तैसा है और ऐसा ही अनंतकाल तक रहेगा। दर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य, गुण जैसे थे वैसे

हैं और वैसे ही रहेंगे। सिद्धमें और इस आत्मामें कोई अन्तर नहीं है।

(२) यद्यपि आत्माएं अनंत हैं परन्तु स्वरूपकी अपेक्षा सब समान हैं।

(३) आत्मा किसी भी परद्रव्य, परद्रव्यके गुण व परद्रव्यके द्वारा होनेवाले भावोंसे निराला था, है और रहेगा। द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म कोई इसमें नहीं हैं।

(४) यह आत्मा किसी भी परद्रव्य या परभावका न कर्ता है, न भोक्ता है, न इसमें कोई विचार या तर्क या संकल्प विकल्प होता है।

(५) विचार, तर्क, संकल्पविकल्प करना मनका काम है, मन पुद्गल ही है।

(६) रागद्वेष मोहरूप भाव अज्ञानभाव है। आत्मा इनसे रहित है। ज्ञानी आत्माको आत्मा व परको पर जानता है अतएव वह रागी, द्वेषी, मोही नहीं है इसीसे वह कर्मबंधको नहीं प्राप्त होता।

(७) भले ही अज्ञान अवस्थामें भेदज्ञानके अभावसे आत्माको भावकर्मका कर्ता या भोक्ता कहो परन्तु ज्ञानी इस कर्तृत्व भोक्तृत्वको आत्मामें योजन नहीं करता।

(८) सम्यक्त ज्ञान चारित्र आत्मा ही है।

(९) भेदविज्ञान स्व परका यथार्थ निर्णय कर लेना है। इसके न होते हुए आस्रव बंध आदि हैं। इसके होनेपर नहीं हैं। संवर निर्जरा और मोक्ष ही हैं, यह कथन व्यवहारनयसे है।

(१०) भेदविज्ञान या सम्यक्त होनेपर जो कुछ सूक्ष्म बंध होता है वह भवबीज नहीं है अतएव नहींके समान है।

(११) अनुभव यही करना चाहिये कि आत्माका स्वरूप सबसे निराला अकर्तृ और अभोक्तृ है। आत्मा सदासे ही सूर्य समान अपनी ज्ञान ज्योतिसे प्रकाशमान है।

(१२) भेदविज्ञान होनेपर भी कर्मोदयसे गृहस्थमें जो भोगादि भोगे जाते हैं, चक्रवर्तीकी सम्पदा रखी जाती है सो बंध न करके निर्जरा ही कराती है, क्योंकि तब ज्ञानी कमलसम निर्लेप रहता है। सूक्ष्मबंध अबंधवत् है।

(१३) जब कर्मोदयकी मंदतासे तीव्र वैराग्य होता है तब ज्ञानी गृहस्थ अवस्था त्याग निर्ग्रन्थ हो एकाग्रताका अभ्यास करता है। ज्ञान कर्म क्षय कर देता है।

(१४) सिद्ध भगवान हमारे लिये नमूना है। हमें इसी समान यत्र तत्र आत्माका अनुभव करना चाहिये, देह देवलमें सिद्धदेवको भजना चाहिये।

(१५) व्यवहारमें जीवदयाको पालते हुए वर्तन करना चाहिये। आहार विहारादिमें इसपर लक्ष्य देना चाहिये।

कारंजामें ता० ६ फर्वरी १९१८की रात्रिको मनुष्य कर्तव्य पर ब्र० सीतलप्रसादजी, कंकुबाई तथा महाराजका विवेचन हुआ।

मगनबाईजीको नीचे लिखा पद पढ़नेकी गाढ़ रुचि थी जिसे उन्होंने अपनी डायरीमें ता० ८ फर्वरी १९१८ को लिख लिया था।

एक पदकी गाढ़ रुचि।

पद।

एक योगी असन बनावे, तसु भखत असन अघ नशन होत।
एक योगी असन बनावे॥ टेक॥

ज्ञान सुधारस जल भर लावे, चूल्हा शील बनावे ।
कर्म काष्ठको चुग चुग बाले, ध्यानाग्नि प्रजलावे ॥ १ ॥

अनुभव भाजन निजगुण तंदुल, समता खीर बनावे ।
सोहं मिष्ट निशाङ्कित व्यंजन, समकित छौंक लगावे ॥ २ ॥

स्याद्वाद सप्तभंग मसाले, गिनत पार नहिं पावे ।
निश्चय नयका चमचा फेरे, बुद्धि भावना आवे ॥ ३ ॥

आप पकावे आप ही खावे, खावत नाहिं अघावे ।
तदपि मुक्ति पद पंकज सेवे, नैनानन्द गुण गावे ॥ ४ ॥

स्तवनिधिमें उपदेश ।

माह वदी १४ से माह सुदी २ ता० १० फर्वरी १९१८ से ता० १३ तक स्तवनिधि क्षेत्रमें द० महाराष्ट्र जैन प्रांतिक सभाका वार्षिक अधिवेशन था । कारञ्जासे तुरत ही आकर उद्योगशीला बाई यहां पधारीं, साथमें आश्रमकी बाइयां भी गईं । व श्रीमती कँकुबाईजी भी साथ थी । एक रातको महिला परिषद्का प्रभावशाली जल्सा हुआ । प्रमुखाका पद सौ० सुन्दरबाई देशपांडे अण्णागिरिने ग्रहण किया था । प्रमुखाने भाषणमें ये शब्द भी कहें—“ स्त्रीशिक्षणका प्रचार होना जरूरी है । वह ऐसी सभाओंके द्वारा ही होसक्ता है । इन दोनों (मगनबाई व कंकुबाई) से प्रचंड प्रयत्न होरहा है ” फिर उभय बहनोंने बड़ा ही धर्मपूर्ण व स्त्री कर्तव्य दर्शक भाषण किया । सौ० द्वारकाबाई मूले, रत्नाबाई कद्रे व शांताबाई मिरजेने अपने२ भाषण पढ़े । सभामें श्राविकाश्रमके लिये २००) का फंड हुआ । फिर कोल्हापुर होकर व सांगली आकर सभाकी, ९०)का फंड किया । ता० १६ फर्वरीको सकुशल बम्बई को

मगनबाईजी नित्य इसी प्रयत्नमें रहती थीं कि किसी तरह इस श्राविकाश्रमको चिरस्थाई कर दिया जाय।

श्राविकाश्रमको १००००)का दान।

आपने सेठ पानाचंदजीकी धर्मपत्नी रुक्मणीबाईको समझाकर उनकी पुत्री रतनबाईके नामसे १००००) श्राविकाश्रममें इस शर्तपर दिलवाए कि उनका नाम श्राविकाश्रमके साथ जोड़ दिया जावे। कई माससे यह प्रयत्न चल रहा था। जब श्रीमती मगनबाई प्रवासमें थी कि उनको ता० १४ फर्वरी १९१८ को पत्र मिला कि यह दान निश्चित होगया है। इस सम्वादसे बाईजीको बड़ा ही आनन्द हुआ।

अम्बाला छावनीमें वेदीप्रतिष्ठोत्सव माह सुदी १३ संवत १९७४को था। भा० दि० जैन महासभाकी भी वार्षिक बैठक थी। महिला परिषद्को भी निमंत्रण दिया गया था। बबईसे तुर्त मगनबाई

अम्बालामें महिला परिषद।

कंकुबाईजीको लेकर माह सुदी ९ ता० १९ फर्वरी १९१८ को निकल पड़ी। पं० चंदाबाई व देहरादूनकी उत्साही चंमेलीबाई भी आगई थीं। ता० २५ व २६ फर्वरीको दिनमें परिषदके जल्से बड़े ही शानसे हुए। प्रमुखाका आसन सौ० सुशीलाबाई धर्मपत्नी रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजी देहलीने ग्रहण किया था। उनके स्वागतका जुलूस महिलाओंने बड़े भावसे दर्शनीय निकाला था। सभापतिका भाषण बहुत ही विद्वत्तापूर्ण था। कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए। पंजाबमें एक महिलाश्रम स्थापनका भी हुआ। श्राविकाश्रम बम्बईको २०००) से अधिककी आय हुई। मगनबाई आदि विदुषी बहनोंके भाषणोंसे स्त्रियोंमें बहुत जागृति फैली।

जैन महिलारत्न पं० ललिताबाईजी, श्राविकाश्रम–बम्बई।

[महिलारत्न मगनबाईजीकी धर्मभगिनी व धर्मकार्य सहोदरा तथा श्राविकाश्रमकी वर्तमान सञ्चालिका।]

श्रीमती मगनबाईने पंजाबमें जागृति करनेके लिये दौरा करना

पंजाबका दौरा।

निश्चय किया। ता० १ मार्चको कर... आकर दिनमें स्त्रियोंकी सभा करके उनसे मिथ्यात्व, अश्लील गीत गाना, होली रमणका त्याग कराया व दर्शन, जप व स्वाध्यायके नियम कराए। श्राविकाश्रमके लिये ६०) का फंड हुआ। रात्रिको सार्वजनिक सभा स्त्री पुरुषोंकी एकत्र हुई, उस समय कंकुबाई तथा मगनबाईने मनुष्य जन्मकी सफलता पर व सत्य पर बड़े ही मार्मिक भाषण दिये। ता० २ मार्चको पानीपत आए। यहांके भाइयोंने बहुत भारी स्वागत किया। यहांके जैन हाईस्कूलके छात्रोंने थोड़ी दूर तक स्वयं गाड़ी खींची। स्टेशनपर १०० जैनी एकत्र हुए थे। नगरमें जुलूस निकाला। आज यहांके हाईस्कूलका निरीक्षण किया। रात्रिको शास्त्र सभाके समय मगनबाईजीने षट् द्रव्यपर अच्छा विवेचन किया। ता० ३ मार्चको कंकूबाईजीने स्कूलके छात्रोंको उपयोगी शिक्षापर बहुत असरकारक उपदेश दिया। दोपहरको स्त्री सभामें कंकुबाईजीने व श्रीदेवीने मिथ्यात्व पर कहा व श्राविकाश्रमके लिये अपील करने पर १९०) का फंड होगया। रात्रिको पबलिक सभा हुई। सभापतिका आसन स्कूल इन्सपेक्टरने ग्रहण किया था। देश-सेवा पर मगनबाईजीने बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया। सभामें मुसलमान लोग भी थे। करीब १५०० की हाजरी होगी। पं० अर्जुनलालजी सेठीके सम्बंधमें प्रस्ताव पास हुआ। ता० ४ मार्चको आर्यसमाजियोंकी धर्मशालामें दोपहरको सभा हुई। ५०० की हाजरी थी। दोनों बहनोंने जैनधर्मकी प्रभावनाकारक

वक्तता दी व अंग्रेजीकी कुछ पुस्तकें आर्यसमाजको भेट कीं। रात्रिको शास्त्र सभामें वड़ा ही आनंद रहा। अच्छी धर्मचर्चा रही। प० अरहदासजी वहुत योग्य हैं। ता० ९ को सवेरे धर्मचर्चा हुई। यहां कुल चन्दा श्राविकाश्रमको ४०१)का हुआ। रायबहादुर लक्ष्मीचन्दजीने वहुत उत्साह बताया। यहां मगनबाईजीको समस्त जैन सघने एक मानपत्र अर्पण किया जो नीचे दिया जाता है—

अभिनन्दनपत्रम्।

हम पानीपत निवासी सकल जैन स्त्री पुरुष तथा जैन हाई-स्कूलके अध्यापक और विद्यार्थीगण सहर्ष अपना उदन्त प्रकाश करते हुए ये अभिनन्दन पत्र सेवामें श्रीमती महादेवी मगनबाईजी तथा कंकूबाईको अर्पित करते हैं कि जिन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकारकर पानीपतमें पधारके अपनी सारगर्भित उत्तमोत्तम वक्तृताओंसे हमें अपनी कृपाका पात्र बनाया। इस अमृतमयि कृपाका वदला देना अशक्तसा प्रतिती होता है कि जिन्होंने अपनी स्वार्थता और अपने सर्वैश्वर्य रूप सुखको तुच्छतर जानके अपनी जीवन तक धर्मोपदेश करने और विधवाश्रम मुम्बई खोलकर उसके पालन पोषण और सद्विद्या आदि प्रदान करनेमें समर्पण किया। और इस महान् कार्यकी उन्नतिके लिये देश देशान्तरोंमें भ्रमण कर प्रति व्यक्ति पर अपने अंतराभिप्रायका प्रभाव प्रकाश करनेका तन, मन, धनसे संकल्प किया। अतः यह स्वल्पसा अभिनन्दन पत्र आपकी सेवामें समर्पित है, स्वीकार कर कृतार्थ कीजे।

पानीपत ४-३-१८।

ता० ६ मार्चको सुनपत आए। यहां पंडित उमरावसिंहजीसे

सुनपतमें कन्याशाला।

मिलकर बहुत धर्मलाभ उठाया। दोपहरको शास्त्र सभा की गई। श्रीदेवीने १ घंटा उपदेश देकर मिथ्यात्व निषेध पर व नित्यकर्म पर कहा। रात्रिको शास्त्र सभामें श्लोकवार्तिक सुना तथा कंकुबाईने कुछ उपदेश किया व ११ बजे रात्रितक धर्मचर्चा रही। ता० ७ मार्चको दोपहरको स्त्री पुरुषकी संयुक्त सभा हुई। ५००की हाजरी थी। कुछ अजैन भाई भी थे। कंकुबाईने स्त्री शिक्षापर व मगनबाईजीने कन्याशालाकी आवश्यक्ता बताई व श्राविकाश्रमका हाल कहा। रात्रिको शास्त्र सभाके पीछे श्राविकाश्रमके लिये २०१) का चंदा होगया व कन्याशालाके लिये मासिक चन्दा लिखा गया। ता० ८ मार्चको यहांके भाइयोंने सवेरे ही मगनबाईजीके नामसे कन्याशालाका मुहूर्त किया। कन्याशालामें मगनबाईजीका नाम जोड़ उस समय एक धर्मात्मा भाईने मगनबाईजी व कंकुबाईजीकी प्रशंसामें कुछ पद कहे थे वे नीचे प्रकार हैं—

सुनपत भाग सुहावना, बाई आई नार।
सुखिया **मगन** कनकु भई, खूब किया उपगार ॥ १ ॥
जैन कन्या सकूलको, खोल किया उद्धार;
निरंजन जस गावो सभी, बोलो जैजैकार ॥ २ ॥
संवत् श्री महावीरको, चौबीसौ चौवाल।
फागुन दशमी कृष्णपक्ष, शुक्रवार शुभ साल ॥ ३ ॥

× × ×

मगन करो नित मगनमें, मगन करो सब पार।
जगन करो नित आतमा, लखो आपमें आप ॥

कंकु संक सब मेटकर, पाप पंक कर दूर।
आत्माका पहचान कर, करो कर्म चकचूर॥
नित्य निरंजन नामका, रहूं सदा ममनून।
जैन धर्म जगमें बढो, कटो पाप दिन दून॥

उसी दिन दिहली आए और रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजीके यहां डेरा किया। ता० ९ को इन्द्रप्रस्थ व हिन्दू कन्याशालाका निरीक्षण किया व जैन अनाथाश्रमको भी देखा।

दिहलीमें महिलाश्रम।

अम्बालाकी महिला परिषदके प्रस्तावानुसार श्रीमती रामदेवीने उद्यम करके पहाड़ी धीरज पर फागुन वदी १२ ता० १० मार्चको आश्रमके मुहूर्त करनेका निश्चय किया था। मगनबाईजी व कंकुबाईजी सवेरे ही पहाड़ी पर पहुंच गई। पूजन पाठ होकर आश्रमका स्थापन किया गया। दोपहरको स्त्री सभा हुई। दोनों पुरुषार्थी बहनोंने शिक्षाके महत्व पर विवेचन किया। २०००) का चन्दा हुआ।

जाहिर संस्थाओंका अनुभव।

मगनबाईजीको यह बराबर ध्यान रहता था कि पबलिक संस्थाओंको देखकर अनुभव प्राप्त किया जाय। ता० १२ मार्चको लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेजका निरीक्षण किया। ३० लाखकी सम्पत्ति है। मुसलमान, पार्सी, सिक्ख, हिन्दुके भिन्न२ वार्ड हैं। दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचन्दजी इन्दौरने एक नर्स वार्ड बनवा दिया है। दिहलीमें श्राविकाश्रमके लिये ८००) का चंदा किया। ता० १३ को ग्वालियर ठहरीं। मंदिरके दर्शन किये व धर्मोपदेश दिया। सोनागिर सिद्धक्षेत्रका दर्शन करके ता० १६ को ललितपुरमें रात्रिको सभामें उपदेश दिया। सेठ मथुरादासजी टडैया

व सिंगई पंचमलालजीसे मिले। फिर ता० १८को बम्बई आगई।

इन्दौरमें साहित्य सम्मेलन।

इन्दौरमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन ता० २९-३०-३१ मार्चको था। महात्मा गांधीजी सभापति थे। मगनबाईजीको इस पबलिक कामकी भी रुचि थी। बाईजी बंबईसे ता० २७ मार्चको चलकर ता० २८ को इन्दौर आए। उसी गाड़ीमें गांधीजी भी थे। स्वागत सभापति सेठ हुकमचन्दजी थे। ता० ३१ को मगनबाईजीने भी स्त्री शिक्षापर व खासकर विधवाओंको शिक्षित बनानेकी आवश्यक्ता पर मनोहर भाषण दिया। सेठ हुकमचन्दजीने १० हजार रु० दान किये। ता० २ अप्रैलको ८००की सभामें सुखके उपाय पर बाईजीने भाषण किया। कल्याण जैन कन्याशाला व कंचनबाई श्राविकाश्रमका कार्य देखकर त्रुटियोंके मेटनेका उपाय बताया। ता० ३को सभामें भाषण किया। फिर यहांके श्राविकाश्रममें रहकर ता० ८ को रतलाम जाकर जैन बोर्डिंगको देखा व ता० ९ को मुम्बई लौटे।

ध्रुवफंडकी चेष्टा।

बंबईमें ता० १३ अप्रैलको श्राविकाश्रमके ध्रुवफंडके लिये तीन रकमें भरवाई-१५०१) सेठ हुकमचंदजी इन्दौर, १००१) सेठ चुन्नीलाल प्रेमानन्द, ५०१) एक मारवाड़ी अजैन बन्धु।

अंकलेश्वरमें उपदेश।

अंकलेश्वरमें मुनीम धर्मचंदजी सख्त बीमार थे उनके संतोषके लिये मगनबाईजी ता० ५ जूनको आई तब यहां ता० ६ और ८ को दो सार्वजनिक स्त्री सभाएं कीं। पहलीमें सौ० मटुबहन सभापति

थीं तब स्त्री कर्तव्यपर बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया। दूसरीमें मगनबाईजी सभापति थीं। भगिनी समाज स्थापन करनेका प्रस्ताव पास कराया।

सेठीजीके लिये चेष्टा।

सेठीजी अर्जुनलालपर जो राज्यद्वारा आपत्ति आई थी उसके निवारणके लिये अम्बालाकी महिलापरिषद्में यह प्रयत्न हुआ था कि जैन स्त्रियोंकी ओरसे एक मेमोरियाल वाइसराय महोदयकी सेवामें भेजा जाय व डेपुटेशनको मिले, तदनुसार मेमोरियल भेजा गया व मिलनेकी प्रार्थना की गई। प्राइवेट सेक्रेटरीका उत्तर आया कि मेमोरियल वाइसराय महोदयके सामने पेश है, मिलनेकी फुरसद नहीं है। मगनबाईजीका यह उद्योग भी प्रशंसनीय था।

द० महाराष्ट्रमें उपदेश।

ता० २२ जूनको चलकर ता० २३ को दुधगाममें जाकर सभामें धर्मोपदेश दिया। फिर ता० २४-२५ सागलीमें ठहरकर धर्मोपदेश दिया। श्राविकाश्रमके लिये १००) का फंड किया व ता० २६ को बम्बई लौटे।

गुजरातमें उपदेश।

मगनबाईजी श्राविकाश्रमकी देखभाल व सम्हाल रखती हुई यत्र तत्र भ्रमण करके जागृति फैलाती थीं। आश्रमका विशेष काम ललिताबाईजीके सुपुर्द कर दिया था। सोनासण (गुजरात) में उत्सव था। ता० २६ जुलाईको बंबईसे चलकर सोनासण ता० २७ को पहुंचे। रात्रिको सभामें धर्मोपदेश दिया। ता० २८ को मुनि चन्द्रसागरजीका केशलोंच देखा। यहां पाठशालाके लिये ८०००) का दान हुआ।

भरो भंडार भक्तिनो, हृदयमां वीर्य लावीने.
भजो प्रभु पार्श्व स्वामीने, हृदयमां हर्ष आणीने. २
—प्रभा.

नवीन वर्षे नवा कामो, करो उत्साह उर धारी.
बने व्हेनो सदाचारी, करे सेवा उलट आणी (धारी)
शुभ आशिष छे मारी, बनो आदर्श रुप नारी.
अविद्या भूतने काढी, सुविद्या द्यो मति सारी. १
—ललिता.

नवा वर्षे सुखी थाओ, गुणीजन जगतना जीवो.
फळो फूलो वहो नीरने, भजो प्रेमे सदा वीरने,
दु:खीना दु:ख कापीने, करो शांति जे सुखदा छे,
वनिताओ विनय धारी, नमो वीरने उर आणी.
—मगन.

कोल्हापुर नरेशका स्वागत ।

ता० १७ नवम्बर १९१८को श्राविकाश्रम बंबईमें श्रीमान् साहू छत्रपति सर्कार कोल्हापुर महाराज पधारे। आपने सर्व व्यवस्था देखकर बहुत ही हर्ष प्रगट किया। सुप० जैन बोर्डिंग व मि० चौकसी व बलवंतराव बुगटे कालेजके छात्रोंने महाराजका स्वागत माननीय शब्दोंमें किया। श्रीमती मगनबाईजीसे मिले, महाराजने कहा "तुमने बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। सेठजी तो पुरुष होके करते ही थे तुम जो करती हो सो बड़े परिश्रमका कार्य है।"

कुंथलगिरिकी यात्रा।

मगनबाईजी व कंकुबाईजी व सेठ रावजी सखाराम दोशी शोलापुरने ता० १६ दिसम्बर १९१८को श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र जिला सोलापुरकी यात्रा की। यहां वार्षिक मेला था। तथा ब्रह्मचर्याश्रमका वार्षिक उत्सव था। ता० १७ को धर्म परीक्षा ली गई। रात्रिको

तीन धर्मभगिनियां—कंकूबहिन, मगनबहिन और ललिताबहिन।

वीर सं० २४३८.

सभामें मगनबाईजीने भी संस्थाकी मददके लिये अपील की । ता० १८ को प्रातःकाल विद्यार्थियोंके व्यायाम देखे उस समय श्रीमती कंकुबाई व मगनबाईने ब्रह्मचर्यपर उत्तम विवेचन किया । रात्रिको सभामें बाईजीने श्राविकाश्रमका प्रचार किया। एक विधवा जो विवाहके १९ दिन बाद ही विधवा हुई थी, आश्रममें प्रवेश की गई। दो कन्याओंने भी प्रवेश किया । ४००) का फंड हुआ ता० २१को कुरदूवाडीमें उपदेश दिया व आश्रमके लिये ४७९) की मदद मिली । पुरुषार्थी बाइजी फिर बंबई आगई ।

महिला परिषद्का नौमा जलसा ।

उदयपुरमें भा० दि० जैन महासभाके अधिवेशनके अवसर पर महिलापरिषका नौमा वार्षिक जलसा ता० १९ व २१ मई सन् १९१९ को श्रीमती मनोरमाबाईके सभापतित्वमें हुआ । मगनबाईजी पधारी थीं । स्त्रियोंमें बाईजीके उपदेशसे बहुत जागृति हुई । कन्याओंकी परीक्षा लेकर इनाम बांटा गया । कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए जिनमें स्वदेशी वस्त्र व्यवहारका भी प्रस्ताव था । मगनबाईजीने रिपोर्ट सभामें पढ़ी उनमें नीचे लिखी संस्थाओंकी कार्यवाही गर्भित थी (१) श्राविकाश्रम बंबई (२) पाठशाला नातेपूते । (३) माणिकबाई पाठशाला ईडर, (४) विद्यावर्द्धिनी कन्याशाला बड़वाहा, (५) कन्याशाला बड़ौत, (६) फूलकौर कन्याशाला सूरत, (७) पद्मावती कन्याशाला जैपुर, (८) कन्याशाला आरा, (९) कन्याशाला फीरोजपुर, (१०) कन्याशाला सिवनी, (११) कन्याशाला मेरठ, (१२) चतुरबाई श्राविका विद्यालय शोलापुर, (१३) कन्याशाला इन्दौर ।

स्वदेशी वस्तु काममें लाई जाय व स्त्रियोपयोगी पुस्तकें तय्यार की जाय वे तीन प्रस्ताव उपयोगी थे।

जन्म दिवस उत्सव।

श्रीमती मगनबाईजीका जन्म दिवस गुजराती मगसर वदी १० ता० १६ दिसम्बर १९१९ के दिन था। श्राविकाश्रमकी बाइयां वर्षगांठके दिन विशेष पूजन व सभा किया करती हैं तदनुसार आज भी हुई। मगनबाईजीकी तरफसे विशेष जीमन दिया गया। आज मगनबाईजीको ४० वां वर्ष प्रारम्भ हुआ।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

दिसम्बर १९१९ को श्राविकाश्रम बंबईका वार्षिकोत्सव श्रीमती नानीबहन गज्जरके सभापतित्वमें किया गया। रिपोर्ट सुनाई गई। तथा सभामें प्रगट किया गया कि २०००) श्री रुक्मणीबाई ध० पानाचंद सेठने अपनी पुत्री रतनबहिनकी स्मृतिमें दान किया है तथा १००१) जड़ावबाईने अपनी पुत्री कीकीके स्मरणार्थ दिया व और भी फंडमें रकम आई। मगनबाई व कंकुबाईने भाषण किया।

महाराष्ट्रमें भ्रमण।

मगनबाईजीको श्राविकाश्रमकी उन्नतिका दिनरात ध्यान था। सेवाधर्म इनका खानपान था। ता० १७ जनवरी १९२० को कंकुबाईजीको साथ लेकर सांगली राज्यमें आई। यहांके जैन बोर्डिंगमें सभा करके धर्मोपदेश दिया व श्राविकाश्रमकी उपयोगिता बताई। दूसरे दिन यहां श्राविकाश्रमके ध्रौव्यफंडमें २१००) भराया व रात्रिको मंदिरजीमें स्त्रीपुरुषोंकी संयुक्त सभा हुई। श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी श्राविकाश्रमके ध्रौव्य-

फर्वरीको स्त्री पुरुषोंकी संयुक्त सभा रात्रिको १२ बजेतक हुई। और भी महिलाओंके भाषण हुए।

दाहौदमें उपदेश।

ता० ४ को दाहौद आए। रात्रिको सेठ रावजी सखाराम दोशीके सभापतित्वमें सभा हुई। दोनों बाइयोंने समाजोन्नति पर भाषण दिया। ता० ५ को दाहौद जैन पाठशालाकी परीक्षा ली। पं० फूलचंदजी भली प्रकार शिक्षा देते थे कन्याओंने भी अच्छी उन्नति की थी।

झालरापाटनकी यात्रा।

दाहौदसे झालरापाटन आकर ता० ७ फर्वरीको श्री शांतिनाथकी भव्य मूर्तिके दर्शन किये। ऐलक पन्नालालजी सरस्वती भवनका निरीक्षण किया। इसमें १३०० हस्तलिखित व १००० मुद्रित पुस्तकें हैं।

ता० ८ फर्वरीको कोटा आए। यहां रानीसाहबाकी कन्याशालाका निरीक्षण किया। ता० ९ को स्त्री सभामें उपदेश दिया।

दिहलीकी यात्रा।

यहांसे चलकर ता० ११ को दिहली आए। पहाड़ीधीरजकी जैन कन्याशाला व जैन स्कूलका निरीक्षण किया। ता० १२ को पहाड़ीधीरज पर सभा करके धर्मोपदेश दिया। ता० १४ को फीमेल नार्मल स्कूलका काम देखा। ता० १५ की रात्रिको महिलाश्रमकी सभा हुई। दिनमें शहरमें स्त्री सभामें कंकुबाईजीने धर्मोपदेश दिया। श्राविकाश्रमके लिये भ्रमण करके कई दिन फंड लिखवाया। फिर ता० १६ फर्वरीको मथुरा आए। ता० १७ को चौरासी जाकर श्री जम्बूस्वामी अंतिमकेवलीकी सिद्धभूमिकी यात्रा की। वृन्दावन आकर पंडिता चंदाबाईजी और ब्रजबालासे मुलाकात की।

श्रीमती मगनबाईजीको अब यह चिन्ता थी कि किसी तरह श्राविकाश्रमका फंड रु० १ लाखका पूरा कर दिया जाय। यहां दिहलीमें श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीने सन् १९२०में चौमास किया था। इसी अवसर पर मगनबाईजी करीब दिवालीको पधारी, और ब्र० जीके साथ उद्योग करके करीब ८ हजारका ध्रौव्य फण्ड लिखवाया। बाईजीको परोपकारार्थ किसी भी दातारसे भिक्षा मांगनेमें लज्जा नहीं आती थी। तथा जिससे वह कहती थीं वह एक दानवीर पुत्रीकी अपील पर अवश्य ध्यान देता था—उससे इनकार नहीं होसक्ता था।

दिहलीमें फंड।

कानपुरमें भा० दि० जैन महासभाका अधिवेशन साहू सलेखचन्दजी नजीबाबादके सभापतित्वमें ता० १ से ४ अप्रेल १९२१ तक बड़े समारोहके साथ हुआ। इसी अवसर पर महिला परिषदको भी निमंत्रण किया गया था। श्रीमती पंडिता चन्दाबाईके सभापतित्वमें ता० २ व ३ अप्रैलको यह जलसा बड़े उत्साहके साथ हुआ। श्री० मगनबाईजीने इसके लिये बहुत परिश्रम किया। बहुतसी अजैन प्रतिष्ठित महिलाओंने भी सभाको सुशोभित किया था। मगनबाईजी व चन्दाबाईजीके भाषणोंमें कानपुर भरमें धूम मच गई थी। सुनकर स्त्री पुरुष गदगद् होजाते थे। श्रीमती कंकुबाई भी थीं। कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए। कन्या महाविद्यालय स्थापनका प्रस्ताव बहुत आवश्यक था। इसको कंकुबाईजीने पेश किया व ब्रजबालादेवी वृन्दावनने पुष्टि की। परिषदके लिये करीब १५००) का फण्ड होगया। यहां बहुतसी महिला-

कानपुरमें श्री महिला परिषद।

रतनबहिन रुक्ष्मणीबाई श्राविकाश्रम—बम्बईका एक ग्रूप ।

वार्षिक अधिवेशन बडे समारोहके साथ ता० ४ व ५ फर्वरीको हुआ। प्रमुखाका पद श्रीमती ललिताबाईने ग्रहण किया था। ६ प्रस्ताव पास हुए-एक उपदेशक विभाग स्थापित करनेपर था जिसको पंडिता चन्दाबाईने बड़े विद्वत्तापूर्ण भाषणके साथ उपस्थित किया था। एक परिषदकी ओरसे एक मासिकपत्र निकालनेपर था। इसमें पं० चंदाबाईको संपादिका व श्री० ललिताबाईको उपसंपादिका नियत किया गया। हर्षकी बात है कि यह पत्र मगनबाईजीके उत्साह व खर्चके प्रबंधसे तथा सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़ियाके प्रकाशकीय प्रबन्धसे भले प्रकार निकलता रहा है व अपनी उन्नति कर रहा है। मगनबाईजीने स्त्री शिक्षा सम्बंधी पुस्तक प्रकाशनके प्रस्ताव पर बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया था। मंत्रीका सर्व कार्य बडी योग्यतासे किया था, रिपोर्ट सुनाकर महिलाओंका मन मोहित कर लिया था। यहां ९००) का फंड भी हुआ।

"जैन महिलादर्श"का उदय।

उद्योगशीला मगनबाईजी, पं० चंदाबाई तथा पं० ललिताबाईके प्रयत्नसे तथा भाई मूलचंद किसनदासजी कापड़ियाकी आवश्यक सहायतासे महिला-परिषदकी ओरसे "जैन महिलादर्श" नामक मासिकपत्र वैशाख सुदी ३ वीरसं० २४४८से सूरतसे प्रगट होनेलगा।

लखनऊमें सम्मान पत्र।

कानपुरमें वीर सं० २४४७ के चैत्र मासमें जब भा० दि० जैन महासभाका जलसा हुआ था तब वहां एक प्रदर्शनी भी कीगई थी। जिसके सभापति वैद्य ।ज० पं० कन्हैयालालजी जैन थे। पं० मगनबाईजीने श्राविकाश्रमकी श्राविकाओं व कन्याओंकी बनी हुई उत्तम२ चीजें

प्रदर्शनीमें भेजी थीं, उसके उपलक्षमें प्रदर्शनीकी तरफसे लखनऊमें महासभाके सभापति बेरिष्टर चम्पतरायजीके द्वारा एक सम्मानपत्र संस्कृतमें उक्त बाई साहबाको ता० ९ फर्वरी १९२२ के जलसेमें अर्पण किया गया था। उसकी नकल नीचे है—

वन्दे वीरम्।

—दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती—

अयि माननीयाः सुहृदः श्रीमती मगनबाई अध्यक्षा जैन श्राविकाश्रम, तारदेव—मुम्बई।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन—महासभायाः पंचविंशतितमे महोत्सवे श्री० वीर संम्वत २४४७ चैत्रमासस्य द्वितीयसप्ताहे कानपुर (यू० पी०) नगरे सम्भृतायां प्रथमजैनसाहित्यप्रदर्शिन्या यच्छ्रीमद्भिः परोपकारपरायणैः धर्मबुद्धया बालिकानां हस्तैः सज्जीकृतानि चारुतराणि द्रव्याणि प्रेषितानि, तत्कृते सबहुमानपुरस्समेतत्सम्मानपत्रं तत्र भवता श्रीमता सेवायां समर्प्यते। कृतेनानेन साहाय्येन सुचिरं कृतज्ञतापाशबद्धाः स्म।

हस्ताक्षराणि।

Champatrai Jain, लखनऊ महोत्सवस्य सभापतेः	द० दुर्गाप्रसाद प्रदर्शिन्याः सभापतेः
रामस्वरूप स्वागतसमित्याः सभापतेः।	कन्हैयालाल प्रदर्शिन्याः मंत्रिणः
	ता० ९–२–१९२२.

सूरतमें भाषण।

ज्येष्ठ वदी ४ को सूरतमें सेठ मूलचन्द किशनदासजीके विवाहके उपलक्षमें चन्दावाड़ीमें एक व्याख्यान सभा हुई, उस समय श्रीमती मगनबाईजीने विद्याकी आवश्यकतापर बहुत ही ललित भाषण किया व ९०) का

दान भी किया। आपके उद्योगसे उससमय ११२९)का विद्यादान होगया था।

"जैन महिलादर्श" पत्र द्वारा मगनबाईजीके भी उपयोगी लेख विशेष रूपसे प्रकाशित होने लगे। अंक आषाढ़ सुदी ३ वीर सं० २४४८ में पृ० ७३ पर बाईजीके द्वारा लिखित ९ नियम बड़े उपयोगी हैं जो पाठकोंके ज्ञानके लिये दिये जाते हैं—

मगनबाईजीकी लेखनी।

दूसरेके साथ वर्ताव करनेके कुछ नियम।

(१) जो कार्य करनेका आपका फर्ज (धर्म) नहीं, उसको व्यर्थ समझ कभी मत करो। कोई भी कार्य करनेके प्रथम उसके करनेका मेरा फर्ज (धर्म) है अथवा नहीं उसका जरूर विचार करो।

(२) एक भी शब्द वेफिजूल (व्यर्थ) न बोलो। शब्दोच्चारके प्रथम ही उससे क्या फल (नतीजा) होगा उसका विचार करो। दूसरोंकी संगतिमें फँसकर अपने नियमोंको कभी भंग मत करो।

(३) अपने मनमें निरुपयोगी अथवा अहंकारी विचारोंको स्थान न दो, यह कहना सरल है पर करना दुष्कर है। अपने मनको एकदम शून्य विचार रहित नहीं रख सकते। इसलिये प्रथम मनके दोषोंका निराकरण करनेमें अथवा पुन्य पुरुषोंके वा सती स्त्रियोंके गुण चिंतनमें रोको, जिससे अशुभ व निरुपयोगी विचार प्रवेश न करने पावें।

(४) जो कुछ काम करनेका मौका (समय) आ पड़े वह काम चाहे जैसा हो परन्तु उसे करना ही चाहिये, वह अधिक या कम उपयोगी है उसका विचार करना उचित नहीं।

(९) कोई भी मनुष्य अपना शत्रु नही है। और न मित्र ही है, परन्तु सर्व मनुष्य अपने शिक्षक हैं। किसी भी कार्यमें फल प्राप्तिकी इच्छा नहीं करना चाहिये, और जिनेन्द्रदेवकी आज्ञा पालन करते हुए अपना जीवन क्रमपूर्वक विताना चाहिये। —मगनबाई।

अंक ७ कार्तिक सुदी ३ वीर सं० २४४८ में मुख्य पृष्ठपर नवीन वीर सम्वतके उपलक्षमें गुजरातीमें अच्छी कविता मगनबाईजीने प्रगट की है जो नीचे प्रमाण है—

नूतन वर्ष।

नूतन नूतन वर्षे, धर्मना बीज वावो।
नूतन नूतन वर्षे, पूर्ण सम्पत्ति पामो॥
नूतन नूतन वर्षे, देशमा कीर्ति वाढो।
नूतन नूतन वर्षे, शांति ने सुख भोगो॥ १॥
नूतन नूतन वर्षे, शक्ति सौन्दर्य होजो।
नूतन नूतन वर्षे, ज्ञान चारित्र साधो॥
नूतन नूतन वर्षे, सत्य ने शील शोभो।
नूतन नूतन वर्षे, दिलमा दाज धरजो॥ २॥

विनीत-**मगन**।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

ता० ९ नवम्बर १९२२ को बम्बई श्राविकाश्रमका १० वां वार्षिक अधिवेशन सौ० वेलाबाई द्वारकादास गोरधनदास जे० पी० के प्रमुखत्वमें हुआ। मगनबाईजी के उद्योगसे बड़ी सफलता रही। कुछ फंड भी हुआ।

मगनबाई जयन्ति।

गुजराती मगसिर वदी १० व मारवाड़ी पौष वदी १० वीर सं० २४४९ श्रीमती मगनबाईकी वर्षगांठका दिन था। श्रीमती मगनबाईजीने ४२

वर्ष पूर्ण करके ४३ वेंमें पग रक्खा था। दिवसमें श्राविकाओंने जिनेन्द्र पूजा की। मगनबाईजीकी तरफसे विशेष जीमन किया गया। रात्रिको ब्र० सीतलप्रसादजीको सभापतित्वमें जलसा हुआ। उस समय आश्रमकी कई बाईयोंने भाषण दिया। एक बाईने कहा—"श्रीमती मगनबाईजीका हमपर अकथनीय उपकार है। उन्होंने हमको विद्यादान देकर पशुसे मनुष्य बनाया है। वे चिरकालतक जीवित रहें और हम उनकी सैकड़ों जयंति मनावें। मगनबाईजीका श्राविकाओंने पुष्पहारसे सन्मान किया। श्रीमती मगनबाईजीने प्रमुखका उपकार मानते हुए स्त्री समाजकी उन्नतिमें यथाशक्ति उद्योग करते रहनेका वचन दिया।

मनोहर कविता। जैनमहिलादर्श अंक १० माघ सुदी ३ वीर सं० २४४९ के पृष्ठ १२० पर एक गजल भारतके उत्थानपर प्रकाशित हुई है। यह वहां इसलिये दी जाती है कि इससे पाठकोंको पता चलेगा कि बाईजीके विचार कितने उच्च थे व उनमें देशप्रेम भी कितना अपूर्व था। संभव है इसका सम्पादन बाईजीने ही किया हो।

गज़ल।

बनें हम हिन्दके योगी, धरेंगे ध्यान भारतका।
उठाकर धर्मका झण्डा, करेंगे गान भारतका॥ १॥
गलेमें शीलकी माला, पहनकर ज्ञानकी कफनी।
पकड़कर त्यागका डण्डा, रखेंगे मान भारतका॥ २॥
जलाकर कष्टकी होली, उठाकर इष्टकी झोली।
जमाकर संतकी टोली, करे उत्थान भारतका॥ ३॥

तजे सब लोककी लज्जा, तजे सुखभोगकी इच्छा।
हम अपना मान अरु मज्जा, करें कुरबान भारतपर ॥ ४ ॥

न है धन मानकी इच्छा, न है संसारकी इच्छा।
न है सुख भोग आकांक्षा, चहे सन्मान भारतका ॥ ५ ॥

स्वरोंमें तान भारतकी, है सुखमें गान भारतका।
नसोंमें रक्त भारतका, उदरमें अन्न भारतका ॥ ६ ॥

हमारे स्वर्गका कारण, यही उद्यान भारतका।
यही जीवातमा सबका, यही है आतमा सबका ॥ ७ ॥

—मगनबाई।

ललितपुरमें ११ वीं परिषद्।

माघ सुदीसे ललितपुरमें बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव था उसी समय महिला परिषद्को निमंत्रित किया गया था। माघ सुदी २–३–४ को तीन बैठकें हुई। सौ० सुन्दरबाई ध० प० सेठ पन्नालालजी अमरावतीने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। श्राविकाश्रम बंबई व जैन बालाविश्रामकी बहिनें श्रीमती कंकुबाई व पं० चंदाबाई आदि उपस्थित थीं। शरीर अस्वस्थके कारण मगनबाईजी नहीं आसकी थी। ८ प्रस्ताव पास हुए उसमें विधवाओंके सादा जीवन बिताने व शिक्षित होनेपर बहुत जोर दिया गया था व शुद्ध स्वदेशी वस्त्र पहननेकी प्रेरणा की गई थी। करीब २००) के फण्ड हुआ।

दिहली व सूरतमें निरीक्षण।

दिहली शहरके शतघरा मुहल्लेमें एक श्राविकाशाला दो वर्षसे चल रही थी व अब भी चल रही है। ता० ५–२–१९१३ को मगनबाईजीने पधारकर द्रव्य संग्रह व सिद्धांत प्रवेशिका आदिमें परीक्षा

लेकर सन्तोष प्रगट किया। मेरठकी संनोदेवी पढ़ाती हैं। हिसाब ठीक कराया व पठनक्रम बना दिया। ता० १४ फर्वरीको सूरतमें रतलामवासी कृष्णाबाईके उद्योग, सेवा व उन हीके शिक्षिका रूप काम करनेसे एक श्राविकाशाला खुली थी, उसका निरीक्षण किया। उसका भी बाईजीने पठनक्रम बना दिया।

मुनि दर्शन।

श्रीमती मगनबाईजी वीर सं० २४४९ को दशलाक्षणी पर्वके १० दिन शांति व धर्मामृत लाभार्थ विताने के लिये दक्षिणके कोन्नूर स्थानमें पधारीं जहां श्री १०८ शान्तिसागरजी मुनि महाराज विद्यमान थे। यहांपर श्रीमती कंकुबाई व शेठ जीवराज गौतमचंद दोशी भी शोलापुरसे पधारे थे। यहां ब्र० अण्णाप्पा लेंगड़े बेलगाम व कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमके अधिष्ठाता ब्र० देवचंदजी मौजूद थे। दिनरात यहां धर्मचर्चा रहती थी। इस क्षेत्रमें पर्वत पर ७०० गुफाएं हैं जहां पहले जैन मुनिगण ध्यान करते थे। दो दिन मगनबाईजीने मुनि महाराजको आहारदान देकर अपना जन्म कृतार्थ माना।

जन्म दिवसपर १००१) का दान।

पौष वदी १० वीर सं० २४५० को मगनबाईजीका जन्म दिवस बंबई श्राविकाश्रममें मनाया गया। उस समय पंडिता चन्दाबाई अधिष्ठातृ जैन बाला-विश्राम आरा थे जो सेद्वाल आदि दक्षिणकी यात्रा करने गई थी, कई श्राविकाओंके साथ उपस्थित थीं। पं० चन्दाबाई व अन्य श्राविकाओंके भाषण हुए। मगनबाईजीने अपनी लघुता बताते हुए पंडिता चन्दाबाईजीके कार्यकी बहुत

प्रशंसा की व बालाविश्रामका परिचय कराया व उसके कार्यसे संतोष प्रदर्शित किया तथा स्वयं विश्रामके ध्रौव्यफंडमें १००१) प्रदान किये। अन्य श्राविकाओंने भी २००) दिये। बाईजीका विद्याप्रेम उनके तन, मन, धनसे नित्य प्रगट रहता था। पंडिता चंदाबाईजीने ४०)का इनाम बांटा, व २५) पुस्तकें बालाविश्राममें देना मगनबाईजीने कबूल किया।

हजारीबागमें हाजरी।

हजारीबागमें शिखरजीका मुकद्दमा चलरहा था। पं० अजितप्रसादजी वकील कोशिश कर रहे थे। उन्होंने श्रीमती मगनबाईजीकी गवाही दिलाना उचित समझा। बाईजी धर्म रक्षार्थ कष्ट सहनेमें कुछ भी संकोच नहीं करती थीं। आप ता० १२ जनवरी १९२४ को बंबईसे चलीं, साथमें जड़ावबाई ध० प० चुन्नीलाल झवेरचंद थी। ता० १५ को हजारीबाग पहुंची। ता० १६ जनवरीको मंदिरमें स्त्रीसभा करके उपदेश दिया। ता० १७ को जैन पाठशालाकी परीक्षा ली, यहां बालक बालिकाए साथ पढ़ती हैं। गवाहीकी जरूरत न पड़नेसे बाईजी लौटीं व ता० १८ को मधुवन आकर ता० १९ को नीचे ही शिखरजीकी पूजा की। ता० २० को पर्वतकी वंदना की। ता० २१-२२ ठहरकर ता० २३ को गिरिडी आकर शास्त्रसभामें उपदेश दिया। ता० २५ को चम्पापुर आकर यात्रा की। ता० २६ को गुणावा, ता० २७को पावापुरी, ता० २८को कुंडलपुर, ता० २ फर्वरीको पंचपहाड़ीकी यात्रा की, ता० ५ फर्वरी प्रयाग आईं। यहांके बोर्डिंगको देखा व कुछ पब्लिक संस्थाओंका निरीक्षण किया।

उभय धर्मपुत्रियों (प्रभावतीबाई और श्रीमतीबाई गरगट्टे)के बीचमे
स्व० महिलारत्न मगनबाईजी।

प्रशंसा की व बालाविश्रामका परिचय कराया व उसके कार्यसे संतोष प्रदर्शित किया तथा स्वयं विश्रामके ध्रौव्यफंडमें १००१) प्रदान किये। अन्य श्राविकाओंने भी २००) दिये। बाईजीका विद्याप्रेम उनके तन, मन, धनसे नित्य प्रगट रहता था। पंडिता चंदाबाईजीने ४०)का इनाम बांटा, व २९) पुस्तकें बालाविश्राममें देना मगनबाईजीने कबूल किया।

हजारीबागमें हाजरी।

हजारीबागमें शिखरजीका मुकद्दमा चलरहा था। पं० अजितप्रसादजी वकील कोशिश कर रहे थे। उन्होंने श्रीमती मगनबाईजीकी गवाही दिलाना उचित समझा। बाईजी धर्म रक्षार्थ कष्ट सहनेमें कुछ भी संकोच नहीं करती थीं। आप ता० १२ जनवरी १९२४ को बंबईसे चलीं, साथमें जड़ावबाई ध० प० चुन्नीलाल झवेरचंद थी। ता० १५ को हजारीबाग पहुंची। ता० १६ जनवरीको मंदिरमें स्त्रीसभा करके उपदेश दिया। ता० १७ को जैन पाठशालाकी परीक्षा ली, यहां बालक बालिकाए साथ पढ़ती हैं। गवाहीकी जरूरत न पड़नेसे बाईजी लौटीं व ता० १८ को मधुवन आकर ता० १९ को नीचे ही शिखरजीकी पूजा की। ता० २० को पर्वतकी वंदना की। ता० २१-२२ ठहरकर ता० २३ को गिरिडी आकर शास्त्रसभामें उपदेश दिया। ता० २५ को चम्पापुर आकर यात्रा की। ता० २६ को गुणावा, ता० २७को पावापुरी, ता० २८को कुंडलपुर, ता० २ फर्वरीको पंचपहाड़ीकी यात्रा की, ता० ५ फर्वरी प्रयाग आई। यहांके बोर्डिंगको देखा व कुछ पब्लिक संस्थाओंका निरीक्षण किया।

प्रयागमें माघ सुदी १० वीर सं० २४५०के दिन सुमेरचंद दि० जैन बोर्डिंगमें वेदीप्रतिष्ठा थी, रथयात्रा थी व संयुक्त प्रांतीय दि० जैन सभाका वार्षिक जल्सा था। ता० १९ फर्वरी १९२४ को श्रीमती झमोलादेवी संस्थापिका बोर्डिंगके सभापतित्वमें एक महती स्त्री सभा हुई। आत्मोन्नति पर मगनबाईजीने बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया तथा महिला परिषद्के लिये अपील को तो ६८२॥|-) का चंदा हो गया। श्रीमती झमोलादेवीने पहले २५०००) देनेके सिवाय इस समय भी चैत्यालयादिके लिये १४०००) दान किये। यह सब मगनबाईजीके उपदेशका फल था। यदि बाईजीका उपदेश न मिलता तो वह सब ३९०००) का द्रव्य अनावश्यक जैन मंदिरके निर्मापणमें चला जाता। इस बोर्डिंगके द्वारा परदेशी जैन छात्रोंमें धर्मका पक्ष दृढ़ होरहा है तथा वह अच्छा काम बजा रहा है।

प्रयागमें उपदेश।

ता० २७ मार्च १९२४ को श्रीमती मगनबाई व ललिताबाईने जुहीमें महात्मा गांधीजीसे मुलाकात ली। सूत कातनेके संबंधमें वार्तालाप हुई। ललिताबाईजी अपने हाथसे ही सूत कातकर व उसीका कपड़ा बनवाकर पहनती है, गांधीजी जानकर बहुत प्रसन्न हुए।

गांधीजीसे मुलाकात।

मुजफ्फरनगरमें वेदी प्रतिष्ठा चैत्र सुदी १३ से वैशाख वदी २ ता० १७ से २१ अप्रैल १९२४ तक थी। महिला परिषदको निमंत्रण आया था। मगनबाईजीने १३ वां वार्षिक जल्सा वहीं करना निश्चय किया। ता० १७ अप्रैलको बाईजी केसरबाईजी बड़वाहाके

मुजफ्फरनगरमें १३वीं परिषद्।

साथ पहुंच गई थीं। बम्बईसे आते वक्त बड़वाहामें जाकर ता० ६ अप्रैलको शास्त्रसभामें शामिल हुई। फिर ता० ७ अप्रैलको इन्दौर आकर ता० १४ तक ठहरकर यहींकी शालाओंका निरीक्षण किया। ता० १८ व १९ को परिषदके अधिवेशन दानशीला केसरबाईजी बड़वाहाके प्रमुखत्वमें हुए। मगनबाईजीने नियमानुसार रिपोर्ट सुनाई। परिषदमें ७ प्रस्ताव पास हुए वे इसप्रकार थे—

(१) जैन कन्याशालाओंके निरीक्षणके लिये एक सुयोग्य इन्स्पेक्टर जैन बाई या वृद्ध जैन बधु नियत किये जावें, (२) महीन व विदेशी वस्त्र न पहने जावें। किंतु शुद्ध खद्दरका व्यवहार किया जावे, (३) विधवा बहिनें संतान रहित होनेपर अपनी सम्पत्ति शिक्षा प्रचारमें लगावें, यदि पुत्र गोद लेना हो तो आधा रुपया शिक्षार्थ अवश्य व्यय करें। (४) एक उपदेशिका भ्रमण करानेको १२००) वार्षिक पास हुआ। (५) बच्चोंकी अधिक मृत्यु रोकनेके लिये कन्याशालाओं व श्राविकाओंमें वैद्यककी पुस्तकें पठनक्रममें रक्खी जावें। (६) श्रीमती कंचनबाईजी धर्मपत्नी दानवीर रा०ब०सेठ हुकमचन्दजी इन्दौरको उनकी स्त्रीसमाजकी सेवार्थ दानशीलाका पद व श्री० ललिताबाई सुपुत्री मूलचन्द तलकचंद अंकलेश्वरको जीवन भर निःस्वार्थ भावसे श्राविकाश्रम बंबईकी सेवार्थ अर्पण करनेके उपलक्ष्यमें "जैन महिलारत्न" का पद प्रदान किया जाय। (७) श्राविकाओंको तत्वार्थसूत्रकी परीक्षा पास करनेके बाद अर्थ प्रकाशिका, गोम्मटसार गुणस्थान व कर्मप्रकृति अध्याय, पञ्चास्तिकाय व परीक्षा मुख पढ़ाया जावे। परिषदमें ८७७) का फण्ड हुआ। यहां एक दानशीला बहिनने

एक जैन कन्याशाला चला रक्खी है, उसकी परीक्षा ता० २० अप्रैलको ली। महिला परिषदकी स्थाई सदस्या १०१) देनेसे हो जाती हैं तदनुसार उत्साही मगनबाईजीके उद्योगसे इस समय तक नीचे लिखी बाइयां सभासद बन चुकी थीं।

१—श्रीमती अमोलादेवी प्रयाग, २—पं० चंदाबाई आरा, ३—ध० प० लाला देवीदास लखनऊ, ४—सुन्दरबाई ध० प० सेठ गुलाबचंदजी धुलिया, ५-सौ०सखूबाई ध० प० सेठ माणिकचंदजी आलंद, ६—सौ० नन्दकोरबाई ध० प० सेठ चुन्नीलालजी बंबई, ७—ध०प० बरातीलालजी लखनऊ, ८—ध०प० ला० मुन्नालालजी लखनऊ,९—श्रीमती नेमसुन्दरजी आरा, १०—सौ०सुन्दरबाई ध० प० सेठ पन्नालालजी सिघई अमरावती, ११—श्रीमती सुधर्माजी जालंधर, १२—पुत्री लाला होशियारसिंह मुजफ्फरनगर।

महावीरजीकी यात्रा।

मगनबाईजीको यहांसे गोहाना जिला रोहतक एक श्राविकाश्रमकी स्थापना करनेको वैशाख सुदी ३ ता० ६ मई १९२४ को जाना था, बीचमें कुछ दिन बचते थे। समयका सदुपयोग करनेके लिये बाईजी ता० २१ अप्रैलको दिहली आई। लाला हुकमचंद जगाधरमलजीके वहां उतरीं। जिनकी बहिन ज्ञानवतीबाई विधवा हैं इसीने ही अपने द्रव्यसे गोहानामें एक आश्रम स्थापन करके सेवा करनेका विचार किया था। यह सब मगनबाईजीका ही अनुकरण है। दिहलीमें ५ दिन ठहरकर ता० २७ को हिंडोन स्टेशन द्वारा श्री महावीरजी क्षेत्रपर जाकर भव्य मूर्तिके दर्शन करके आनंद प्राप्त किया। ता० २९ को दिहली आकर सतघराकी श्राविकाशालाका निरीक्षण

किया। दिहली ३-४ दिन विश्राम किया व श्राविकाओंको धर्मोपदेश दिया।

मिती वैशाख वदी १२ ता० ३० अप्रेल १९२४ को श्रीमती कंकुबाई, सुपुत्री सेठ हीराचन्द नेमचन्द शोलापुरने श्री मुक्तागिरि क्षेत्रपर ब्र० देवचंदजी व ब्र० देवकीनंदजीके समक्ष सप्तम प्रतिमाके नियम धारण किये व उदासीन श्वेत वस्त्र पहरने लगी। केशोंकी शोभा हटा दी। मगनबाईजीको यह सुनकर बड़ा ही आनन्द हुआ। वह स्वयं ऐसा होना चाहतीं थीं परन्तु शरीर निर्बल-अस्वस्थ रहता था इससे लाचार थीं।

कंकुबाई ब्रह्मचारिणी।

ता० ३ मईको रोहतक आई। ता० ४ मईको शास्त्रसभा की। कुछ भाइयोंने स्वाध्यायादिके नियम लिये। ता० ५ मईको शहरके मंदिरमें सभा की, जैन महिलादर्शके ग्राहक बनाए व मिथ्यात्वका त्याग कराया। ता० ६ मईको गोहाना आई। यहां दूसरे दिन-वैशाख सुदी ३ अक्षय तृतियाके दिन सवेरे आश्रमके नियमित स्थानपर गाजे बाजेके साथ कुंभ कलश लेकर सर्व मंडली पधारी। पूजन हुई। फिर श्री०ब्र०सीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें श्रीमती मगनबाईजीने व पं० चन्दाबाईजीने स्त्रीशिक्षापर प्रभावशाली भाषण दिये व दोनों बाईयोंने ५१), ५१) आश्रममें दान किये। रात्रिको फिर स्त्री सभा हुई, कई बहिनोंने मिथ्यात्व त्याग व स्वदेशी वस्त्र पहनने व स्वाध्याय करनेका नियम लिया। १२५) बम्बई श्राविकाश्रमको व १२५) जैन बालाविश्राम आराको

रोहतक व गोहाना भ्रमण।

फडमें प्राप्त हुए। स्थानीय आश्रमको भी बहनोंने भेट की। यहांसे दिहली आकर सोनागिरजी व ललितपुर ठहरते हुए मुम्बई आए।

मुंबई कुछ ही दिन ठहरी थीं कि श्री० ब्र० सीतलप्रसाद-जीके उपदेशसे धर्मलाभके हेतु मगनबाईजी व ललिताबाईजी अन्य श्राविकाओंके साथ सजोत आए। यह गुजरातके भरुच जिलेमें अंकलेश्वरनगरसे ६ मील एक ग्राम है। प्राचीन स्थान है। यहां मंदिरके भोंयरेमें बड़ी ही मनोज्ञ वीतरागता-प्रदर्शक पद्मासन पुरुषाकार श्री शीतलनाथ स्वामीकी बहुत प्राचीन प्रतिबिम्ब विराजमान है। यह श्वेत वर्ण २ हाथ ऊँचा संवतसे पूर्वका विदित होता है। भारतमें एक अपूर्व शिल्प है। दर्शन करते हुए मन तृप्त नहीं होता है। एक छोटीसी धर्मशाला है। ब्रह्मचारी सीतलप्रसादजी भी आगए थे। सेठ छोटालाल घेलाभाई गांधी अंकलेश्वर भी पूजामें हारमोनियम बजाकर साथ देते थे। यहां वैशाख सुदी १० से जेठ वदी १० ता० १६ मईसे २८ मई १९२४ तक ठहरे।

सजोतमें पूजा विधान।

मनरंगलाल कृत चौबीसी पूजा विधान प्रारम्भ किया गया। नित्य नियम व सिद्ध पूजाके साथ पाठमेंसे मात्र तीन पूजा प्रतिदिन बड़े भावसे होतीं थीं, जिसमें दो घण्टेके अनुमान सवेरे आनंदमें वीतते थे। तीसरे पहर व रात्रिको शास्त्र स्वाध्याय व भजन भाव होते थे। अन्तके दिन सूरत व अंकलेश्वरके २०-२५ भाई बहिन पधारे। सबका भोजन सत्कार बाईजीकी ओरसे हुआ।

उस समय संगमरमरके पाषाण बिठानेके लिये ३००) का चंदा हुआ जिसमें २९) मगनबाईजीने भी प्रदान किये। तब ही अंक-लेश्वरसे नाथूभाई माणिकचंदने सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमाके नियम ब्र० सीतलप्रसादजीके सामने श्री शीतलनाथ भगवानके समक्ष नमस्कार करके धारण किये।

मगनबाईजी जैन महिलादर्श वर्ष ३ ज्येष्ठ सुदी ३ अंक २ के पृ० ७१ पर इस यात्राके सम्बन्धमें नीचे लिखे शब्दोंमें लिखती हैं—"मनुष्य जीवनमें एक सुसंगतिका मिलना अतीव कठिन है। इसको मिला-कर हरएकको अपना जीवन सफल करना चाहिये। रातदिन धर्म-ध्यानके सिवाय और संकल्प ही नहीं आता। इन दोनोंमें जैन सिद्धांतसार तथा योगसार दो मूल ग्रन्थ श्री ललिताबाई तथा मैंने श्री० ब्रह्मचारीजीसे पढ़कर पूर्ण किये। रात्रिको शास्त्र सभा और भजन तथा प्रश्नोत्तर होता था जिससे बड़ा आनंद रहता था।

मगनबाईका हृदय।

बंबई लौटे ही थे कि शोलापुर जिलेके आलंद स्थानसे निमंत्रण आनेसे ता० २ जूनको चलकर शोलापुर होते हुए ता० ४ को आलंद आए। यहां सेठ माणिकचद मोतीचंदने ४००००) लगाकर एक भव्य मकान दि० जैन पाठशाला, दवाखाना व लायब्रेरीके लिये निर्माण कराया था, इसका मुहूर्त सेठ रावजी सखाराम व भूतपूर्व तहसी-लदारके हाथसे ता० ७ जूनको हुआ। इसी दिन केशरबाई जैन कन्याशाला खोलनेका उत्सव भी श्रीमती मगनबाईके द्वारा हुआ।

आलंदमे जागृति।

बाईजीने संस्थाको चिरस्थाई करनेके लिये ऐसा प्रभावशाली भाषण दिया कि तुर्त १०४३६) का चंदा होगया जिनमें बड़ी २ रकमें इस भांति लिखी ग ं—

५००१)	केशरबाई भ० तलकचद पदमसी	आलंद
२००१)	उमाबाई भ० सखाराम नेमचंद	शोलापुर
१००१)	सौ० सखूबाई व रतनबाई	आलंद
१००१)	राजूबाई भ० रावजी फतेचंद	बलसंग
५०१)	फूलूबाई भ० हीराचंद	कुर्डुवाड़ी
५०१)	जमनाबाई भ० माणिकचंद	निंबगांव केतकी

पाठकोंको विदित होगा कि दक्षिणवाले विद्यादानके लिये कैसा दिल खोलकर दान करते हैं व मगनबाईजीका कैसा भारी प्रभाव पड़ता है।

फूलकौर कन्याशाला-सूरत।

सूरतमें फूलकौर कन्याशालाका वार्षिक जल्सा जेठ सुदी १३ संवत १९८० ता० १५ जून १९२४ को था। मगनबाईजीने जाकर इसकी व्यवस्था की। साथमें श्राविकाशालाको भी शामिल करके अनुमान १००) के इनाम बांटा व शिक्षाकी उत्तेजनापर भाषण दिया।

मगनबाईके नियम।

मगनबाई नियमसे संयमका अभ्यास किया करती थीं। सं० १९८० में चौमासेके जो नियम धारण किये वह डायरीमें लिखे हैं उनकी नकल हम यहां देते हैं—

१—सांझको दूसरे समय अनाज एक मासमें मात्र चार दफे लेना, २—साबुत अन्न न खाना, ३—रोज समयसार कलशके दो

चार श्लोक विचारना, ४—डाक्टरकी दवा खाने व लगानेका त्याग, देशी तथा शुद्ध जो होय तो लगाना, ५—भोजनकी थालीमें कीड़ी कुन्थु आजाय तो भोजन छोड़ देना, ६—रोज़ सात वनस्पति खानी, ७—चौदसका उपवास करना—बीमारीमें छूट, ८—द्रव्य संग्रह आदिमें एकका पाठ करना।

मगनबाईजीको यह बराबर ध्यान रहता था कि जो प्रस्ताव महिला परिषद्‌में पास हों उनपर अमल कराया जाय। उपदेशिका भ्रमण करानेके प्रस्तावको शीघ्र ही कार्य रूपमें परिणत करके पं० केशरबाईका भ्रमण ता० १८ जुलाई १९२४ से प्रारम्भ होगया।

उपदेशिका भ्रमण।

मगनबाईजीका यह नियम था कि श्राविकाश्रम बम्बईका वार्षिक अधिवेशन अवश्य मनाया जाय। इससे विद्यार्थिनी बाइयोंको धर्मकी उत्तेजना होजाती है व पबलिकको संस्थाका हाल मालूम होता है, हिसाबकी सफाई रहती है व संस्थाको मदद भी मिलती है। ता० ४ नवम्बर १९२४ को इसका बारहवां वार्षिकोत्सव सौ० सुवटादेवी ध० प० सेठ हरनारायण हरनंदनराय रुइयाके सभापतित्वमें हुआ। ५०१) प्रमुखाने आश्रममें भेट किये।

श्राविकाश्रमका जलसा।

इन्दौरमें कंचनबाई श्राविकाश्रमका दसवां वार्षिकोत्सव था, मगनबाईजीको प्रमुख किया गया था। मगसिर वदी १२ वीर सं० २४४९ के दिन बाईजीको इन्दौरकी समस्त दि० जैन स्त्री समाजकी ओरसे एक मानपत्र अर्पण किया गया था जिसकी नकल नीचे दी हुई है—

इन्दौरमें मानपत्र।
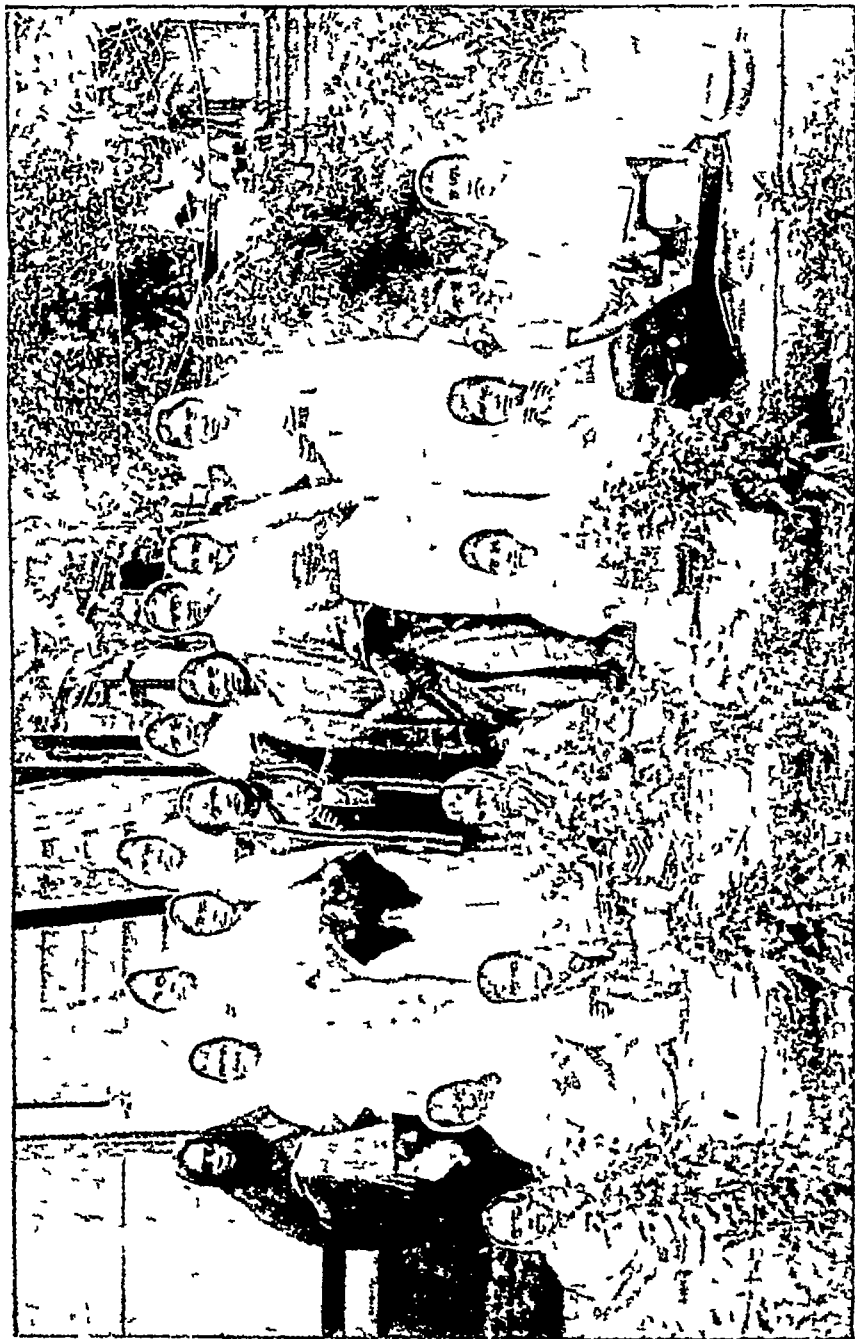
रतनबहिन रुक्ष्मणीबाई श्राविकाश्रम—बम्बई (औद्योगिक शिक्षाका दृश्य)।

जैनमहिलारत्न विदुषी श्रीमती मगनब्हेन बम्बई निवासी, (प्रमुखा श्री कञ्चनबाई श्राविकाश्रम दशम वार्षिकोत्सव) की सेवामें इन्दौरकी समस्त दि० जैन स्त्री समाजकी ओरसे अभिनन्दनपत्र समर्पण।

श्रीमती प्रिय बहिन! आपने अपने अनेक आवश्यक कार्य होते हुवे भी जो हमारे निवेदनको स्वीकार कर यहां पधारनेका अनुग्रह किया और आश्रमके वार्षिकोत्सवका प्रमुखपद सुशोभित कर हमको आल्हादित किया है इसके लिये हम आपकी अत्यंत आभारी हैं।

जैन महिलारत्न, इंदौरका यह आश्रम आप हीके उपदेशका फल है, इसका आरम्भ आप हीके द्वारा हुआ था, इस आश्रम पर आपकी कृपा सदैव रहती है, और इसकी उन्नतिके लिये समय२पर पधारकर आप सदैव शुभ सम्मति देती रहती हैं, यह परिणति आपके हार्दिक विद्या प्रेम और जैन स्त्रीसमाजकी उन्नतिके सच्चे भावकी पूर्ण द्योतक है।

माननीया बहिन, आज जैन संसारमें जो स्त्री शिक्षाका प्रचार इतस्ततः देखा जारहा है और स्त्री समाजमें भी जागृतिके चिन्ह दीख रहे हैं इसका बहु श्रेय आपको ही है क्योंकि पिछड़ी हुई स्त्री शिक्षाकी उन्नति करनेका बीडा आप हीने उठाया है।

उन्नति इच्छुक बहिन, हमें अभी इतनेसे संतोष न कर लेना होगा बल्कि अभी जैन स्त्री समाजमें विद्याभिरुचि और दृढ़-निजधर्म श्रद्धानीपन होनेकी बड़ी आवश्यकता है, इसकी पूर्ण पूर्ति होनेसे ही जैनसमाजका कल्याण होसकेगा।

विदुषी बहिन, आपके द्वारा मुम्बईका श्राविकाश्रम, और जैन महिला परिषद्का संचालन होकर जो जैन स्त्री समाजका उपकार हो रहा है, इसके लिये समाज कृतज्ञ रहेगा। हमारी शुभ भावना है कि इस जैन समाजमें पूजनीया सती सीताजी सरीखी अखंड शीलवती, चेलना सरीखी दृढ़ धर्म श्रद्धानी, अञना, मैना-सुन्दरी सरीखी पतिभक्तिनी अनेकों, जिन धर्म श्रद्धानी देवियां दृष्टिगोचर होवें जिससे इस भारतका मस्तक पूर्ववत ऊँचा होसके।

प्रिय उपकारिणी बहिन, आपके द्वारा होनेवाले उपकारोंका हम बहुत आभार मानती हुईं सेवामें अभिनन्दन पत्र सादर समर्पण करती हैं और श्री जिनेन्द्रदेवसे यह मंगल कामना करती हैं कि आपको चिरायु प्राप्त होकर आपके द्वारा स्त्री समाजका सतत उपकार होता रहे और आपकी धार्मिक भावना दृढ़ होवे।

जंवरीबाग इन्दौर।
मगसिर कृष्ण १२
वीर सं० २४५१.

विनीत:—
इंदौरकी समस्त श्री. दि. जैन स्त्रीसमाज.
द० (श्रीमती सौ०) कंचनबाई।

परिषद्का १४ वां अधिवेशन।

राजगृहीमें माघ सुदी ७ से १२ तक लाला न्यादरमलजी दिहली द्वारा निर्मापित विशाल जिन मंदिरकी प्रतिष्ठा थी। तब महिला परिषद्का १४ वां वार्षिक जलसा श्रीमती मनोरमादेवी ध० प० रा० ब० सखीचन्द जैन कैसरेहिंदके सभापतित्वमें ता० ४ फर्वरी ६ तक हुआ। शरीरकी निर्बलता आदि कारणोंसे मगनबाई स्वयं न जासकीं थी परन्तु पं० चन्दाबाईजी द्वारा अधिवेशनका सब प्रबंध कराया था। ८ प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव मगनबाईजीके स्वा-

स्थ्य कामकी शुभ कामनापर था। परिषद्को ५१६।) की मदद व जैन बालाविश्रामको २०२) की सहायता हुई।

श्रवणबेलगोला मैसूरमें श्री बाहुबलि महाराज (गोमट्टस्वामी)

श्रवणबेलगोलाकी यात्रा।

की ५६ फुट ऊँची अद्भुत मूर्तिका महामस्तकाभिषेक फाल्गुन मासमें था। महिलारत्न मगनबाईजी, ललिताबाईजी आदि श्राविकाकाओंके साथ पधारीं व स्त्रियोंमें जागृति उत्पन्न की। ता० १२ मार्च १९२५ को ललिताबाईजीने शास्त्र सभा की। ता० १३ को उपदेश सभा की, जिसमें अनेक उपदेश कराए। ता० १४ को बड़ी स्त्री सभा हुई तब बंबई श्राविकाश्रमकी ६ छात्राओंने बाजेके साथ भजन कहें व राजाके गुण गाए। ढाईहजारकी जनताने सुनकर पूर्ण आनंद माना। ता० १५ को बाहुबलिस्वामीका महाअभिषेक हुआ। रात्रिको शास्त्र सभा की। ता० १६ को महती स्त्री सभा हुई, ललिताबाईजीको जैन महिलारत्नकी उपाधिका अभिनन्दन पत्र सभापति सौ० सुन्दरबाई ध०प० गुलाबचन्द सेठ द्वारा अर्पण किया गया। जैन महिलादर्शके घाटेकी पूर्तिके लिये बाईजीने ६००) के २५)-२५) के भाग नियत किये व उद्यम करके ११ श्राविकाओंसे ११ भाग स्वीकृत कराये। यहां सानन्द धर्मलाभ करके बाईजी सेठ ताराचंद नवलचंद, सेठ चुन्नीलाल हेमचन्द आदि ३० स्त्री पुरुषोंके साथ मूलबिद्रीकी यात्राको निकले।

ता० ११ मार्चको आकर ता० १५ अप्रैलतक मैसूर ठहरे।

मूलबिद्रीकी यात्रा।

बोर्डिंगका निरीक्षण किया। मैसूरसे १६ मील गोमटगिरि पर्वतपर ७ हाथ ऊँची

कृष्ण वर्णकी खड्गासन मुर्ति है उसके दर्शन किये। राज्यमह-
कादिको देखा। ता० २६ को बेंगलोर आकर यहांके जैन बोर्डिं-
गका निरीक्षण किया। यहांसे चार स्टेशन बाद हरेहल्ली स्टेशनसे
मदलगिरिका छोटा पर्वत है, यहां आकर दर्शन किये। सोनेकी
खान देखी। ता० १ अप्रैलको शिमोगा स्टेशन आकर मूड़बिद्रीके
लिये मोटर की। एक आदमीका मोटरका किराया जाने आनेका
६=) पड़ता है। शिमोगासे ३६ मील हूमच पद्मावती क्षेत्र है।
यहां भट्टारक रहते हैं। १००) श्राविकाश्रमके लिये उनसे प्राप्त
किये। यहांसे चलकर ता० ४ को वरांग आई, व चतुर्मुख मंदिरके
दर्शन किये। १८ मंदिरोंकी यात्रा की। जैन बोर्डिंगको देखा।
ता० ६ अप्रेलको मूडबिद्री आए। यहां भी १८ मंदिरोंके रत्नबिं-
बोंके व सिद्धांत-शास्त्रोंके दर्शन करके महान् आनंद प्राप्त किया।
की पाठशाला देखी। पं० लोकनाथ शास्त्री अच्छे विद्वान हैं।
ता० १०-११ को वेणूर जाकर श्री बाहुबलि महाराजकी मूर्तिके
दर्शन किये। ता० १२को मंगलोर बंदर आकर जैन बोर्डिंग देखा।
ता० १५ अप्रैलको मदरास गए, यहांकी नई दि० जैन धर्मशालामें
ठहरे। वहीं जिन मंदिर भी है। ता० १८ अप्रेलको मल्लिनाथजी
सम्पादक जैनगजटके साथ पोन्नूर गांवमें आकर छोटी पहाड़ीपर
श्री कुन्दकुन्दाचार्यकी तपोभूमिके दर्शन किये। यहां चरणचिह्न
बहुत प्राचीन हैं। यहांसे चित्पुर गांव जाकर वहांके प्राचीन मंदि-
रोंके दर्शन किये। यहां श्री अकलंकस्वामी मुनि महाराजका बौद्धोंके
साथ वाद हुआ था। यहांकी लाइब्रेरी अच्छी है। यहांके जैनोंने
मानपत्र दिया। इनके साथ चतुरबाई कुमारी सेठ बालचन्द हीराचं-

दकी पुत्री थी जो इंग्रेजीसे विज्ञ थी इस कारण बात करनेमें सुभीता रहता था। इधरके जैनी हिंदी नहीं समझते हैं, कोई २ इंग्रेजी जानते हैं। कांचीवरम आकर जैन कांचीके मंदिरोंके दर्शन किये। व मदरास लौटे। वहां मल्लिनाथजीने मानपत्र दिया। यहांसे चलकर मुम्बई आए।

और दो श्राविकाश्रम।

श्री० मगनबाईजीका उदाहरण लेकर खुरईके श्रीमन्त सेठ मोहनलालजीने सोनाबाई श्राविकाश्रम खुरई जिला सागरमें खोला। व सोजित्रा (गुजरात)के नहानचन्द भगवानदास आदि उत्साही भाइयोंने सोजित्रामें एक श्राविकाश्रम जैनमहिलारत्न ललिताबाईजीके हस्तसे खुलवाया, उस समय २८८७) का चन्दा हुआ। वीर संवत २४५१ में ये दो कार्य विधवाओंके जीवन सुधारके हुए, इससे मगनबाईजीको बहुत सन्तोष हुआ।

गुणीकी कदर।

श्री० बैरिष्टर चम्पतरायजी साहब जब श्री सम्मेदशिखरकी पूजा केसकी अपीलके प्रयत्नके लिये विलायत जाते हुए मुम्बई पधारे, तब मगनबाईजीने ता० १५ सितम्बर १९२५को श्राविकाश्रममें बुलाकर बड़ा सन्मान किया और एक अभिनन्दनपत्र श्राविकाश्रमकी महिलाओंने अर्पण किया।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

श्राविकाश्रमका १३ वां वार्षिकोत्सव ता० १ नवम्बर १९२५ को बड़े आनंदसे श्रीमती शांतादेवीजी ध० प० राजा गोविंदलाल शिवलालकी अध्यक्षतामें मनाया गया। प्रमुखाने १०१) प्रदान किये। मगनबाईजीने अपने मनोहर भाषणसे सबका आभार माना।

पौष वदी १० वीर सं० २४५२ को मगनबाईजीने ४७वें वर्षमें पदार्पण किया। श्राविकाश्रमकी महिलाओंने भक्तिपूर्वक पूजन की व विशेष जीमन बाईजीकी तरफसे हुआ। रात्रिको सभामें ललिताबाई आदि श्राविकाओंने श्रीमतीकी दीर्घायु वांछते हुए गुणमाला वर्णन की। सभापतिका पद शास्त्री जीवराम जयशंकरजीने ग्रहण किया था।

मगनबाई जयंति।

पंजाब हिसारमें पंजाब प्रांतिक दि० जैन सभाका जलसा था व मंदिरजीपर कलशारोहण उत्सव था। महिलापरिषदको भी निमंत्रित किया गया था। १७-१८ जनवरी सन् १९२६ को दो अधिवेशन श्रीमती अन्नोदेवी ध०प० लाला मक्खनलालजी शाहदराके सभापतित्वमें हुआ। ९ प्रस्ताव पास हुए। ९ वां प्रस्ताव विधवा सहायक विभाग स्थापित करनेका मगनबाईजीने पेश किया उससमय आपने विधवाओंकी स्थिति सुधारनेका जोशदार भाषण किया। यहां कई शास्त्रसभाएं हुईं, दर्शन व स्वाध्याय, मिथ्यात्व त्याग आदिके अनेक नियम कराए। ता. १८ वसंतपंचमीके दिन जब कलशारोहण हुआ तब मगनबाईजीने स्त्रीशिक्षापर बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया व एक श्राविकाशालाकी आवश्यक्ता हिसारमें प्रगट की। आपके उपदेशसे तुर्त ६०००) का चंदा होगया। तथा उसी दिन इसका मुहूर्त भी बाईजीके द्वारा कराया गया। यहां १ बाई परिषदकी स्थाई सदस्या १०१) देकर हुई। ५ महिलाओंने २५)-२५) देकर दर्शके भाग ५ वर्षके लिये स्वीकार किये व ३०८) परिषदको फुटकल मदद हुई। यहांके भाई व बहिनोंने मगनबाईजीके आगमनपर बड़ा ही उत्साह दिखाया।

हिसारमें १५ वीं परिषद्।

यहां ता० २२ जनवरीको स्त्री पुरुषोंकी संयुक्त सभामें भाषण दिया। ११४) का फण्ड श्राविकाश्रमके लिये किया। ता० १३ जनवरीको रिवाड़ी आकर ता० २४ को दोपहरको स्त्री सभा व रात्रिको पुरुष सभा हुई। महिलादर्शके १२ ग्राहक बने। फिर देहली आकर ठहरीं व महिलाश्रम व श्राविकाशालाका निरीक्षण किया। यहांसे आरा पधारीं।

हांसी व रेवाड़ीमें उपदेश।

आरा (शाहाबाद) में जैन बालाविश्रामके स्थानमें नवीन मंदिर निर्मापण हुआ था जिस कारण बिम्बप्रतिष्ठा मिती फागुन सुदी ३ वीर सं० २४५२ से प्रारम्भ हुई थी। मुम्बईसे मगनबाईजी व कंकुबाईजी भी पधारीं थीं। दीक्षा कल्याणकके दिन श्री०ब्र० शीतलप्रसादजीके उपदेशसे व मगनबाईजीकी पूर्ण चेष्टासे जैन बालाविश्रामके लिये ३८५००) का ध्रुवफण्ड होगया। पंडिता चंदाबाईने १०००१) व बाबू निर्मलकुमारजीने ५००१) व प्रतिष्ठाकारक बाबू धरणेन्द्रदासने २५००) प्रदान किये, १००१) माता बा० निर्मलकुमारजी, १००१) ध० प० बा० चक्रेश्वरकुमारजी, ५०१) ध० प० बाबू निर्मलकुमारजी, २५००) पांच पुत्रियां धर्णेन्द्रकुमारजी आरा, ५०१) ध० प० बाबू नंदूलालजी, ५०१) ध० प० बा० मोतीलाल कलकत्ता, ५०१) वसंती बीबी आरा। संस्थाओंके लिये ३७००)का अलग चन्दा हुआ जिसमें ५००) श्राविकाश्रम बंबईको प्राप्त हुए। महिला परिषदका नैमित्तिक अधिवेशन सौ० नेमसुन्दर बीबी, ध० प० बाबू धरणेन्द्रकुमारके प्रमुखत्वमें

आरामें महिला परिषद्।

हुआ। ब्र० कंकुबाईजीको धर्मचन्द्रिकाका पद प्रदान किया गया। इस प्रस्तावपर मगनबाईजीने बड़ा ही धर्मभाव पूर्ण व वैराग्य प्रदर्शक भाषण दिया। शुद्ध स्वदेशी वस्त्र परिधान पर ब्र० कंकुबाईजीने कहा। इन दोनों बहिनोंके कारण प्रतिष्ठामें उपस्थित स्त्री समाजको बहुत लाभ हुआ। ता० १३ से १८ फर्वरी १९२६ तक बहुत आनन्द रहा।

मसूरीमें उपदेश।

स्वास्थ्य लाभके लिये श्रीमती मगनबाईजी पं० चंदाबाईके साथ मंसूरी पहाड़पर कुछ दिन ठहरीं थीं तब ता० २२ जून १९२६को जैन मंदिरमें उभय बहिनोंके उपदेश धार्मिक विषयोंपर हुए। महिलादर्शके कई ग्राहक बने।

श्राविकाश्रमका जलसा।

ता० २९ दिसम्बर १९२६ को श्राविकाश्रम बम्बईका १४ वां वार्षिकोत्सव सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासजीके सभापतित्वमें हुआ। मगनबाईजीने सभापतिके प्रस्तावका समर्थन किया। श्राविकाओंके गीत व भाषण हुए व इनाम बांटा गया।

१६ वीं महिला-परिषद।

इन्दौरमें रथोत्सव व सर सेठ हुकमचंदजीकी पारमार्थिक संस्थाओंका उत्सव ता० १६ जनवरीसे १८ जनवरी १९२७ तक था तब महिलापरिषदको भी निमंत्रित किया था। मगनबाईजी अस्वस्थताके कारण नहीं जासकी थी। ब्र० कंकुबाई, ललिताबाई व पं० चन्दाबाईजी पधारीं थीं। सभाध्यक्षा श्रीमती चन्दाबाई ध० प० सेठ छोगालाल इंदौर थीं। ९ प्रस्ताव उपयोगी पास हुए व ३ सभाएं हुईं। स्वागत सभाध्यक्षा सौ० कंचनबाई ध० प०

सर सेठ हुकमचन्दजी थीं, उन्होंने अपने भाषणमें मगनबाईजीके सम्बन्धमें नीचे लिखे शब्द कहे—"यद्यपि इस उत्सवमें अनेक धर्मनिष्ठा व विदुषी महिलाओंने पधारनेकी कृपा की है। तथापि जब जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबाईजीकी ओर दृष्टि जाती है तो हठात हृदयको खेद होने लगता है। उनकी प्रबल इच्छा होनेपर भी वे अपनी रुग्णावस्थाके कारण यहां नहीं पधार सकीं। उनके उपदेशपूर्ण एवं सुललित भाषणोंके श्रवण करनेका योग हमें नहीं मिल सका। श्री वीतराग प्रभूसे प्रार्थना है कि श्रीमती मगनबाईजी शीघ्र आरोग्य होजावें और उनके द्वारा धर्म तथा जैन समाजकी उत्तरोत्तर सेवा होती रहे। इस जल्सेमें महिला परिषदको २२८४।≈) की प्राप्ति हुई।

मगनबाई जयन्तिपर कविता।

वीर सं० २४५३ पौश वदी १०को मगनबाईजीकी वर्षगांठ थी। उस दिन प्रसिद्ध कविश्री व वक्ता शिवजी देवसिंहने एक कविता मगनबाईके सम्बंधमें सुनाई थी जो नीचे दीजाती है—

श्रीमती मगनव्हेन चिरंजीवो।

श्रीमति मगनव्हेन चिरंजीवो, करवा परोपकारी काम;
मनवांछित सुलभ सहु थशे, रहेशे तन मनमां आराम—श्रीमती (१)
तीर्थंकर भगवाननी भक्ति, भाव वधारी करो दिन रात;
मन मातंगने वशमां करवा, लीधुं ज्ञाननुं भालु हाथ—श्रीमती (२)
गणधर सम गणना स्वामी छो, व्हेनो दे छे आशीर्वाद;
नम्रपणुं ने मधुर वचन सुणी, करे न कोदि को फरियाद—श्रीमती (३)
व्हेनो विचारी माता माने, दिलमां देखे तारणहार;
नयनामृत रस पान करीने, चरणो चुमे आणि प्यार—श्रीमती (४)

चित्त वित्त आश्रमने अर्पीने, करो छो प्रेमे परोपकार;
रंक राय सरीखा समजो छो, जाणी कर्मजन्य परकार-श्रीमती (५)
जीवननो लई लीधो लावो, आपी ज्ञानदान सुखकार;
वोटर वारी नामना झगडा, मनमा नव मान्या शिवकार-श्रीमती (६)

-शिवजी देवसिंह।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभामें भाषण।

ता० ४ जून १९२७ को दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिकोत्सव कोल्हापुरमें हुआ था उस समय मगनबाईजीको बहुत आग्रह करके बुलाया गया था। बाईजीने बड़ा ही विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया था जो महिलादर्श ज्येष्ठ सुदी ३ वीर सं० २४५३ अंक २ वर्ष ६ में मुद्रित है। महिला परिषदके अधिवेशन ता० ४-५-६ जूनको हुए थे। मगनबाईजी ही प्रमुखा थीं। बाई-जीने अपना छपा हुआ भाषण मराठी भाषामें पढ़ते हुए भी बीच-बीचमें समझाते हुए बहुतसी ऊपरी बातें कहीं थीं। उस समय एक दक्षिण प्रांतीय जैन महिला परिषद् स्थापित कराई व इसके कार्यकारी मण्डलमें स्वयं अध्यक्ष व मंत्री श्रीमतीबाई कलत्रे व सौ० मालतीबाई मूले हुए। सांगली स्टेटमें एक श्राविकाश्रम चल-रहा था। मगनबाईजीने इस आश्रमको स्थाई रूप देनेके लिये जोर दिया व स्वयं १००१) प्रदान किये। बाईजीकी प्रेरणासे श्रीमतीबाई कोकिल तथा कलत्रे उभय बहिनोंने १००१), १००१) दिये। ये दोनों आश्रमकी सेवा कर रही हैं। १००१) श्यामाबाई मौरुसेने व १००१) भट्टारक जिनसेनस्वामीने दिये। ६००) का और चन्दा हुआ।

मगनबाईजीने अपनी डायरीमें ता० २ नवम्बर १९२७को लिखा है "आबरूकी रक्षा पहले और जीवनका सुख पीछे ऐसी भावना प्रत्येकके हृदयमें जहांतक उदय नही होगी वहांतक देशका कल्याण नहीं होसक्ता।"

अपूर्व वाक्य।

ता० १० नवम्बर १९२७ को सौ० सगुणाबाई ध० प० सेठ सूरजमल हरनंदराय रुइयाके सभापतित्वमें हुआ। मगनबाईजीने बड़े उत्साहसे आश्रमकी रिपोर्ट व हिसाब सुनाया। गानादि हुए। इनाम बांटा गया, ४०० महिलाएं थीं। मगनबाईजीने सबका आभार माना। यद्यपि आपका शरीर पहलेकी अपेक्षा निर्बल तथा रुग्ण था तौ भी आपका उत्साह दिनपर दिन बढ़ता जाता था। जिस नियमित रूपसे बाईजीने बराबर श्राविकाश्रम व भा० दि० जैन महिलापरिषद्का संचालन किया है वह अनुकरणीय है। दोनोंके मंत्रीपनेका काम अपने सच्चे निःस्वार्थ भावसे आजन्म सेवा करके पूर्ण किया।

श्राविकाश्रमका जलसा।
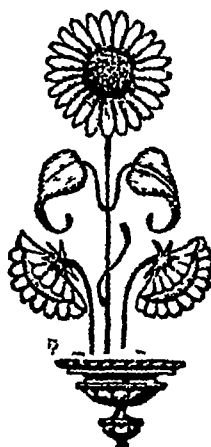
आठवां अध्याय।

शांति स्थापिका मगनबाई जे० पी०।

श्रीमती मगनबाईजीके परोपकारमय कार्योंकी प्रशंसा मात्र जैन कौममें ही नहीं थी, किन्तु सर्वसाधारणमें फैल गई थी। जैन समाजमें जो वे रात दिन तन, मन, धनसे स्त्री समाजके उत्थानका काम कर रहीं थीं वह जैनसमाजको तो विशेष प्रगट था, तथापि उसकी प्रसिद्धि अजैनोंमें व सरकारमें होगई थी। इसके सिवाय मगनबाई जब मुम्बई ठहरती थी तब प्रायः हरएक सार्वजनिक सभामें भाग लेती थीं। जहां भाषणका अवसर होता था वहां भाषण भी देती थीं। महिलाओंकी पबलिक सभाओंमें तो बाईजीको बहुधा भाषण करनेका काम पड़ता था। बंबईका बच्चा बूढ़ा सब आपकी कीर्तिसे विज्ञ था। अप्रैल मासमें जब बंबई सर्कारके यहां यह विचार हुआ कि क्या कुछ महिलाएं बंबईमें ऐसी हैं जिनको जष्टिश आफ दी पीस-(शांति स्थापिका) का पद अर्पण किया जावे, तब बंबईके प्रसिद्ध जैन व्यापारी सेठ बालचन्द हीराचन्दजी सी० आई० ई० से संमति ली गई। सेठजी ब्र० कंकुबाईजीके भाई हैं, मगन-बाईजीके कार्योंसे भलेप्रकार विज्ञ थे। सेठजीने मगनबाईजीका नाम सूचित किया। सर्कारी आफसरोंने श्रीमान दानवीर सेठ माणिकचन्दजीका सुयश जान रक्खा था। यह उन हीकी सुपुत्री हैं, यह अपने पूज्य पिताके समान सेवा बजा रही हैं व बड़ी शांति व न्यायसे काम करती हैं, इसलिये सर्कार द्वारा ता० २० अप्रैल

मगनबाईजी जे० पी० हुई।

१९२८ को निश्चय किया गया कि जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबाईजीको जष्टिश ऑफ दी पीस (जे० पी०) का पद अर्पण किया जाय। इस पदसे बम्बई नगरके भीतर आनरेरी मजिष्ट्रेटके समान हक प्राप्त होजाते हैं। इनकी सही सर्कारी कागजोंपर मानी जाती है। वह सर्कारी आज्ञापत्र इंग्रेजीमें नीचे मुद्रित है—

जे. पी. के सम्बन्धमें बम्बई सर्कारका पत्र।

Commission of the Peace for the Town of Bombay.

Shrimati Maganbehn Manekchand Hirachand Javary was by notification of the Government of Bombay in the Home Department No. P-12 dated the 20th april 1928 appointed under the provisions of section 22 of the Code of Criminal Procedure 1898 to be a

Justice of the Peace

within the limits of the town of Bombay during the pleasure of Government.

By order of his rxcellency the Honourable Governor in Council—

(दस्तखत)

Home Department Bombay Castle. 11th August 1928.	Secretary to the Government of Bombay Home Dept.

"मुम्बई समाचार" ता० २३ अप्रैल १९०८ में जे० पी० की उपाधि पानेवालोंमें अपना नाम अकस्मात् मुद्रित देखकर मगनबाईजीको बड़ा ही आश्चर्य हुआ। क्योंकि बाईजीको स्वप्नमें

भी यह खयाल न था कि जो सर्कारी मान्यता उनके पूज्य पिताजी शेठ माणिकचंदजीको प्राप्त थी वह मान्यता उन्हें भी प्राप्त हो जायगी। मगनबाईजीने इसके लिये स्वयं कोई चेष्टा नहीं की थी न सेठ बालचन्द हीराचंदजीने ही मगनबाईजीको कुछ समाचार कहा था। वास्तवमें प्रतिष्ठा योग्यका प्रतिष्ठित होना उचित ही है। दिगम्बर जैन समाजमें यह पहली ही महिला थी जिनने यह माननीय पद प्राप्त किया था।

हीराबागमें मानपत्र।

ता० २९ अप्रेल १९२८को हीराबाग धर्मशालामें मुम्बईकी समस्त जैन स्त्री समाजकी तरफसे एक भारी सभा बुलाई गई थी। सभापतिका आसन श्री० सौ० शांतादेवी ध० प० राजा बहादुर गोविंदलाल शिवलालने ग्रहण किया था। प्रमुखाने अपने भाषणमें कहा—'पूज्य जैन महिलारत्न मगनबहिनको सरकारकी तरफसे जे० पी० की पदवी मिली है यह बराबर योग्य है, कारण कि यह बहिन अशिक्षित समाजके भीतर अपना सर्वसुख छोड़के अज्ञानरूपी दुःखसे पीड़ित अनेक विधवा, सधवा व कुमारिकाओंको हरप्रकारकी शिक्षा प्रदान कर रही हैं। इत्यादि।" फिर ललिताबाईजीने अभिनन्दनपत्र पढ़के सुनाया जो नीचे दिया जाता है। पश्चात् श्रीमती कस्तुरीबाई ध० प० सेठ बालचंद हीराचंदने मगनबाईको एक चांदीका सुन्दर कास्केट भेट किया व श्राविकाश्रमकी श्राविकाओंकी तरफसे एक चांदीका पाकेट व चांदीकी रकाबी अर्पण की गई। तथा श्रीमती शांतादेवी ध० प० पंडित दरबारीलालजी न्यायतीर्थ, साहित्यरत्नने एक फ्लावरपोट भेट करके

अपना हर्ष प्रदर्शित किया। श्री० मगनबाईने मानपत्र लेते हुए कहा कि मुझे जो यह उपाधि प्राप्त हुई है उसके लिये आप सर्व जो उत्साह व आनंद दिखा रहे हो व अपना अमूल्य समय अर्पण कर रहे हो उसके लिये मैं सबका आभार मानती हूं।"

नकल-मानपत्र।

जैनमहिलारत्न विदुषी श्रीमती व्हेन मगनव्हेन जे. पी. नी सेवामां मुम्बईनी जैन स्त्रीसमाज तरफथी अभिनन्दन.

जैन महिलारत्न! आपे जैन स्त्री समाजनी आज सुधीमां अपूर्व सेवा करी छे अने स्त्री केळवणीनां कामने विशाळ रूप आप्युं छे तेनी माहिती मोटाथी नाना सुधी दरेक जणने छे, ते सेवानी कदर करीने नामदार गवर्नमेन्टे आपने जे. पी. नो मानवंतो खिताब एनायत कर्यो छे, तेथी आपनुंज नहि परन्तु समस्त जैन समाजनुं गौरव वध्युं छे तेने माटे अमे आपने अभिनंदन आपीए छीए.

माननीय व्हेन! जे वखते जैन समाजमां स्त्री केळवणीना नामथी लोको विस्मय पामता हता ते वखते आपे आपना अद्भुत साहस अने धैर्यनी साथे स्त्री केळवणीनी ध्वजा फरकावी अने श्राविकाश्रम आदि स्त्री उपयोगी संस्थाओ स्थापी, तेने पोते चलावी अने स्त्री केळवणीनो बहोळो फेलावो कर्यो छे.

सद्गुणी व्हेन! जैन समाजमां आप मोटां परोपकारी अने समाज हितेच्छु छो, अने अनेक प्रकारथी दुःखी सधवा, विधवा अने कुँवारी व्हेनोने आश्रय आपी धर्मप्रेमी, स्वावलंबी अने चारित्रवान बनाववानो भगीरथ प्रयत्न कर्यो छे, आपना कुटुम्बीओ तरफथी

परोपकारनां कार्यो थतां आव्यां छे, अने आप पण तेवां कार्यो करवामां भाग्यशाळी निवड्यां छो. आपना पिताजी जैनकुलभूषण दानवीर शेठ माणेकचंद हीराचंद जवेरी जे. पी. ने पगले चाली जेम पुत्र पितानो वारसो मेळवे छे तेम आपे पण जे. पी. नी पदवीनो वारसो मेळव्यो छे ते माटे अमे सर्व व्हेनो मगरुर छीए.

पूज्य व्हेन ! आपना शुभ उपदेशथी तथा परिश्रमथी श्री. भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिलापरिषदनी स्थापना थई छे ते परिषद समस्त देशमां जुदे जुदे स्थळे दर वर्षे सभा भरी स्त्रीसमाजने शिक्षित बनाववानो उपदेश आपी रही छे, तेथी केवळ जैन समाजज नहि परन्तु समस्त स्त्री समाज आपनी आभारी छे.

व्हेन ! आ क्षेत्रमां आटलुं विशाल काम करवावाळां तथा आटलुं ऊंच पद प्राप्त करवावाळां प्रथम जैन व्हेन आपज छो. आपना अनेक गुणोपर मोहित थई अमे सर्वे मुम्बईनी जैन महिलाओ आपनुं अभिनंदन करीए छीए. अमे इच्छीए छीए के आपनावडे ए प्रमाणे स्त्री समाजनी सेवानुं काम दीर्घकाल सुधी चालु रहे, तेमज आपनो प्रयत्न सदैव सफळ थाय जेथी आपनुं तथा समस्त स्त्री समाजनुं गौरव वधे.

विनीत—जैन स्त्री समाज, मुम्बई.

सौ० शांतादेवी राजाबहादुर गोविंदलाल शिवलाल.

ता० २९ अप्रैल १९२८.

वीसामेवाडा जातिका केन्द्रस्थान सोजित्रा (गुजरातमें) है।

सोजित्रामें मानपत्र। यहां वैशाख मासमें इस जातिकी बहुत मंडली एकत्र होती है। तब बहुतसे विवाह

जैनमहिलारत्न पं० मगनबाईजी (जे० पी० होते समय लिया हुआ चित्र)

भी होते हैं। इस वर्ष जैन महिलारत्न मगनबाई जे० पी० को बड़े सम्मानसे निमंत्रित किया था तब सर्व समाजने मिलके मिती वैशाख सुदी १९ वीर सं० २४५४ ता० ४ मई १९२८ को एक मानपत्र भेट किया व साथमें एक चांदीका कास्केट भी दिया। इसकी नकल नीचे दीगई है। मानपत्र ग्रहण करते हुए बाईजीने कहा-"श्राविकाश्रम तो कई खुल गए हैं, अब मेरा विचार कन्या महाविद्यालय खोलनेका है। वस्तुतः समाजमें कन्याओंकी शिक्षाके लिये समुचित प्रबंध नहीं है।"

इसमें संदेह नहीं कि एक भारतवर्षीय जैन कन्या महाविद्यालयकी जैन कौममें बहुत बड़ी आवश्यक्ता है। जैसा एक विद्यालय फीरोजपुर शहर पंजाबमें सिक्ख लोगोंका है, जहां ३०० कुमारिकाएं छात्राश्रममें रहती हैं व विद्यालयमें धार्मिक व लौकिक शिक्षा प्राप्त करतीं हैं। अल्पायुके कारण मगनबाई तो इस कार्यको न कर सकीं। किन्हीं वीर भक्त भाई व बहनोंको उचित है कि उक्त बाईकी इच्छा पूर्ण करें और आदर्श गृहिणी बनाने योग्य शिक्षा कन्याओंको प्रदान करनेके हेतुसे एक कन्या महाविद्यालय अवश्य किसी केन्द्रस्थानमें स्थापित करे, जहां भारतकी सर्व ही कन्याएं सुगमतासे आकर रह सकें।

नकल मानपत्र।

जैन महिलारत्न विदुषी ब्हेन मगनब्हेन माणेकचंद जे० पी०।

सुज्ञ भगिनी तथा जैन महिलारत्न!

आपे समस्त जैन जातिना कल्याणार्थे आपना स्वर्गीय पूज्य पिताश्री-दानवीर जैन कुलभूषण शेठ माणकचन्द हीराचन्द जे.

पी. ना आदर्शमय मार्गे चाली, आजसुधी सेंकडो श्राविकाओने सन्मार्गे दोरववा आपना अमुल्य जीवननो भोग आपी जैन समाजनी सेवा करी छे, तेनी कदर करी नामदार ब्रीटीश सरकारे आपने जे. पी. नो मानवंतो इल्काब बक्ष्यो तेने माटे "समस्त वीसा मेवाडा दिगम्बर जैन कोम" आपने अभिनंदन आपतां घणुंज मान समजे छे.

आवुं मान जैन कोमनी स्त्रीओमां आपने सौथी पहेलुंज मळ्युं छे. अने ते पण आपना जेवा लायक व्हेननेज मळ्युं ते अति हर्षनी वात छे.

ज्यारे जैन महिलाओ अज्ञानना अंधकारमां निशदिन जींदगी गुजारती हती त्यारे आपे समस्त समाजने धार्मिक, नैतिक तथा ऐहिक ज्ञान आपी शके तेवी दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम नामनी संस्था स्थापी ते द्वारा आदर्श श्राविकाओ अने धर्म प्रचारिकाओ बनाववानुं, तेमज स्त्री केळवणी समाजने रुचिकर करवानुं अने तेना आश्रमो स्थापवानुं पहेलुं मान कोममां आपनेज घटे छे.

आपनुं धार्मिक जीवन, आदर्शमय चारित्र, निस्वार्थ समाजसेवा, श्राविकाओ प्रत्येनी मातातुल्य ममता विगेरे विगेरे आपना अनेक सद्गुणो माटे आपने जेटलु अधिक मान अर्पीए तेटलु अमे ओछुं समजीए छीए.

आजकाल अनेक वर्षोथी आप, समाजनी सेवा अमारी द्रष्टि मर्यादानी अंदर करी रह्यां छो छतां आजसुधी अमाराथी आपना कामनी कंइज कदर थई नथी, तेथी आ अभिनंदनपत्र आपने आ समये आपतां अमारा हृदयो आनंदथी उभराय छे अने आप भवि-

ष्यमां हजुए उन्नत कामो करी शको तेने मटे आप दीर्घायु थाओ एवी अमारी शुभेच्छा छे.

सोजीत्रा.
वीर सं. २४५४
वैशाख सुद १५

ली. आपनी अहोनिश आभारी,
श्री सोजीत्रा वीसा मेवाडा-
दिगम्बर जैन कोम.

श्राविकाश्रम शिक्षक मंडलका मानपत्र।

ता० २२ जुलाई १९२८ को श्राविकाश्रमके शिक्षक मंडलने एकत्र हो मगनबाईजीको जे० पी० उपाधिसे विभूषित होनेपर बहुत उत्सव मनाया तथा एक मानपत्र अर्पण किया जो नीचे हैं—

नकल मानपत्र।

निसर्गभिन्नास्पदमेकसंस्थं तस्मिन् द्वयं श्रीश्च सरस्वती च।

जैनमहिलारत्न विदुषी श्रीमती बहिन "मगनबाईजी" जे० पी०की सेवामें श्राविकाश्रम शिक्षक मण्डलकी तरफसे अभिनन्दन।

जैन महिलारत्न! आपने दि०जैन स्त्री समाजकी आजतक अति ही अपूर्व सेवा की है, तथा समस्त दि०जैन जातिके कल्याणार्थ अपने पूज्य पिता दानवीर जैनकुलभूषण स्वर्गीय सेठ माणिकचन्द हीराचंद जवेरी जे० पी०के आदर्श मार्गपर चलकर सहस्रों श्राविकाओंको विदुषी तथा धर्मपरायणा बनानेके लिये अथक और अथक परिश्रम किया है। यही कारण है कि नामदार ब्रिटिश सरकारने भी जे० पी० की उपाधिसे विभूषित करके आपकी प्रतिष्ठाका भी अनुमोदन किया है। इससे आपकी ही नहीं, वरन्

समस्त दि॰ जैन स्त्री समाजकी प्रतिष्ठा हुई है। अतः हम शिक्षक मण्डल आपको मानपत्र समर्पण कर आशा करते हैं कि आप सादर स्वीकार करेंगी।

माननीय बहिन! जिस समय दि॰ जैन समाज ही नहीं, वरन् समस्त हिन्दू नारी समाजमें स्त्री शिक्षाके नामसे लोग घबरा जाते थे उस समय आप ही ऐसी वीर साहसी धैर्यशीला धर्मात्मा तथा विदुषी बहिनका काम था जिसने कि लोगोंके हृदयमें विद्याके कल्पवृक्षका वह अंकुर उत्पन्न कर दिया जो कि आज फूलने फलनेवाला वृक्ष तैयार हो समाजको अमृत फल चखा रहा है। आप हीके अद्भुत प्रभावसे आज दि॰ जैन स्त्री समाजमें अनेक संस्थायें (श्राविकाश्रम, कन्याशाला, पाठशाला इत्यादि) दिखाई देरही हैं।

विदुषी बहिन! दि॰ जैन स्त्री समाजमें आप महान् परोपकारी एवं समाज हितेच्छु हो, आपकी कार्यशैली अनोखी है। आप जिस भांति दुखियोंके दुःख दूर करने तथा सधवा कुमारी और विधवाओंको पूर्ण गृहिणी तथा धर्मात्मा बनाने व कलाकौशल सिखानेका प्रयत्न प्रतिक्षण करती रहती है वह विरले ही कर सक्ते हैं। अपने आधीन व्यक्तियोंसे कार्य करानेकी रीति जैसी आपको ज्ञात है वैसी संभव है कि किसी किसीको ज्ञात होगी। आप अपने आधीन व्यक्तियोंको नौकर नहीं वरन् भाई, बहिन समझकर जिस प्रेम और मधुर स्वरसे काम लेना चाहती हैं, उसी प्रेमसे आपके आधीन व्यक्ति भी संस्थाका कार्य स्वकार्य समझकर सानुराग करनेको कटिबद्ध रहा करते हैं, यही कारण है कि आपका आश्रम एक आदर्शस्वरूप बनता जारहा है व भविष्यके लिये पूर्ण आशा है

कि यदि आप और आपके आधिन व्यक्तियोंमें ऐसा ही प्रेम बना रहा तो कुछ काल पश्चात् यह आश्रम और भी अधिक महान और आदर्श बन जायगा।

श्रीमती बहिन!

आप हीके शुभोपदेश तथा आप हीके परिश्रमका फल है कि अखिल भारतवर्षीय दि० जैन महिला परिषद् स्थापित हो, समस्त भारतकी नारी समाजको अपने ललित तथा मनोहर उपदेशोंसे जगा रही है। इस विशाल क्षेत्रमें महान् कार्य्य करनेवाली तथा उच्च पद प्राप्त करनेवाली प्रथम जैन बहिन आप ही हैं। आपके अनेक गुणों तथा प्रेमपर मोहित हो हम समस्त शिक्षक मंडल, आपको अभिनन्दन पत्र समर्पण कर भगवानसे प्रार्थना करते हैं कि आप चिरायु हो, इसी भांति नारी समाजका गौरव बढ़ाती रहें। विनीत—शिक्षक मंडल श्राविकाश्रम,

तारदेव-बम्बई ता० २२-७-२८ ई०

इस समय देशमें शारदा बिलकी चर्चा होरही थी। यह बिल वाइसरायकी कौंसिलमें पेश था। बहुतसे रूढ़ि-भक्त इसके विरोधमें थे जब कि महिलाएं अधिकतर इसके अनुकूल थीं।

बालविवाह निषेधक शारदा बिल।

इस बिलके द्वारा कन्याका विवाह १४ वर्षसे व पुत्रका विवाह १८ वर्षसे कममें न किया जावे, ऐसा स्थिर किया गया था। मगनबाईजीने इस बिलको भारतकी महिलाओंके लिये बहुत उपयोगी समझा तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्के सदस्योंकी सम्मतिके लिये १००-१५० स्थानोंमें पत्र भेजे। ८०

लिखित सम्मतियां आईं जिनमें ७५ अनुकूल थीं। तदनुसार प्रस्ताव स्वीकृत समझकर महिला परिषद्‌की ओरसे श्रीमान् वाइसराय महोदयको तार दिया गया कि यह परिषद् बिलको समर्थन करती है। यह सम्वाद जैन महिलादर्श पृ० २०४ अंक ९ भाद्र सुदी ३ वीर संवत २४५४ में मुद्रित है।

कारञ्जामे दशलाक्षणी पर्व।

वीर संवत २४५४में मगनबाईजीने श्री० ब्र० कंकुबाईजीके आग्रहसे दशलाक्षणी पर्व कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रममें सानन्द पूर्ण किया। यहां तेराद्वीप विधानमें पूजाका लाभ लिया। धर्मचर्चामें समय बिताया, कुंआर वदी १को यहांकी जैन कन्याशालाका निरीक्षण किया। स्त्रियोंने एक पुस्तकालय भी खोला है। ता० १ अक्टूबर सन् १९२८ आसौज वदी २को मुम्बई लौट आए।

रुग्णता।

अक्टूबर मासमें बीमारीने मगनबाईजीको बहुत दबा लिया। यहांतक कि ता० २३ अक्टूबर १९२८ की डायरीमें लिखा है कि डाक्टरने उठनेकी मनाई की है।

श्राविकाश्रमका १६ वां जल्सा।

श्राविकाश्रम बम्बईका १६ वां वार्षिक अधिवेशन ता० २८ नवम्बर १९२८ को सौभाग्यवती जयश्री एम० बी० ए० एक विद्वान् महिलाके सभापतित्वमें हुआ था। प्रमुखाने अपने भाषणमें कहा था—श्रीमती मगनबहिन ऐसी सेवक भगिनी इस संस्थाकी एक कार्यकर्त्री है यह बड़े सौभाग्यकी बात है। इस संस्थाको आदर्श बनानेवाले कार्यवाहकोंको मैं अन्तःकरणपूर्वक अभिनन्दन देती हूं। नियमित कार्यवाही व पारितोषिक वितरणके पीछे मगनबाईजीने,

जो बहुत निर्बल थी तौभी सबका अंतःकरणपूर्वक आभार माना। वन्देमातरम्के गीतके साथ सभा विसर्जन हुई।

मगनबाई जयन्ती।

पौष वदी १० वीर सं० २४५५ ता० ५ जनवरी १९२९ को मगनबाईजीने ४९ वर्ष पूर्ण करके ५० वें वर्षमें पदार्पण किया। आज श्राविकाश्रमकी बहिनोंने २४ भगवानका पूजन ११ बजेसे ५॥ बजे तक किया। श्रीफलकी प्रभावना बांटी गई। मगनबाईजीकी तरफसे सबको मिष्टान्नका भोजन कराया गया व रात्रिको शास्त्री जीवराम जयशंकरके सभापतित्वमें सभा हुई, उस समय बहिनोंने हिन्दीमें एक कविता पढ़ी थी जो नीचे दी जाती है—

जयन्तीसमय पढ़ीहुई छात्राओंकी कविताएँ।

जब नारियोंकी हरतरहसे जातिमें थी दुर्दशा।
था दुःखमय जीवन परिस्थिति भी बनी थी कर्कशा॥
वे पैरके होते हुए भी पंगु थीं अतिहीन थीं।
असहाय अशरण थीं तथा अज्ञान तममें लीन थीं॥ १॥

हा! बीतता था यह मनुज-जीवन विविध संक्लेशमें।
आई मगनबाई तभी परिपूर्ण नारी वेशमें॥
उनके हृदयने नारियोंकी दुर्दशाको देखकर।
की दृढ प्रतिज्ञा दूसरोंका दुःख अपना लेखकर॥ २॥

मैं दूर कर दूंगी सभी दुःख मूर्खताको नष्टकर।
सबको सिखा दूंगी खड़ा होना सदा निज पैर पर॥
सरिता बहा दूंगी यहां गौरव तथा आचारकी।
झांकी दिखा दूंगी जगतमें शुद्ध सच्चे प्यारकी॥ ३॥

करके प्रतिज्ञा इस तरह आई जभी मैदानमें।
तब ही यहां पर नारियोंकी जान आई जानमें॥

खुलने लगे आश्रम अनेकों रूढ़ियां हटने लगीं।
अज्ञान तम घटने लगा ये बेड़िया कटने लगीं॥ ४॥
इनकी कृपासे नारिया हैं बोलने हिलने लगीं।
उनके हृदयकी वृत्तिया नित फूलने फलने लगीं॥
जड़ता हटाकर चेतनाका कर दिया संचार है।
ये नारियोंके भाग्यसे जगमें हुआ अवतार है॥ ५॥
यह धन्य है दशमी दिवस यह मास भी अति धन्य है।
जिससे हुआ यह पक्ष ज्यादः शुक्लसे भी धन्य है॥
इस दिवसने वीरागना माता दिखाई है हमें।
जिसने सदा उद्धारकी पट्टी पढ़ाई है हमें॥ ६॥
जिस हृदयने की थी प्रतिज्ञा वह हृदय बीमार है।
यह जानकर अब तो हमारे दुःखका नहीं पार है॥
है प्रार्थना जिनवर यही अब शीघ्र रक्षा कीजिये।
इस शुभ दिवसमें नाथ वस वरदान येही दीजिये॥

\+ * * *

जनवरी पाच शनि दशमी, मुबारक हो मुबारक हो।
चिरायु मातु हों मेरी, मुबारक हो मुबारक हो॥ १॥
घड़ी इक शत मिनटकी हो, औ दिन हो लक्ष घटेका।
बरस दिन कोटिका होवे, मुबारक हो मुबारक हो॥ २॥
अरब अरु वर्ष खरबोंकी, हो आयु मातु जे०पी०की०।
करें सत कर्म नित नीलों, मुबारक हो मुबारक हो॥ ३॥
मिला दिन वर्ष बीते पर, मिले योंही पदुम वारा।
करें शत शंख उपकारा, मुबारक हो मुबारक हो॥ ४॥
बजे जगमें सुयश डंका, दशों दिशि हो अतुल महिमा।
खुले आश्रम सहस्रों यो, मुबारक हो मुबारक हो॥ ५॥
सुनों जिन देवीजी विनती, करें कर जोड़ सब छात्रा।
हुआ सार्थक बरस मेरा, मुबारक हो मुबारक हो॥ ६॥

ब्यावर राजपूतानाके रायबहादुर सेठ चम्पालाल जैनकी विधवा पुत्रवधू व सुपुत्री सेठ सूरजमल हरनन्दराय श्रीमती शांतिदेवीने बम्बई श्राविकाश्रमके स्थानपर एक नूतन कमरा बनवानेमें ५०१) की सहायता दी थी। उद्देश्य यह था कि वे इस आश्रममें कुछ दिन रहकर अनुभव प्राप्त करें, फिर एक नया आश्रम खोलें। ता० ३१-१२-२८को श्रीमती मगनबाईजीने इसका प्रवेश मुहूर्त श्री जिनेन्द्रकी पूजा अभिषेक विधान सहित करवाया व शांतिदेवीको धन्यवाद दिया।

नवीन कमराका मुहूर्त।

मुम्बई नगरीमें गुजराती हिन्दू स्त्री मण्डलकी रजतजुबिली २५ वर्षके बाद हुई थी, उस समय एक प्रदर्शिनी भी की गई थी। इसमें श्राविकाश्रमकी बहिनोंके द्वारा निर्मापित बेतके सामान भेजे गये थे। कार्य उत्तम होनेके उपलक्ष्यमें उक्त मण्डलने आश्रमको एक रौप्यपदक सरस्वतीके चित्र सहित प्रदान किया। श्राविकाश्रममें रहकर इंग्लिश सीखनेवाली कन्या वीरमतिने अपने व्यायामके उत्तम खेल दिखाए थे, इस कारण कन्याहाईस्कूल बम्बईकी ओरसे उसे एक फौन्टेनपेन प्रदान किया गया।

आश्रमके कामकी कदर।

पंडिता चंदाबाईजीने मगनबाईजीकी सम्मतिसे जैन महिलादर्श मासिकपत्रका आकार "सरस्वती" पत्रके समान बड़ा कर दिया व वीर सं० २४५५का प्रथम अंक विशेष रूपसे १००. पृष्ठका निकाला था। अब दर्शकी शोभा बहुत बढ़ गई है व जैन महिलाओंके उत्तमोत्तम लेखोंसे सज्जित निकलता है।

जैन महिलादर्शका बड़ा आकार।

श्रीमती मगनबाईजी बीमारीके कारण अब कहीं बाहर नहीं जाती थीं। श्राविकाश्रमका काम भी सब ललितावाईजीको सुपुर्द कर दिया था। तथापि प्रत्येक नियमित कामकी सम्हाल रखती थीं।

श्राविकाश्रमका जलसा।

बाईजीने श्राविकाश्रमका १७ वां वार्षिकोत्सव ता० १७ नवम्बर १९२९को सौ० रमाबाई मुरारजी कामदारकी अध्यक्षतामें कराया। उपस्थित स्त्री पुरुषोंकी संख्या ७००के अनुमान थी।

प्रमुखाने अपने भाषणमें मगनबाईजीके संबन्धमें नीचे लिखे वाक्य कहे—"आजकी सभाका प्रमुखस्थान लेना मेरे माथे आन पड़ा है इसे मैं अपना फर्ज समझ कर ही स्वीकार करती हूं। क्योंकि मैं मगनबहनको हमेशा पूज्य मानती आई हूं इसलिये मुझसे मगनबहनका वाक्य पीछे नहीं फेरा जासक्ता। मगनबहनकी तबियत खराब है इसलिये भाषण शुरू करनेके पहिले मगनबहनके दीर्घ आयुष्य होनेकी इच्छा करूंगी। मगनबहन रातदिन इसी तरह समाजका उपयोगी काम किया करे और छोटी कार्यकर्ता बहनोंको प्रेरणा दिया करे, यही मैं चाहती हू। मैं उनके वचनका मान करके यहां आज आई हूं। मुझे उनका दर्शन हुआ व तुम सब बहन व भाइयोंका समागम हुआ।

बहुत कालसे मगनबाईजी बीमार चली आती थी। डाक्टरकी सलाहसे आप कई माससे बम्बई पुनाके मध्यमें लोणावला स्थानमें एक बंगला लेकर विश्राम करती थी। वहीं दवाईका पूरा प्रबन्ध था।

मगनबाईजीका स्वर्गवास।

इन्होंने अपनी पुत्री व पौत्रीको भी पेरिससे बुला लिया था। ब्र०

सीतलप्रसादजी कोल्हापुर जानेके पहले मगनबाईजीकी मृत्युके कुछ ही दिन पूर्व मगनबाईजीसे मिले। २ दिन ठहरकर उनको धर्मोपदेश दिया। आज उठती बैठतीं व भले प्रकार वार्तालाप करती थीं। ज्वर जो आता था वह कम होगया था। एक दिन उन्होंने स्वयं ब्र०जीको आहारदान दिया था। उससमय यह आशा थी कि आप शीघ्र ही स्वास्थ्यलाभ करेंगी। ता० २६ जनवरी १९३०को श्री० बारिष्टर चम्पतरायजी सा० कोल्हापुर द० म० जैनसभाके सभापति होनेके लिये जब बंबईसे लोनावला स्टेशनपरसे गुजर रहे थे तब मगनबाईजीसे रहा न गया। आप निर्बल अवस्थामें ही अपने परिवार सहित पुष्पोंका हारतोड़ा लेकर ष्टेशनपर पधारी थीं व बारिष्टर साहबका सम्मान किया था। कोल्हापुरसे लौटकर भी बाईजीके स्वर्गवाससे २ दिन पहले ब्र०सीतलप्रसादजी मगनबाईजीसे मिले थे तब समयसारका विषय स्मरण कराया। बाईजी पूर्ण सावधान थी व उनको भी भरोसा था कि वे शीघ्र ही बम्बई आकर श्राविकाश्रमकी व जैनसमाजकी सेवा कुछ काल और करेंगी।

उनको उस समय यही चिंता थी कि श्राविकाश्रमका ध्रौव्य फंड ९०००) और होजाता तो एक लाख रु० पूरा होजाता परंतु आयुकर्मपर किसीका वश नहीं चल सक्ता। आप माह सुदी ९ वीर सम्वत २४५६ तारीख ७ फर्वरी १९३० की रात्रिको अचानक हृदयकी गति बन्द होजानेसे धर्मध्यान करती हुई शरीरको छोड़कर चल दीं। इसका सम्वाद ता० ८को सवेरे मुंबई मिला तब ब्र० सीतलप्रसादजी व श्री० बारिष्टर चम्पतरायजी मुंबईमें ही थे। तब सेठ ताराचंद नवलचंदजी, ठाकुरदास भगवानदासजी व ललिताबाईजी

मोटर द्वारा ८० मील लोणावला गए व उनका शव मोटरमें मुंबई रत्नाकर पैलेसमें लाया गया। उनके जीव रहित देहका अंतिम दर्शन ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने किया व संसारकी अनित्यताका चिन्तवन किया व अशरण भावना भाई कि आयु कर्मकी निर्जराको कोई रोक नहीं सक्ता। बारिष्टर चम्पतरायजी भी शवके साथ स्मशान भूमिमें गए और बहुतसे पुरुषगण थे। चंदनादिसे शरीरकी दाह क्रिया हुई। इस तरह एक आत्माने महिला पर्यायमें ५० वर्ष बिताकर अपनी जीवन यात्रा समाप्त की। यद्यपि मगनबाईजी अब न रहीं तथापि उनके जीवनके कार्य उनके स्मारक स्तंभ रूपसे जीवित हैं। उनके स्थापित कराए हुए कितने ही श्राविकाश्रम व कई कन्याशालाएँ हैं। उनके मुख्य कार्य श्राविकाश्रम बंबई व भारतवर्षीय दि० जैन महिला परिषद् हैं। इन दोनों संस्थाओंके मंत्रित्वका कार्य किस उत्तमतासे व नियमितरूपसे व निर्विघ्नतासे व एकतासे व शांतभावसे मगनबाईजीने चलाया था यह बात ही उनकी अंतरंग योग्यताका चिह्न है। जैसे उनके पूज्य पिता सरलस्वभावी, उदार, दानी, परोपकारी व धर्मात्मा थे वैसे ही उनकी पुत्री थीं। किन्हीं गुणोंमें पितासे कम न थीं। अन्त समयमें भी आपने ६४२४) का दान किया है जो रुग्णावस्थामें ही निश्चित कर लिया गया था। वह दान नीचे प्रकार है—

श्रीमती मगनबाई जे० पी० द्वारा अंतसमय किया गया दान।

४०००) इसके व्याजसे दो छात्रवृत्तियें दीजावें। एक उसे जो संस्कृतके साथ सर्वार्थसिद्धि पास करे अथवा गोम्मटसार जीवकांडका अभ्यास करे। दूसरी उसे जो मैट्रिक पास करके सर्वार्थसिद्धि

परीक्षा पास करे अथवा धर्मशास्त्रके साथ एन्ट्रेन्समें पढ़ती हो व बी० ए० तक अभ्यास करे।

५००) स्त्रियोपयोगी पुस्तकोंके प्रकाशनार्थ
५०) जैन बालाविश्राम आरा
२५) जैन महिलाश्रम सांगली
१०१) श्राविकाश्रम सोजित्रा
२५) „ शोलापुर
२५) „ गोहाना
५१) „ इन्दौर
२५) जैन महिलाश्रम दिहली
१५) „ सागवाड़ा
८५) वनिताविश्राम बंबई
५०) फुलकौर कन्याशाला सूरत
५०) कारंजा ब्रह्मचर्याश्रमम पुस्तकादि
३०) जैन मंदिरोंमें सामग्री
५०) बंबईके दो मंदिरोंमें आवश्यक वस्तु
२०) चौपाटी आदिके मंदिरोंमें
१०१) बंबई सार्वजनिक संस्था, अन्धशाला अनाथालयादि
३५) चंपापुरी, पावापुरी, राजगृही, गिरनार, पालीताना, पावागढ, तारंगा
८०) शिखरजीमें सोनेकी वाटकी
१५) अनाथालय बड़नगर
१५) अनाथालय दिहली
१५) स्याद्वाद महाविद्यालय काशी
१५) ब्रह्मचर्याश्रम मथुरा
१०) जैन बोर्डिंग प्रातिज
५) जैन पाठशाला उदयपुर
१५) दि० जैन बोर्डिंग अहमदाबाद
१५) „ „ रतलाम

१००१) परीक्षालय बबई द्वारा परीक्षामें पास स्त्रियोंको, व्याजमेंसे इनाम

६४२४) कुल दान

इस जीवनचरित्रके लेखकको अनेकोंबार श्राविकाश्रम बबईके निकट ठहरकर व प्रवासमें मगनबाईजीकी दिन चर्या देखनेका अवसर मिला है। बाईजी सवेरे ही ५ बजे उठकर करीब २ घड़ी सामायिक करती थीं—श्री अमितगति आचार्यकृत संस्कृत सामायिक पाठका मनन करती थीं फिर १७ नियमोंमेंसे यथासंभव कुछ नियम लेती थी व कुछ पाठ भी करती थीं फिर आश्रमकी व्यवस्था देखकर व स्नान कर श्री जिनेन्द्रदेवकी अष्टद्रव्यसे नित्य पूजन करती थी। आपकी यह पूजन लोणावलामें भी नित्य होती थी। वहांपर गृह चैत्यालय स्थापन कर लिया था। पूजनके पश्चात् स्वाध्याय करती थी। कभीं सवेरे ही स्वाध्याय कर लेती थी। फिर आश्रमका कार्य देखभाल करके कुछ जलपान करती थीं। रसोई यथासंभव शुद्ध अलग बनवाकर जीमती थीं। यद्यपि सामान आश्रममेंसे ही लिया जाता था, परन्तु उसका खर्च अपनी निजी संपत्तिसे दे देती थीं। फिर विश्राम करके व थोड़ी देर सामायिक करके २—३ घण्टे पत्रव्यवहार करती थीं। पत्रोंके उत्तर स्वयं लिखकर भेजती थी। आश्रमकी पढ़ाईपर देखभाल रखती थीं। बहुत दफे सवेरे पूजनके पीछे या पहले तथा तीसरे पहर बम्बई शहरमें किसी न किसी परोपकारके काममें जाया करती थीं। फंडके लिये जानेमें धनिक बाईको कभी लज्जा नहीं आती थीं। पबलिक सभाओंमें भाषण सुनने बहुधा जाती रहती थीं। सन्ध्याको कभी२

मगनबाईजीकी दिन चर्या।

स्वच्छ वायुमें टहलने जातीं फिर लौटकर करीब २ घडी सामायिक करती थीं। रात्रिको श्राविकाश्रमके ही चैत्यालयमें आरती करके फिर शास्त्र सभा स्वयं करतीं व उसमें शामिल होती थी। रात्रिको १० बजेके अनुमान शयन कर जातीं थीं। बाईजी एक समय भी वृथा नहीं खोती थीं। प्रवासमें भी नित्य पूजन स्वाध्यायादि क्रिया करनेमें कभी प्रमाद नहीं करती थीं। विकथा करनेकी बाईजीको बिलकुल आदत नहीं थी। जब कभी श्री० ब्र० शीतलप्रसादजी पांच, सात, आठ या पंद्रह दिनको बम्बई ठहरते थे, बाईजी किसी न किसी संस्कृत ग्रन्थका मनन करती थीं। इस पद्धतिसे बहुतसे संस्कृत ग्रन्थ जो माणिकचंद दिगम्बर जैन ग्रन्थ मालामें मुद्रित हैं उनका मनन होजाया करता था। व बड़ा ही अध्यात्म लाभ होता था। साथमें श्रीमती जैन महिलारत्न ललिताबाईजी भी लाभ लेतीं थी। यदि धर्मचंद्रिका कंकुबाईजी भी होती थी तो वह भी साथ बैठकर मनन करती थीं। ब्र० सीतलप्रसादजीको भी उक्त धर्मशीला बाईके निमित्तसे अच्छा आध्यात्म लाभ होता था। रत्नाकर पेलेसका जैसे सेठमाणिकचदजी रूपी एक रत्न पुरुषोंमेंसे उठ गया वैसे ही महिलाओंमेंसे मगनबाईजी रूपी एक रत्न गुमगया।

शोक सभाएं।

मगनबाईजीके स्वर्गवासकी खबर मुम्बईमें चारों तरफ फैल गई। जो सुनता था वह दिलमें उदासी ले आता था। और ऐसा अनुमान करता था कि उसका निजी कोई रत्न हमेशाके लिये गुम होगया है। ता०-१३ फर्वरीके सांझवर्तमानमें बाईजीका चित्र देकर सम्पादकने शोक प्रदर्शित किया है। उनके ये शब्द ध्यानमें लेने योग्य हैं:—

" समस्त जैन समाज एक प्रतिभाशाली और अखंड काम करनेवाली सेविकाको गुमा बैठी है।"

ता० ८ फर्वरीकी रात्रिको ही हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगमें एक शोक सभा बुलाई गई थी। उस समय बारिष्टर चंपतरायजी सभापति हुए थे। ब्रह्मचारी सीतलप्रसादजी व पंडित दरबारीलालजी साहित्यरत्नके विवेचन हुए व अन्य कालेजके छात्रोंने भी शोक प्रगट किया व नीचेका प्रस्ताव पास किया गया तब अपने हृदयका भाव प्रदर्शित करनेके लिये छात्रोंने प्रियभाषी होनेका व्रत लिया।

नकल प्रस्ताव।

'हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगके विद्यार्थियोंकी यह सभा जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहन जे० पी० के अचानक व अकाल अवसानको जानकर अत्यन्त खेद व भारी शोक प्रदर्शित करती है और उक्त बाईके कुटुंबियोंके प्रति अपनी सहानुभूति प्रगट करती है तथा स्वर्ग प्राप्तकी आत्माको शांति मिले ऐसी भावना करती है।'

ता० ९ की रात्रिको श्राविकाश्रममें एक शोक सभा जैन महिलारत्न ललिताबाईजीके सभापतित्वमें हुई उसमें भी बारिष्टर चंपतरायजी, ब्र० सीतलप्रसादजी, पं० दरबारीलालजी, शिवजीभाई देवसिंह व केसरबाई आदि श्राविकाओंके शोक सूचक व मगनबाईजीके गुणानुवाद प्रदर्शक भाषण हुए व शोकका प्रस्ताव पास किया गया व ता० १० फर्वरीको हीराबाग धर्मशालामें दिगंबर जैन युवकमंडलकी ओरसे बारिष्टर चंपतरायजीके प्रमुखत्वमें सभा होकर शोक प्रदर्शित किया गया था।

महिलारत्न पं० मगनबाईजी, पुत्री केशरबहिन व पौत्री वचूबहिन।

ता० ११ फर्वरीको श्राविकाश्रमके स्थानपर स्त्रियोंकी पबलिक सभा गंगास्वरूप बहनकोरबाई देवीदासके सभापतित्वमें की गई। मुम्बई नगरकी तरफसे शोक प्रस्ताव पास हुआ। उसी समय ३००) भर गया व फंड एकत्र करनेको एक कमेटी बनाई गई। सूरत, अहमदावाद, दाहौद, ईडर, रतलाम, मथुरा, रोहतक, सिकंदराबाद, देहली, पानीपत, वर्धा, ललितपुर इत्यादि अनेक स्थानोंमें शोक सभाएं हुई।

श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीने मगनबाईजीके गुणोंको स्मरण कर एक लावनी रची जो नीचे मुद्रित है—

जगत दृश्य और मगनबाई।

देख क्षणिक सब दृश्य विश्वके, सत्‌स्वरूप चिंतन करलो।
मोह शोक सब त्याग आपमें, साम्यभाव निशदिन धरलो॥
बड़े बड़े सम्राट् वीर योद्धा, इस जगमें आते हैं।
कर्तव करते अहंकारके, खूबी रंग मचाते हैं॥
आन बजे बाजा यमका, सब छोड़ एकले जाते हैं।
क्षणभंगुर यह जीवन है, यह पाठ सत्य सिखलाते हैं॥
इम जान सफलकर जीवनको, निजमें ही निजताको धरलो॥१॥

जन जाति नारी शिक्षा विन, जीवन दुखद बिताती थी।
कन्याओंकी शिक्षा तब, अपशकुन सी समझी जाती थी॥
तब ही ले तलवार सुशिक्षा, मिटा दिया अज्ञान महा।
घर घर फैली चर्चा विद्या, फलीभूत पुरुषार्थ लहा॥
वह है वीर रत्न महिला, उसका कर्तव सुमरण करलो॥२॥

विधवा हो उन्नीस वर्षमें, संस्कृतका अभ्यास किया।
जैनधर्म ग्रंथोंको पढ़ हिय, रत्नत्रय परकाश किया॥
धनशीला पुत्री होकर भी, सब विलास परित्याग किया।

देश, देशमें दौरा करके शिक्षा जमघट जमा दिया ॥
विधवा हित खोला आश्रम पहला यह कारज चित धरलो ॥३॥

निर्त्ता दिये पच्चीस वर्ष, अनुपम सेवाके करनेमें ।
तन मन धन न्योछावर करके, जैन जाति हित करनेमें ॥
महिला परिषद संचालन कर, 'महिलादर्श' चलाया है ।
जैन जाति महिलाओंमें शुभ लेखन तत्र वढ़ाया है ॥
श्रेष्ठी माणकचद सुपुत्री मगन नारि गुण हिय धरलो ॥४॥

खद्दर मोटा पहनके जिसने, संयममें दिलको डाला ।
शुद्धाहार विचार शुद्धकर शीलधर्मको सत् पाला ॥
अध्यातम रसपान पानकर, समयसारदधि मथ डाला ।
रख प्रसन्न आतमको निशदिन जैन तत्त्वफल चख डाला ॥
कर प्रमादका चूर्ण भविकजन, तुम भी यह साहस करलो ॥५॥

है जीवन बहु समयोंका नहिं वृथा गमाना है अच्छा ।
स्वातम तत्व समझकर निजमें निजका सुख पाना अच्छा ॥
स्वार्थ त्यागकर जाति देशकी, सेवा कर जाना अच्छा ।
तिरस्कार निन्दा आपत्से, विचलित नहिं होना अच्छा ॥
"सुखसागर" में मगन रहो, हो वीर कर्मरिपुको हरलो ॥६॥

स्मारक फंडमें । मुम्बई स्त्री समाजने जो स्मारककी योजनाका प्रस्ताव पास किया था उसमें यही उद्देश्य रक्खा था कि मगनबाईजीकी इच्छा पूर्ण की जावे। बाईजीकी मरते दम तक यह इच्छा रही कि श्राविकाश्रमका ९१०००) का फंड तो मेरे जीवनमें होगया है मात्र ९०००) की कमी है सो किसी तरह पूरी की जावे। इस इच्छाकी पूर्तिके लिये श्रीमती ब्र० श्री० कंकुबाई व ललिताबाईजीने प्रयत्न करके जो चंदा भराया वह नीचे भांति है:-

स्व० मगनव्हेन जे० पी० स्मारक फंड

१००१)	अ० सौ० लीलीबेन पानाचद हीराचंद	
५०१)	स्व० ललिताबाई ठाकोरदास पानाचन्द	,,
५०१)	श्री० ब्र० धर्म० कंकुब्हेन हीराचंद	सोलापुर
५०१)	अ० सौ० केशरबाई चंदुलाल जेचन्द	मुम्बई
५०१)	,, ,, कमलाबाई रामचन्द मोतीचन्द	,,
५०१)	श्री० ललिताब्हेन मूलचन्द	,,
५०१)	अ० सौ० सगुणाबाई सुरजमलजी हरनंदनराय रुईआ	,,
२०१)	श्री० जड़ावबाई चुन्नीलाल जवेरचन्द	,,
१५१)	श्रीमतीबाई तवनप्पा गरगट्टे	,,
१०१)	अ० सौ० माणेकबाई हीरालाल जेचन्द	,,
१२५)	श्री० पंडिता चन्दाबाईजी	आरा
१०१)	,, लक्ष्मीबेन करमसी रामजी	मुम्बई
१०१)	,, सुवटादेवी रामनारायणजी रुईआ	,,
५१)	अ० सौ० शान्ताबाई राजा गोविंदलाल	,,
५१)	,, ,, चंदनबाई अमरचंद चुनीलाल	,,
५१)	श्री० ब्र० राजुबाई श्राविकाश्रम	सोलापुर
५१)	श्रीमतीबाई कोकीळ श्राविकाश्रम	सांगली
५१)	अ० सौ० रतनबाई जीवराज गौतमचद	सोलापुर
५२।=)	र० रु० श्राविकाश्रमकी श्राविकाओंकी तरफसे	बम्बई
३१)	सौ० नन्दकोरबाई चुन्नीलाल हेमचन्द	,,
२५)	श्री० ब्हेनकोरबाई देवीदास जीणाभाई	,,
२५)	,, चम्पाबाई लल्लुभाई प्रेमानंददास	,,
२५)	,, माणेकब्हेन	धाराशीव
२५)	,, मेनांब्हेन	तारापुरकर
२५)	,, दा० केसरबाई दयाचन्दसा	बडनाह
२१)	अ० सौ० लक्ष्मीबाई विष्णुपंथ मीठाराम	बम्बई
२०)	अ० सौ० राजकुमारी पीसी राजा नारायणलाल बसीलाल	,,

१५) श्रीमती मणीबेन हेमचन्द अमरचन्द
१५) ,, मेनाबेन नरोत्तमदास
१५) ,, प्रधानबाई चुन्नीलाल प्रेमानंद
१५) ,, नवलबाई
१५) ,, माणेकबाई अमरचन्द
१५) बाईओ तरफथी ह० सुरजमल लल्लुभाई
११) श्रीमती भीमाबाई दावल
११) अ० सौ० चन्दनबाई त्रीभोवनदास रणछोडदास
११) अ० सौ० समरतबाई डाह्याभाई प्रेमचन्द
१०) अ० सौ० केशरबाई अमृतलाल रायचन्द
१०) सौ० चचलबाई वालचन्द
५) अ० सौ० ञाताबाई दरबारीलाल जैन
५) श्रीमती लक्ष्मीबाई पुनमचन्द
५) सौ० चपावती हीरालाल दलाल
५) श्रीमती प्रभावतीबाई शीतलशाह — थलकापुर
५) ,, चम्पावतीबाई गंगासा — कारजा
२) ,, नवलबाई नगीनदास — मुम्बई
५) ,, देवकाबाई आणंदजी — ,,
५) ,, गोपीबाई — बड़वाह
५) सौ० मागीबाई धर्मपत्नि गेंदालाल — सनावद
१०१) श्री० मोतनबाई हरजीवन रायचन्द — आमोद
१०१) सौ० कस्तुरबाई सेठ बालचन्द हीराचन्द — मुंबई
५१) सौ० रमीबाई कामदार — ,,
५) सौ० प्रभावतीबाई दीपचन्द शाह — ,,
५) सौ० गुलाबबेन मकनजी महेता — ,,
५) सौ० सुन्दरबाई सिंगई पन्नालालजी — अमरावती
२५) श्री० श्रीवदेवम्मा — बेंगलोर
५) श्री० नागम्मा अ० पाली शामण्णा — म्हैसुर

५)	बाईओ तरफथी	,,
२५)	श्री० कंचनबाई श्राविकाश्रम	इन्दौर
१)	सौ० लक्ष्मीबाई जगमोहनदास	मुम्बई
१०१)	सेठ रामेश्वरदासजी बीडलाकी माता	बम्बई
१०१)	रावसाहेब सेठ रवजी सोपालजीकी माता	,,
५१)	सौ० नवलबाई गुलाबचन्द हीराचन्द दोशी	सोलापुर
५१)	सौ० ताराबाई माणेकलाल प्रेमचंद रायचंद	बंबई
५१)	सौ० महादेवीजी आनंदीलालजी पोद्दार	,,
५१)	सौ० कासीबाई मनसुखलाल वहेचरदास चोकसी	,,
२५)	सौ० सकुन्तलाबाई मनमोहनदास माधवदास अमरसी	,,
५)	सौ० रुखीबाई जेसींगभाई मोहनलाल	,,
५)	श्रीमती लीलावती कीकाभाई प्रेमचन्द	,,
५)	श्रीमती सुलाबाई	फटनी
५)	सौ० हरिबाई वीरचन्द पानाचन्द	माटुंगा
५)	सौ० सविताबाई मूलचन्द किसनदास कापड़िया	सूरत
५)	श्रीमती पारवतीबाई	धामपुर
१)	श्रीमती मुनीदेवी	,,
१)	श्रीमती गुणवन्तीदेवी	,,
५)	श्री० परसनबाई गुलाबचन्द दमणीआ	बम्बई
५)	सौ० वेलबाई नानजी लधाभाई	,,

६३०८।=) कुल।

सूरतमें स्मारक फंड। सेठ मूलचंद किसनदास कापड़ियाजीने भी जैनमित्र, दिगम्बर जैन तथा जैन महिलादर्शके पाठकोंसे अपील करके एक स्मारक फंड खोला, इसमें १०१) रुपये दिये व ११) ब्र० सीतलप्रसादजीने दिये। इस चंदेकी पूर्ण सूची प्रारंभमें प्रस्तावनामें दी गई है।

श्रीमती जैन महिलारत्न पं० ललिताबाईने अपनी सहयोगिनीके वियोगमें एक कविता रचकर जैन महिलादर्श अंक ११ वर्ष ८ में प्रगट की है। सो नीचे प्रमाण है:—

ललिताबाईके हृदयोद्गार।

मगनबहिनके विषयमें मेरे उद्गार।

तबसे थी चिंता भारी जबसे मेघावृत गगन हुआ।
वज्रपातके भयसे मेरा हृदय दुःखका सदन हुआ॥
हुई जरा आशा जब देखा नभमें मेघ बिखरते हैं।
आकर पुण्य पवनके झोके मेघोंका बल हरते हैं॥ १॥
लगभग हुआ निरभ्र गगन था चिंता हटती जाती थी।
नव आशा इस भैगन हृदयमें हिम्मत भरर लाती थी॥
किन्तु दैवने घोखेमें ही दिया हाय ऐसा झटका।
कोई सम्हल न पाया उसने उठा धरा पर दे पटका॥ २॥
रही ठगीसी हुआ जब कि बिन 'मगन' सदन जीवन मेरा।
सब कुछ रहते गया सहारा उजड़ गया मेरा डेरा॥
अबलाओंका एक निरंतरका अवलम्बन छूट गया।
इस आश्रम शरीरका मानो मेरुदण्ड ही टूट गया॥ ३॥
नारी शिक्षा शब्द जब कि लोगोंका दिल था दहलाता।
नारी शिक्षण दुर्गुण या वैधव्य अङ्ग था कहलाता॥
जन्मसिद्ध अधिकार छिना था ऐसा असमय आया था।
तब ही मगन बहिनने शिक्षाका झण्डा फहराया था॥ ४॥
तन मन धनसे और वचनसे की समाजसेवा जिसने।
अबलाओंको सदा खिलाया शिक्षाका मेवा जिसने॥
निःसहाय शिक्षाविहीन अबलाओंकी जो भगिनी थी।
एक महाकविके शब्दोंमें वह गुर्जर तपस्विनी थी॥ ५॥
दो तन और एक मन बनकर हम दोनों ही जीवनभर।
रहीं किन्तु अब आया बोझा मेरे ही आधे तनपर॥

एक तरफ दुर्दैव हमारे सिरपर सा है खड़ा हुआ।
एक तरफ नारी शिक्षाका काम अपरिमित पड़ा हुआ।
मगन बहिनने जिनपर था अपना जीवन उत्सर्ग किया।
अपने मृत या अमृत बनानेका उनको ही भार दिया॥
क्या वे बहिनें मगन बहिनकी करेंगी ना इच्छा पूरी।
हो दृढ़ इच्छाशक्ति सफलतामें फिर क्या रहती दूरी॥ ७॥
जिस सुकार्यके लिए मगन चिंतामें मगन बनी रहती।
सुखमें दु:खमें हर हालतमें जिसके लिए सदा कहती।
उसकी पूर्ण सफलता बहिनें निश्चय करके दिखलादें।
मुझको भी तनसे मनसे धनसे वे सदा सहारा दें॥ ८॥

पंडिता चन्दाबाईने बड़े ही मार्मिक शब्दोंमें बाईजीका स्मरण किया है। उनका एक लेख महिलादर्श अंक ११ वर्ष ८ में मुद्रित है जो नीचे प्रमाण है:—

पं० चन्दाबाईका स्मरण।

मृत्यु-यह कैसा डरावना शब्द है, इसके भीतर कितना मालिन्य व कितना शोक भरा है! यह संसारी जीवोंको समय२ पर भलीभांति अनुभव होता रहता है। इसको विजय करनेके लिये जन समूह जन्मभर यत्न करते रहते हैं, इसीको भगानेके लिये बुरीसे बुरी और तीखीसे तीखी औषधियां खाई जाती हैं तथा औपरेशन कराये जाते हैं व लाखों रुपये खर्च कर मृत्युको जीतनेका यत्न करते हैं। केवल औषधियां ही सेवन नहीं की जातीं वरन् इसके भयसे लोग देश और घर तक छोड़ देते हैं। कभी२ महामारी आदिके समय अपने लड़के बच्चोंतकको छोड़कर भाग जाते हैं। परंतु यह मृत्यु बड़ी ही कर्तव्यमई है। आयुकर्म पूरा होते ही लेजाती है।

गुप्तसे गुप्त स्थानोंमें क्षणभरमें इसका प्रवेश होजाता है। यह समस्त औषधि उपचारोंको पददलित करके मनुष्यके पास आकर खिलखिलाकर हंस देती है और जता देती है कि तुमने मेरा सामना करनेमें बड़ी भूल की है। व्यर्थ ही इतना धन व्यय किया, व्यर्थ ही इतनी चिन्ता की और व्यर्थ ही प्रभुस्मरणको छोड़ा, मैं तो अजेय हूं। मुझे तो केवल अर्हन्तने जीता है, मोक्षमें विराजमान परमात्माओंने जीता है। भला तुम्हारे समान पामर मनुष्य मेरा क्या कर सकते हैं। मैं तुम्हें पलभरमें पीस दूंगी। परन्तु यह मोही प्राणी मृत्युदेवीके उपदेशको धारण नहीं करता और सदैव स्वपर मृत्युके सन्तापसे परितप्त रहता है। समयसारजीमें भी लिखा है–

देहात्मबुद्धिर्देहादौ, व्युत्पश्यन् नाशमात्मन.।
मित्रादिभिर्वियोगश्च, विभेति मरणात् भ्रशम्॥

अर्थात्–जिसने देहको ही आत्मा समझ लिया है ऐसा मोही प्राणी, अपना और मित्रादिका वियोग जानकर मृत्युसे अत्यन्त डरता है।

यही दशा आज हम लोगोंकी होरही है। श्रीमती जैन महिलारत्न मगनबाईजी जे॰ पी॰ बम्बईकी आसामयिक मृत्यु हृदयको विदीर्ण कर देती है, उनकी पवित्र स्मृतियां हृदयका कांटा बन रही हैं, भय होता है कि क्या मिथ्यात्त्वका अनुभव होरहा है, परन्तु फिर ध्यान होता है कि नहीं, यह मगनबाहिनके शरीरका शोक नहीं है, यह उनके परोपकारकी स्मृति है, यह उनके निःस्वार्थ सेवाका ध्यान है। यह उनके गुण समूहोंका परिज्ञान है।

हम लोग साधारण मनुष्योंकी तो बात ही क्या है, भरत

महाराज जो कि परम विरक्त और परम सम्यक्दृष्टि थे, उनको भी उस समय शोक हुआ था जबकि भगवान् श्री १००८ आदिनाथ स्वामीको मोक्ष हुआ था, उस समय गणधर देवोंने भरत महाराजको समझाकर शान्त किया था।

यह आवागमनका चक्र अनादिकालसे हम लोगोंको व्यथित कर रहा है। एक मृत्युसे आकर इस मनुष्य पर्यायमें हम लोगोंने जन्म लिया है और दूसरी मृत्युका समय निकट आरहा है। उसके बीच२ में भी यह दैव दूसरोंके बहाने दुखा देता है। सांसारिक कामोंको गौण करके सेवाधर्ममें हमने श्रीमती मगनबाईजीका सहारा लेकर कार्य प्रारम्भ किया था। जैन स्त्रीसमाजकी सेवा करनेमें उनके साथ समय लगातीं रहती थीं। कितने ही कार्य ऐसे थे जिनको कि वे हमारे विना नहीं करती थीं और हम उनके विना नहीं कर सकतीं थीं, दोनोंके सहयोगसे वे होजाते थे। किन्तु वे कार्य, वे सेवाएँ आज यों ही पड़ी रहेंगी, श्रीमतीजीका स्थान कोई भी व्यक्ति पूरा करदे, ऐसी आशा नहीं है।

जितनी लगन श्रीमती मगनबाईजीके हृदयमें थी, जितने कष्ट सहन करके जैन समाजमें उन्होंने सेवाके कार्य किये हैं, यदि ऐसी महिला भारतसे बाहर विदेशोंमें होती तो आज समस्त पृथ्वीपर उसका नाम प्रसिद्ध होजाता। कितने कवि और कितने ही इतिहास-लेखक उसके गुणोंका वर्णन कर पुण्य स्मृतियां लिखते जो कि हजारों वर्षों तक पढ़नेकी सामग्री होजातीं।

परन्तु श्रीमतीजीका जन्म भारतवर्षकी एक सर्वोत्तम प्राचीन किन्तु अल्पसंख्यक जातिमें हुआ था, जो कि अपने पूर्वजोंका

गुणानुवाद करनेमें असमर्थ है। यही कारण है कि श्रीमतीजी भारतमें ही लब्धप्रतिष्ठ रही आई। अभी हालमें गवर्नमेंटने आपको जे० पी० अर्थात् 'शांतिका जज' की पदवी देकर देशका कुछ ऋण चुकाया था। इसी प्रकार समाजने भी जैन महिलारत्नकी पदवी देकर कृतज्ञता प्रगट की थी, परन्तु यह तो रही बड़ों२ की बात, लेकिन जो हमारे समान छोटे२ मनुष्य हैं वे अब किसप्रकार इस स्वर्गीय आत्माके उपकारोंका बदला चुकाएँ, किस प्रकार अपने ऊपर लदे हुए ऋणोंको किसी रूपमें उतारकर आत्मशांतिका लाभ लें, समझमें नहीं आता है। श्रीमती मगनबाईजीका उपकार भारतवर्षके कौने२ में व्याप्त है। जहां२ जैन जनता है, जैन स्त्री समाज है वहीं२ श्रीमतीजीका उपकार पहुंच चुका है, वे सब नारियां तड़फ रही हैं। हम दुर देशवासियोंको आपके अंतिम दर्शन भी नहीं होसके, यह अत्यन्त खेदका विषय है। आपने श्राविकाश्रम बंबईमें उसके जन्मदिनसे साथ रहकर अपनी सेवाओंसे उसे परिपुष्ट कर दिया था, परन्तु जब अपनी सेवा करानेका समय निकट आया तब आप आश्रमको छोड़कर लोणावला चली गई और वहां केवल अपनी सुपुत्री केशरबाई आदि दो चार जनोंको ही सेवाका लाभ लेने दिया। अस्तु! अब श्रीमतीजीका वह शरीर व दिव्यतेज, वह मधुरवाणी हम लोगोंको कदापि नहीं मिल सकती है, तौभी उनका यश, उनकी आज्ञाएँ सदा अमर हैं। उन्हींका पालन कर हम लोग किसी प्रकार किसी अंशमें उऋण होसकती हैं। और जन्म मरणसे दूर जो ध्रौव्य आत्मा है उसको सेवा अर्पण कर सकती हैं। उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

१–एक कोई उत्तम स्मारक श्रीमतीजीके नामसे स्थापित किया जाय। जिस प्रकार उनके पिता सेठ माणिकचन्दजीके नामसे परीक्षालय व ग्रन्थमाला चलती है।

२–श्राविकाश्रम बंबईके फण्डको विस्तृत किया जाय और वह रकम स्मारक स्वरूप जमा हो।

३–श्रीमतीजीका जीवनचरित्र उत्तमतासे खोजके साथ लिखा जाय।

४–श्राविकाश्रम बंबईके बगीचेमें आपका एक मैमोरियल बनाया जाय।

५–जितनी जैन कन्या पाठशालाएँ व श्राविकाश्रम हैं उनमें आपका बड़ा चित्र रखा जाय और प्रतिवर्ष पुण्यतिथी मनाई जाय। इन कार्योंके होनेपर हमलोग उस समाजसेविकाकी कुछ कृतज्ञा होसक्ती हैं।

इन कार्योंमें किसी महिलाको शिथिल न होना चाहिये। क्योंकि ये कार्य निरर्थक नहीं है, परम्परासे चले आये हैं–"गुणिषु प्रमोदम्" का यही वास्तविक अर्थ है। किसी गुणीका आदर करना, उसका नहीं, वरन् गुणोंका ही आदर करना है।

जो मनुष्य गुणोंका आदर नहीं करता, केवल छिद्रोंको ही देखता है वह चलनीके समान है। गुण तो उसके हृदयमें ठहरते नहीं, केवल कंकड, पत्थरके समान दोष अटके रह जाते हैं। इस-प्रकारका स्वभाव हानिकर होता है। महिलाओंको चाहिये कि वे श्रीमती मगनबाईकी निःस्वार्थ सेवाओंको लक्ष्य कर उनका स्मारक बनायें, उनके समान परोपकारिणी बनकर पुण्यकी भागी बनें, मनुष्य जीवनका कर्तव्य पालन करें।

स्त्रियां भी पढ़ लिख सकती हैं, स्त्रियां बड़े२ काम कर सक्ती हैं, इस बातका पाठ स्वर्गीय मगनबाईसे सीखें। बड़े२ घरोंमें सैकड़ों स्त्रियां रोज मरती हैं, परन्तु कोई नाम भी नहीं लेता, वरन् विधवायें भार स्वरूप होजाती हैं। परन्तु आज हम सब श्रीमतीजीके लिये क्यों विलख रही हैं? आज सैंकड़ों छात्राएँ माताके समान मानकर उनका शोक क्यों कर रही हैं? केवल उनके उपकारसे, उनकी सच्ची सेवासे, उनके सरल पवित्र स्वभावसे। अन्तमें हम श्री देवाधिदेवसे प्रार्थना करती हैं कि जिस मृत्युने श्री० मगनबाईजीको कवलित कर हम सबोंको अधीर बनादिया है, उस मृत्युको श्रीमतीजी दो तीन भवोंमें ही जीत लें। और आवागमन रहित मोक्ष सुखकी भागी शीघ्र बने तथा इस समय स्वर्ग सुखका लाभ कर भगवत् भक्तिका लाभ करें। साथ ही कुटुम्ब वर्गोंको धैर्य प्रदान करें और श्रीमतीजीकी शिष्यासमूहको उसी प्रकार निःस्वार्थ सेवाधर्मका शरण देकर शांति प्रदान करें।

बम्बईकी सभाओंका स्मरण।

ता० २६ मार्च १९३० को बम्बईकी अनेक संस्थाओंकी तरफसे एक पबलिक सभा बम्बईमें मिली थीं। सभाका आसन ताराबाई माणकलाल प्रेमचंदने ग्रहण किया था। सभापतिने ५१) स्मारकमें भी दिये। जो प्रस्ताव पास किया वह इस तरह है—

" स्त्रियोंकी उन्नति तथा कल्याणके लिये श्राविकाश्रम जैसी संस्थाके आद्य संस्थापक श्रीमती मगनबहनके अवसानके लिये गुजराती हिंदु स्त्री मंडल, जैन महिला समाज, भगिनी समाज, शांताकुंजकी शाखा वनिताविश्राम, राष्ट्रीय स्त्री सभा, पाटीदार स्त्री

मंडल, आर्य स्त्री समाज, माधवबाग सत्संग मंडलके आश्रय नीचे मिली हुई यह सभा शोक प्रदर्शित करती है। इस बहनके अवसानसे स्त्री समाजमें भारी खोट पड़ी है। आजकी सभा शोक भरी हुई रीतिसे इस बातको समझ रही है तथा सद्गतिमें जानेवाली आत्माको अक्षय शांति मिले ऐसी प्रार्थना यह सभा प्रभुके प्रति करती है।

मगनबहिनका उपकार। सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया सुरतकी धर्मपत्नी सवितावाई जिनका अकाल मरण २१ जुलाई १९३० को २२ वर्षकी आयुमें हुआ व जो एक पुत्र व एक पुत्री छोड़के गई हैं, श्रीमती मगनबाईजीके आश्रयसे श्राविकाश्रममें रहकर धर्मका अभ्यास किया था इसीसे वह जीवनभर धर्ममें प्रेमालु रही थी।

आफ्रिकावासी जैनोंका भाव। आफ्रिकाके कम्पाला गांवमें मोहनलाल मथुरादास शाह काणीसाकर रहते हैं। उन्होंने जो पत्र मगनबाईकी गुणावलीको कहते हुए "दिगम्बर जैन" वर्ष २३ अंक ६ (वीर सं० २४५६)में भेजा है सो नीचे प्रकार है—

पूज्य मगनबहेनने निवापांजली !

लखतां लेखिनी सळकी पडे छे, शरीर स्थिर रही शकतुं नथी, मन कल्पांत करे छे, नयन आंसु सारे छे, ने हृदय फाटी जाय छे के—जैन धर्म रत्न—जैनकुलभूषण भारतमहिला उद्धारक—आदर्श स्त्रीरत्न—विदुषी मगनबहेन जे० पी० ना अकाळे अवसाननी नोंध लखवी पडे छे.

अत्यारे हुं हिंदथी घणे दूर छुं, पण ज्यारे हिंदमां हतो, त्यारे बारेक वर्ष उपर पूज्य मगनब्हेनने जाते जोयां हशे, त्यारे पण मैं

तेमना मुखारविंदपर समाजोद्धार, अबळाउद्धार, धर्मोद्धारनी जे लागणी जोएली छे, तेमना मुखथी जे बे शब्दो सांभळेला छे, ते बगश मारी कल्पना बहारनी हती, तेनुं वर्णन करवाने मारी लेखिनी सामर्थ्यवान नहोती.

जैन समाजनुं नशीब फुटेलुं हशे के पछी श्राविकाश्रमनी शिष्याओने पुज्य मगनबहेनना संसर्गथी दूर रहेवानुं निर्मायु हशे, तेथी मगनबहेननी तबीयत बगडी, ने तेमने लोणावला रहेवुं पड्यु. ते दुष्ट काळे, तेमने त्यांज झडपी लीधां. मरण दरेकने आववानुंज छे, पण आवा समाजोद्धारक रत्नोनुं मरण जरुर दरेकने दुखकर्ताज निवडे छे. कह्युं छेः—

लाख मरजो, पण लाखनो पाळनार न मरशो !

—ए कहेवत सत्य छे, ने ते आजे आपणने मगनबहेननी गेरहाजरीमां जणाशे, भारत जैन महिला परिषदे, श्राविकाश्रम अने समग्र जैन समाजने मगनबहेननी खोट अचुक लागशे.

श्री न्यायी परमात्मा पासे आपणे एज इच्छीए छीए के तेमनी जग्याए तेवीज विदुषी बहेन आपणने प्राप्त थाओ, अने समाजने लाभकर्त्ता निवडो.

माणेक जेवा वैभवशाळी पितानी पुत्री होवा छतां जे बहेने सादाई अने सच्चारित्रनो अमुल्य पोषाक धारण करी आखा स्त्री समाजपर नहि, पण आखा मानव समाजपर जे उच्च संस्कारोनी ऊंडी छाप पाड़ी छे, ते जे माणस हशे, ते तो भूली नहि जाय.

गुजरातनी अज्ञान दि० जैन स्त्री समाजने सुव्यवस्थित अने धर्मने रस्ते दोरवानुं मान कोई पण पात्रने होय तो ते स्वर्गीय मगन-

बहेननेज छे. कारण के जगत मात्रमां संसारने सुधारनार के बगाडनार स्त्रीज छे. ने ते स्त्रीओ रूपी संसार सारथीओने मगनबहेनेज उपदेशथी सुधारेलां होई उच्च चारित्रनो पण तेमणेज छाप पाडी छे.

कोईपण देशनी उन्नतिनो आधार स्त्री शिक्षापर रहेलो छे. ने तेथीज प्रख्यात सम्राट् नेपोलियनने कहेवुं पड्युं छे के—

> कहे नेपोलियन देशने, करवा आबादान।
> सरस रीत तो एज छे, द्यो माताने ज्ञान॥

ए नेपोलियननुं वाक्य पूज्य मगनबहेने यथार्थ करी बताव्युं छे. मगनबहेने गुजरातमां जैन श्राविकाश्रम खोली, जैन समाजपर अनहद उपकार करेलो छे. तेमना कार्योनी नकल बीजे घणे स्थळे थएली होई तेमणे समग्र भारतवर्षमां स्त्री शिक्षानी नींव नांखेली छे, एम कहीशुं तो ते अतिशयोक्ति गणाशे नहि.

पिताने मळेलो मानवंतो इलकाब पण सुशील स्वर्गीय बहेन मेळववा भाग्यशाळी थयां हतां, अर्थात तेमना परोपकारनां कार्योथी अने सत्यपराणताथी आकर्षाई मुंबईनी सरकारे तेमने जे० पी० नो मानवंतो इल्काब आप्यो हतो. जैनो माटे ए ओछा हर्षनी वात नहोती, के ज्यारे बीजा समाजोमां पण जे० पी० थएला पुरुषो गण्या गांठ्या हता, त्यारे जैन समाजमांथी मगनबहेन जेवां विदुषी बहेन जे० पी० थयां हतां.

भारत जैन महिला परिषद् स्थापवामां मगनबहेनेज आगेवानीभर्यो भाग लई घणी महेनत कीधी हती. जो के ते संस्था आपणा गुजरात प्रांतमां ओछी जाणीती छे, पण तेणे उत्तर हिंदुस्तानमां तो घणीज प्रगति करेली छे.

मगनबहेन गुजरातमां जेटला जाणीतां छे, तेथी पचीस घणां हिंदुस्ताननां बीजा भागोमां जाणीतां छे.

मगनबहेन धर्मात्मा होवा साथे व्यवहारकुशळ पण हतां, तेमना सहवासमां रही जे बहेनोए अभ्यास कर्यो छे–धर्म लाभ लीधां छे, ते तेमना वाक्चातुर्यनां वखाण कर्या सिवाय रहेतां नथी.

मगनबहेन चारित्रनी मूर्ति होई तेमना ऊंचा चारित्रनी छाप तेमनी शिष्याओ उपर एटली पडती के तेमना शिष्यवर्गमांथी भाग्येज कोई अयोग्य वर्तनशाली हशे.

जगतमां जैनसमाजने शोभा आपनार महिला मात्रमां मानवंता, हिन्दुस्तानमां श्राविका शिक्षणनी पहेल करनार मुंबई श्राविकाश्रम अने भारत जैन महिला परिषद्ने तन, मन, धन अर्पण करनार जैन महिलारत्न विदुषी मगनबहेनना अमर आत्माने प्रभु शांति आपे एज इच्छा छे !

हिंदुस्ताननां जैन मात्रनी फरज छे के मर्हुमना नामनी यादगीरीमां तेमना नामनुं एक स्मारक फंड सुरतमां खोलवामां आव्युं छे तेमां यथाशक्ति मदद करवी ए आपणी फरज छे ने ते फरजमांथी गुजरात नहीं चुकशे एम आशा राखुं छुं ने हुं पण ५१) नी तुच्छ भेट आपुं छुं.

प्रभु मर्हुमना आत्माने शांति आपे एज इच्छा.

लखनार हुं छुं दुःखित—
मोहनलाल मथुरादास काणीसाकर
कम्पाला–(युगान्डा, आफ्रिका).

जैन महिलारत्न पं० ललिताबाईजी, जैन महिलारत्न पं० मगनबाईजी और धर्मचंद्रिका ब्र० कंकुबाईजी।

श्रीयुत वालचन्द देवचन्द शाह बी० ए० शोलापुरने मगनबाईजीकी सेवाकी प्रतिष्ठामें जो लेख मराठीमें 'जैन बोधक' फेब्रुआरी १९३० में छपाया है वह उपयोगी जानकर प्रगट किया जाता है—

एक मराठी ग्रेजुएटका हृदय।

श्री० पं० मगनबाई यांचें शोचनीय निधन.

श्री० मगनबाई यांच्या स्वर्गवासाची बातमी आकस्मिक रीतीनें आज ऐकावयाला मिळाली. मगनबाई या अलीकडे बरेच दिवस अजारी होत्या. ही गोष्ट खरी. तथापि हवाफेरीसाठीं त्या लोणावळ्यास गेल्यापासून त्यांचा प्रकृतींत सुधारणा होत आहे, अशीच बातमी आतांपर्यंत कानीं येत राहिल्यामुळें त्या लवकरच पूर्ण निरोगी अशा स्थितींत आपणांस भेटतील अशी आशा मनांत वाढत असतां त्या आशेवर कुऱ्हाड पडून त्यांचा मृत्यूचीच बातमी ऐकायला आल्यामुळें कोणाच्याहि अंतःकरणास धक्का बसल्याखेरीज राहणार नाहीं.

मगनबाईची योग्यता स्त्रीसमाजांत विशेषतः आपल्या दि० जैन स्त्री समाजांत फार मोठी आहे. आपल्या समाजाच्या व विशेषतः स्त्री वर्गाच्या उन्नतीसाठीं स्वतः वाहून घेणाऱ्या जैन समाजांतील त्या पहिल्याच समाज सेविका होत. स्त्रियांना समाजसेवाचा मार्ग त्यांनीं घालून दिला स्त्रीवर्गावर त्यांचे अनंत उपकार झालेले आहेत. मगनबाई या आपल्या समाजांत एक रत्न होत्या एवढें म्हटलें तर त्यांच्या मोठेपणाची कल्पना आपणांस येईल. त्यांना "जैन महिला रत्न" अशी पदवी होती.

मगनबाईचे वडील स्वर्गवासी शेठ माणिकचंद पानाचन्द यांचें नांव माहित नाहीं अशी एकहि व्यक्ति आपले समाजांत नसेल. शेठ माणिकचन्द यांनीं आपल्या समाजाच्या उन्नतीसाठीं तनमनधनानें किती प्रयत्न केले आहेत याची साक्ष आपणांस ठिकठिकाणीं पाहावयास मिळेल. अशा पुण्य पुरुषाच्या पोटीं मगनबाई यांनीं व्यर्थ जन्म घेतला नाही. तर वडिलांचाच कित्ता गिरवून त्यांनीं आपली व आपल्या वडिलांचीहि कीर्ति अजरामर करून ठेविली आहे. मगनबाई यांनीं मुम्बईस जैन स्त्रिया व मुली यांच्या शिक्षणासाठीं एक श्राविकाश्रम स्थापून त्यास स्वतःस वाहून घेतलें. सदर श्राविकाश्रम आज जो इतक्या नांवारूपास आला तो मगनबाई मुळेंच होय. येवढेंच नव्हे तर ठिकठिकाणीं असे श्राविकाश्रम व श्राविका विद्यालयें दिसतात ती त्यांच्या प्रोत्साहनाचीच फळें होत, त्यांची ही निस्वार्थी सेवा सरकार दरबारींही रुजू होऊन सुमारे दोन वर्षापूर्वी सरकारनीं त्यांस जे० पी० 'जस्टिस ऑफ दी पीस' केलें. जैनस्त्रियांत हा मान मिळालेल्या मगनबाई या पहिल्याच व एकट्याच आहेत. असो. मगनबाई सारख्या समाज सेविकेचा मृत्यु ही एक आपल्या जैन समाजावर मोठी आपत्तीच आहे. मरण कोणाला चुकत नाहीं, हें खरें असलें तरी अकालीं मरण येऊन आपल्यांतली असलीं कर्ती माणसें आपणास असहाय ठेऊन सोडून जावीत, हें आपल्या समाजाचें मोठें दुर्दैव आहे.

यांच्या निधनानें यांच्या मुलीस व यांच्या कुटुंबीयजनास जें दुःख झालें त्यांत आम्ही सहभागी आहोत.

वालचन्द देवचन्दजी शहा. बी० ए०

मगनबाईजीके शोकमें बाहरसे बहुतसे स्त्री पुरुषोंने सहानु-
सहानुभूतिका भूति सूचक पत्र भेजे थे, उनमेंसे कुछोंको हाल
कुछ सार। यहां दिया जाता है—

(१) श्रीमती दानशीला केसरबाई बड़वाहा, ता० १७-२-३० "हम लोग तो गड्ढेमें पड़े थे सो उन्हीं स्वर्गवासी मातुश्रीजीने रास्ता बताया था। उनके उपकारको हम भव२में भूल न सकेंगे।"

(२) श्रीमती धर्मचंद्रिका कंकुबाई कारंजा १३-२-३०, "कमलमांथी म गयो शेष कल रह्युं—आत्मा निकली गयो अने शरीर रह्यु. त्रियोग मांथी वचन योग गयो. रत्नत्रयमांथी ज्ञान गयूं. हवे केम करवानुं. बेननो उपकार केम वाळवानो? ए तो अमर थई गई."

(३) श्रीमती सुशीलाबाई ध० प० रायबहादुर ला० सुलतानसिंह दिहली। ता० १९-२-१९३० "ऐसी स्त्रीका होना दुर्लभ है। हमारी जैन जातिका अभाग्य है जो ऐसी रत्न जाती रही। भगवानसे प्रार्थना है कि उनकी आत्माको शांति हो।"

(४) क्षुल्लकव्रती श्री विमलसागरजी (आणगपा लेंगड़े बेलगांव) आगरा ता० १९-२-१९३०।

परम सुविचारी, दूरदर्शी, महा परोपकारी, स्त्री दुःख निवारण दक्षा, अंगरेज सरकारसे जिस पदवीको आजतक किसी जैनी स्त्रीने पाया नहीं है, ऐसी जष्टिस आफ दी पीस पदवीको धारण करनेवाली, परम शांत स्वभावी, श्रीमती विदुषी मगनबहिनका कोनावकामें स्वर्गवास होगया, इस वार्ताको सुनकर मेरे आत्माको बड़े जोरसे दुःख होरहा है। क्या ऐसे परोपकारी आत्माका अकाल

देहांत होना जैन स्त्री समाजका--नहीं नहीं, किन्तु सर्व स्त्री समाजका दुर्दैव नहीं है? श्रीमती मगनबहिनने श्राविकाश्रमका ट्रष्ट किया होगा। उसी तरह उनका ध्येय आंखोंके सामने रखके धर्मशास्त्रका बंधन न तोड़ते हुए आश्रमका काम बराबर चलाना चाहिये। अब पैसा एकट्टा करनेकी कोशिस आपको नहीं करनी पड़ेगी इतना पैसा श्रीमती मगनबहिनने इकट्ठा किया है जो कि बड़े २ पुरुष इतनी कोशिस करके न कर सकते। इस प्रकारकी श्री० मगनबहिनकी चतुराई देखके बड़े२ पुरुष मुखमें अंगुली डालते हुए आश्चर्य युक्त होते थे। जिनका व्याख्यान सुनते ही स्त्री पुरुषके आंखोंमेंसे अश्रु टपकते थे। अस्तु! ऐसा स्त्रीरत्न अब इस दुनियांमें जैन समाज नहीं देख सकेगा।"

(५) सेठ करसनदास चीतलिया सर्वन्ट आफ इंडिया सोसायटी बंबई–ता० १३–२–३० "श्रीमती मगनबहिन तो पोतानी फरज पुरी करी विदेह थयां. तेमना आत्माने स्वधर्म साधवानी शांति मली. एमना देहे स्त्री वर्गने कर्तव्यनू भान दृष्टांतथी साक्षात्कार कराव्युं. तेमना संसर्गमां आवेलां सैंकड़ों मां बहिनोमां स्वार्पणथी दाटेलां तेमने जेटले अंशे अनुसरे ने स्वार्पण करे तेटलुं तेमना जीवननुं सार्थक।"

(६) श्री० अनोपदेवी ध०प० रायब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचन्दजी इन्दौर–"श्रीमतीजीके स्वर्गवाससे अकेले जैन समाजको ही नहीं सारे देशभरको भारी हानि हुई है। उनका परोपकार, उनकी दानशीलता, व धर्मवृत्ति अलौकिक थी। विद्यादानकी वो एक ही विभूति थीं।"

(७) देशसेवक छोटालाल घेलाभाई गांधी अंकलेश्वर ता० ११-२-३०। 'तेमनी सहनशीलता, गंभीरता, अने मिठासथी काम करावी लेवानी पद्धति बहु ओछी महिलाओमां जोवामां आवे छे. एमनुं ज्ञान खूब परोपकारी काम करावी एमना आत्माने परम शुद्ध बनावे एवुं हतुं अने एमना कर्तव्यथी जरूर एमनो आत्मा सिद्धिनी स्थितिने पामशेज !"

(८) सौ० लक्ष्मीबाई जगमोहनदास बम्बई. ११-२-३० 'मगनबहेने करेलां स्तुतिपात्र कामोने लक्ष्यमां राखी जो कार्य करें तो श्राविकाश्रमनी अगर बीजी कोई पण बहेनने ए एक स्त्री कार्य-कर्ता तरीके उदाहरणरूप हतां. आजे एओ स्वर्गवासी थयां छे परंतु एमना उजला कार्यप्रदेशने मुकतां गयां छे. ए कार्य ए एमनो आत्मानो रंग छे, जे आपणी अनेक बहिनोंने मार्गदर्शक थई पडशे.'

(९) श्रीमती कोकिल अधिष्ठात्री श्राविकाश्रम-सांगली। ता० १०-२-३०। "आपणास त्यानी लहानाचें मोठे केलें त्या प्रमाणे आम्हाला ही विद्या देऊन सहाणें करून आम्हावर जो उप-कार करून ठेवला आहे. त्याची विस्मृति केव्हा होणार नाहीं।"

(१०) पंडित देवकीनंदनजी जैन सिद्धांतशास्त्री व्याख्यान-वाचस्पति कारंजा (बरार)-" पूज्य स्व० धर्ममाता मगनबाईजी दुर्लभ महिला रत्नोंमें मेरुमणि समान थी। अब उनके स्थानकी पूर्ति होना अत्यन्त असम्भव दिखता है। धन्य है उस आत्माको जिन्होंने विकट परिस्थितिमें जैन समाज तथा जैनधर्मकी सेवा आरंम्भ की थी। स्वयं सेवा मार्ग आक्रमण करते हुए अन्योंके लिये आदर्श मार्गदर्शक बनी थी।"

(११) पं० अजितप्रसादजी एम० ए० एल० एल बी० जज हाईकोर्ट बीकानेर. ता० १२-२-३० ।

"I was stumed to hear of the parting or departing of our clearly beloved and respected lady-Maganbai-the pioneer worker for the uplift of Jain womanhood. She worked silently and patiently. She was dedicate and frail in body; but strong in spirits, and with the usual smile on her face talked of matters concerning the Jain Society."

भावार्थ-जैन स्त्रीसमाजके उत्थानमें अथाह परिश्रम करनेवाली मगनबाईजीके वियोगको सुनकर अति दुःखित हूं। वे शांतिसे चुपचाप काम करती थीं। वे शरीरमें निर्बल थीं। परंतु आत्माकी बलिष्ट थीं। वे हंसते मुखसे जैन समाजके संबंधमें वार्तालाप किया करती थी।

नवां अध्याय।

लेखोंका सार।

श्रीमती जैन महिलारत्न मगनबाईजी जे० पी०ने यद्यपि कोई विशेष पुस्तक संपादन नहीं की है, तथापि उनके मौखिक उपदेश व लिखित निबन्ध बड़े ही मार्मिक व मनको पिघलानेवाले होते थे। उनके लेख जैनगजट, जैनमित्र, दिगम्बर जैन व जैन महिलादर्शमें प्रचुर संख्यामें प्रगट हुए हैं। उन लेखोंमेंसे कुछ वाक्य पाठकोंके जानने के लिये दिये जाते हैं:-

(१) जैनमित्र, सुदी २ वीर सं० २४४१ अंक १९ वर्ष १६

चतुर्मासकी आवश्यक क्रियायें।

इस समय मोर हरे भरे वनको देख आल्हाद कर रहे हैं। कोकिल पक्षीगण शांतिको पा रहे हैं। वृक्ष नवपल्लवसे सुशोभित दीख पड़ते हैं। कृषीकार इस मनोहर ऋतुको देख उत्साह भरे मनसे कृषी कर रहे हैं, मेघ अपनी वारिससे मन्द २ वायुके साथ जलको गिरा रहा है और सूर्यकी आतापसे तपे मनुष्यगण पशु पक्षियोंको शांतिमय सुख देकर तृप्ति करता है। नदी, सरोवर, जलसे रेल छेल होगए हैं। जमीन नवीन घांसके अंकुरोंसे मानों हरे मखमलके गलीचेके समान दिखाई देरही है। उसी चतुर्मासमें मनुष्य जन व्यापार कार्य कम होनेसे निवृत्तिवान होते हैं, और साधुजन विहार करके जो परोपदेशका कार्य करते थे वे सब चतुर्मासमें विहार करनेसे जीव हिंसा अधिक होगी यह समझ एक स्थानमें रहना निश्चय करते हैं। कारण वर्षा ऋतुमें जीवोंकी उत्पत्ति अधिक होती है। महामुनीश्वर तपोधनी वैराग्यज्ञान भरपूर अपनी आवश्यक क्रिया करते२ परम आनन्दमय सरोवरमें स्नानकर निरंतर पाठ, नामस्मरण, ध्यान अध्ययन, स्वाध्याय करके कर्मरिपुको जीतकर स्वाधीन सुखके सन्मुख होते जाते हैं। निवृत्तिसे और एकांतमें जो अभ्यास बढ़ाना चाहें बढ़ सक्ता है। उस तरह गृहस्थ स्त्री पुरुष भी आठ महिनेके पश्चात् संसारिक कुटुम्बिक कार्यसे अलग हो करके आत्मा संबंधी कार्य करनेमें अपना उपयोग लगाना कर्तव्य समझ अष्टान्हिकामें व्रत, नियम, उपवास, ध्यान स्वाध्यायमें विशेष समय लगाते हैं।

(२) जैनमित्र, वीर सं० २४४३ अंक २२ वर्ष १८।

उन्नतिका मूल कारण स्त्रीशिक्षा ही है।

हे मेरी संसारकी कलाओ! हे मेरी गृहस्थाश्रमकी जीवन-भगिनियो! परमार्थ साध्यके लिये व्यवहार धर्ममें आरूढ़ भगिनियो! हे मेरी प्रेमभक्तिकी पात्र बहिनो! हे मेरी ज्योति स्वरूप जिन-लिंगधारीके दर्शन कर पवित्र होनहार बहिनो! उन्नतिका मूल कारण स्त्री शिक्षा है। ऐसा विचार करनेसे दीख पड़ता है कि प्रत्येक कार्य प्रारम्भ किये पीछे दिन प्रतिदिन उसको उन्नतिपर लेजाना, तथा उसमें अनेक विपत्तियां आते हुवे भी विमुख न होना, परन्तु योग्य प्रकार आवश्यक साधनोंसे चढ़ती करते रहना ही उन्नति है। उन्नतिके मूल दो भेद हैं—धार्मिक उन्नति और लौकिक उन्नति।

अरी माताओ! तुम सदाचारी होओ, गुणग्राही होओ, विवेकशील स्वभावकी मंदिर होओ और समुद्रके सदृश उदार-वृत्तिकी धरणहारी होओ कि जिससे ऐसी ही गुणी पुत्र पुत्रियोंकी जन्मदात्री तुम बनो।

बहिनो! मनुष्यके जीवनपर उन्नतिका आधार जो स्त्रियां हैं वही सच्ची रक्षिकाएं हैं, इसलिये उनके जीवनकी रक्षा करना चाहिए। स्त्रियोंमें सत्यशिक्षाकी अति आवश्यक्ता है। वह शिक्षा मात्र लिखना पढ़ना जानने रूप नहीं होनी चाहिये, परन्तु अनु-भवके द्वारा पैदा की हुई होनी चाहिये।

(३) जैनमित्र, वीर सं० २४५२ अंक २४ वर्ष १८।

जैनियोंमें कन्याशालाओंकी हालत।

देखो, जैसे आदिनाथ (वृषभ) भगवानने अपनी ब्राह्मी

और सुन्दरी दोनों कन्याओंको अपने गोदमें बिठाकर विद्याध्ययन कराया था वैसे हमें भी कराना चाहिये।

नीतिकारने कहा है कि—" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः " इस सूत्रको ध्यानमें रखकर कन्याओंको जगत जननी मान उनकी अवस्था सुधारनी चाहिये, मनुष्य बनना चाहिये, न कि पशुवत् रखनी चाहिये।

प्रिय बंधु और विदुषी बहनो! भविष्य माताएं धर्मपरायणा, शीलसम्पन्ना, सदाचारी बने यह अपना ध्येय रक्खो, उनको खूब विद्यामय आभूषणोंसे विभूषित करो, यही मेरी शुभेच्छा है। मुझे अपनी जैन समाजकी दशा देखकर खेद होता है। हृदय कांपता है कि हमारी दयाधर्मधारक, सत्यार्थ तत्त्व प्रकाशक समाज क्यों अपने कर्तव्यको भूलकर रसातलको चली जाती है। क्यों प्रमादवश हो नींद लेती है? फिजूल खर्चोंसे क्यों नहीं डरती? अरे रे! कहां वीरका शासन जो जैनधर्मकी गर्जना सारे देशोंमें करता था? आज उसको निःसत्व मनुष्योंने एक कोनेमें छुपा दिया है।

(४) जैनमित्र भादोंवदी १२ सं० २४४३ अंक ४९ वर्ष १८।

ब्रह्मचारिणीओ शुं करशे?

संसारना विकट अरण्यथी भयभीत थयेली, कुटुम्बोमां क्लेश रूपी पर्वतने तोडवा समर्थ हृदयवाळी भगिनीओ! प्राचीन उत्तम मार्गमां विचरवा उत्सुक थयेली सन्नारिओ! जिंदगी स्वार्पण करवा तैयार थयेली विधवाओ! आजे तमारे अनुकूळ पडे तेवां थोडा विचारो हुं दर्शावुं छुं.

ब्रह्मचारिणी एटले शुं ? ब्रह्म कहेतां आत्मा, आचरण कहेतां वर्तन. आत्मामांज वर्तन करनार ते ब्रह्मचारिणीओ. आवी साध्वी ब्रह्मचारिणीओ, स्वभावमां मग्न, ध्यान वैराग्यनी मूर्तिओ क्यां छे? नथी एम नथी, तेओ छुपी रीते रहेली छे. तेनी खोज करवाथीज मळी आवशे, माटे प्रथम आपणे तेवां बनवुं, पछी तेने शोधीशुं तो तरत मळी आवशे, जेओ ब्रह्मचर्य व्रतने उत्तम प्रकारे पाळवा कोशिष करे छे. प्राचीनकाळमां थयेली सतीओ, ब्रह्मचारिणीओना चरित्र वांची मनन करी ते प्रमाणे वर्तवानी कोशिष करे छे. पोताना शरीरनी प्रशंसा के कीर्तिने माटे इच्छा नथी तेज अंतरंगमां ब्रह्मचर्य व्रतने पाळी शके छे. बधां व्रतो कांईक अंशे सारी पायरीए पाळी शकाय छे, पण आ व्रतधारीने निमित्त ना सचवाय तो महा पापना भागी थवुं पडे छे ने नर्कना खाडामां उतरवु पडे छे. आ ब्रह्मचर्य साचववाथीज ब्रह्मचारिणीओ एक प्रकारनी उत्तम कुमारीकाओ, मध्यम विधवाओ अने सधवाओ थई शके छे.

(९) जैनमित्र मगसर वदी ३ सं० १४४९ अंक २ वर्ष २०—

समयनो सदुपयोग.

देशोत्थानमां आगळ वधनारी बहेनो ! धर्मकार्यमां उच्चस्थान भोगवनारी सन्नारिओ ! उत्सर्प्पणी काळना सन्मुख जनारी भगिनीओ! वीर पुत्रीओ ! नवीन वर्षे नवां नवां कार्य करवा उत्सुक बनो, सुचरित्र बनी कीर्ति जगतमां फेलावो. जैनधर्मना तत्त्वोने उपदेश द्वारा, पुस्तको छपावी हजारो लोकोने व्हेंची जैनधर्मनो प्रचार करो, आज प्रमाणे पोताना मनुष्य देहने सार्थक करनारा बंधुओ, आपणा आयुष्यनो समय केटला विभागमां व्हेंचाई गएलो छे तेनो विचार करीशुं.

संसारमां हजारोमां एक पंडित होय छे, लाखोमां एक स्वार्थ-त्यागी के सत्याग्रही होय छे, अने करोडोमां एक सत्पुरुष आत्मा-नुभवी महापुरुष होय छे, जे जगत उद्धारक, दया पाळक अने धर्म-तीर्थकर्ता थाय छे. प्राचीन काळमां जेवां के कुन्दकुन्दाचार्य, स्वामी अकलंक देव, समन्तभद्र, मानतुंग थई गया छे तेमणे पण बाळ-काळथी सुसंस्कार अने यौवनावस्थामां क्षणिक पदार्थोनो मोह छोडी आत्मकल्याण ने परोपकार कर्या छे. भगवान वीरे पण यौवन अवस्था-मांज (३० वरसमांज) दीक्षा लई स्वपरकल्याण कर्युं छे, तेमज स्त्रीओमां जे सतीओ थई छे तेमनी पण यौवनावस्थामांज परीक्षा लेवाई हती. सीताजी, तारामती, चेलना, अनंतमती, सुभद्रा जेवीओ आजे पण चिरस्मरणीय छे तेनुं कारण एक यौवन काळनुं आत्मबळज हतुं.

(६) जैनमित्र माघ वदी ७ वीर सं० २४४६ अंक ११ वर्ष २०—

स्त्री सुधारकी ओर दृष्टि क्षेपिये।

बंधुओ ! यदि स्त्री सुधार करना चाहो, तो जो घर अज्ञान छाया है उसको निकालना चाहो तो एक बड़ा भारी कन्याश्रम खोलनेका प्रयत्न कीजियेगा जिसमें मात्र नीति सिखाई जावे, चारित्रपर विशेष ध्यान दिया जाय, पढ़ना लिखना गृह-स्थाश्रमके योग्य सिखाया जाय और देश विदेश फिरकर उपदेश देनेका कार्य करें। कई कन्याएं आश्रममें उपयोगी सुश्रूषाका कार्य करनेवाली तैयार करनी चाहिये। इनका पहराव सादा रक्खा जाय। ऐसे आश्रममें वयोवृद्ध माताएं काम करनेको अपना जीवन देनेवाली रखनी चाहिये जो विदुषी हों, शुभाचरणी हों, अच्छे कुटुम्बकी हों, जिनका प्रभाव सब कन्याओंपर पड़ सके।

(७) दिगम्बर जैन वर्ष ८ अंक ९ वीर सं० २४४१–

श्राविकाओने आमंत्रण।

आ असार संसारमां मनुष्य मात्र पोतानी भावी इच्छाओ पुरी पाडवा माटे अनेक प्रकारना प्रयत्नो कर्या जाय छे, अने तेओने तेमना पुरुषार्थ प्रमाणे फळ पण मळेज छे. जेओ गृह-संसार विस्तारवाळो करवा धारे छे ते तेने वधारी शके छे, जेओ व्यापारमां उन्नति वधारवा धारे छे ते व्यापारमां वधे छे, जेओ विद्यामां वधवा मांगे छे ते तेमां वधे छे, जेओ चारित्रमां वधवा मांगे छे तेओ चारित्रमां अने जेओ प्रभुध्यानमां योगसमाधि करवा धारे छे ते तेमां वधे छे; एम अनेक इच्छाओथी अनेक कार्य थया जाय छे, तेमज जे प्राचीन काळमां राजा महाराजाओ तेमज शेठ-साहुकारो पोतानी रुपगुणवती विनयवान पुत्रीओने, पुत्रोनी समान गणी सन्मान आपीं विद्या, कळाकौशल्यमां संपूर्ण बनाववानी अने भेदभाव विना स्त्रीधर्मना सूत्रोतुं अध्ययन करावनी इच्छा राखता हता त्यारे तेमनी पण ते इच्छा पूर्ण थती. तेनां उदाहरणो घणी सुशील सतीओ जेवी के सीता, मन्दोदरी, सावीत्री, चन्दना, अनन्तमती, ब्राह्मी, सुन्दरी, कैकेयी, राजुलदेवी, वगेरेनी आजे आ वर्तमानकाळमां पण स्तुति थाय छे ते माटे तेनुं अनु-करण करीनेज आजे जैन समाजना नेताओ–विद्वानो–पंडितो, शेठ साहुकारो अने दीनगरीब वर्ग सर्वे एके अवाजे भेदभावना, स्वार्थ-परायणता छोडी दई अमारा स्त्रीवर्गनी उन्नति करवा इच्छा करे तो अवश्य अमे पण प्राचीनकाळनी देवीओनी उपमाने योग्य बनी शकीए.

(८) दिगम्बर जैन वर्ष १० अंक १ वीर सं० २४५३–

सादुं जीवन अने ते गुजारवानो उपाय.

'सादुं जीवन' शुं छे? अने तेनां लक्षण शा छे? ते कहेवुं जोइए. आपणे जींदगी अथवा अवस्था सुखमय, कल्याणकारी, आपत्तिओ रहित, स्वतंत्रता पूर्वक तेमज समस्त देश तथा काळना श्रेयने अर्थे गाळीए तेनुं नाम सादुं जीवन छे. आवुं जीवन गाळनारा मनुष्यो जगतमां घणा थोडा होय छे.

विरुद्धतादर्शक बाबतो खास लक्षमां लेवा जेवी छे ते हवे जणावीश–

१–आवक करतां वधारे खर्च करवो ते.

२.–बहारनो डोळ.

३–तत्त्व श्रद्धामां भ्रम-संशय.

४–समय व्यर्थ गुमाववो ते.

५–वृथा बकवाद करवो ते.

६–विषयोनी अति लालसा राखवी ते. आवां आवां कारणोने शनैः शनैः (धीमे धीमे) ओछां करवामां आवे, तो तमे सादुं जीवन घणी महेलाईथी गाळी शकशो.

बहेनो! आपणे जगतनी माताओ छीए. आपणे माथे बधी प्रजानी जीवनकळानो भार छे. एम न समजो के हुं एकनी माता छुं. परन्तु जेटलां तमारा समागममां आवे अने वळी तेना समागममां जेटलां आवे ते बधां तमारांज बच्चां छे, ते बधां तमारीज प्रजा छे. आपणुं जीवन सुखमय केम थाय, सरळ ने सादुं केम थाय, तेने माटे वारंवार उपायो शोधवाथी जेम कीडो एक

एक दिवस अमर थई जाय छे, तेम आपणुं जीवन पण उच्च थशेज अने आपणे मनुष्य मटी देवरूप थई पूजाने पात्र थईशु.

जिस श्राविकाश्रमको बाईजीने वीर सं० २४३९ आसौज सुदी ११ ता० २९ अक्टूबर १९०९ को स्थापित किया था उसकी सेवा श्रीमतीने जन्मपर्यंतकी, उसके द्वारा तैयार हुई बहुतसी महिलाएँ समाजकी सेवा कर रही हैं जो इस प्रकार हैः—

मुम्बई श्राविकाश्रमसे पढ़कर निकली हुई कुछ बहनोंकी समाजसेवा।

१–रामादेवीबाई भगिनी महात्मा भगवानदीनजी–दिहलीमें महिलाश्रमकी अधिष्ठात्री हैं।
२–प्रभावतीबाई शीतलशाह–सोजित्रा–श्राविकाश्रममें मुख्य अध्यापिका।
३–श्रीमतीबाई कोकिल–सागली श्राविकाश्रममें अधिष्ठात्री।
४–मालती मूळे एल. सी. पी. एस–कोल्हापुरमें दवाखाना चलाती है।
५–मथुराबाई रामचन्द–नागौरमें अध्यापिका जैन कन्याशाला।
६–कस्तूरीबाई हरखचन्द–आरा जैन बालाविश्राममें शिक्षिका।
७–पार्वतीबाई हीरालाल–धामपुर जैन कन्याशालामें अध्यापिका।
८–केशरबाई डूंगरजी–सागवाड़ा श्राविकाश्रमकी सचालिका।
९–श्रीमतीबाई गरगेट्ट–विलेपारला महिलाश्रमकी सेविका।
१०–मूलाबाई रामलाल–दमोहमें सर्कारी शालामें अध्यापिका।
११–सोनूबाई पुन्नाजी–नागपुरमें " " "
१२–वेणूबाई गुलाबसा–नागपुरमें " " "
१३–कुंवरबाई हीरजी–जैनशाला मुंबई माडवीपर अध्यापिका।
१४–भूरीबाई गणेशजी–जैन कन्याशाला उदयपुरमें अध्यापिका।
१५–केशरबाई रामप्रसाद–जैन कन्याशाला भिंडमें अध्यापिका।
१६–नानीबहन उगरचन्द–सोजित्रामें श्राविकाश्रमकी संचालिका।
१७–चंचलबहन उगरचन्द–जैन कन्याशाला भावनगरमें अध्यापिका।

१८-भागवतीबाई मगनलाल-जैन कन्याशाला दमोहमें अध्यापिका।
१९-भानुमती खडगसा-सर्कारी शाला एलिचपुरमें अध्यापिका।
२०-प्यारीबाई राईसनायक-जैन कन्याशाला धुलेव केशरियाजीमें अध्यापिका।
२१-गोपीबाई जैन कन्याशाला-बड़वाहामें अध्यापिका।
२२-चंपाबाई गंगासा- ,, ,, कारंजामें ,,
२३-वजाबाई- ,, ,, ,, ,,
२४-श्रीदेवी अंतप्पा-अपने देशमें धर्मसेवन करती है।
२५-सूरजबाई खूबचन्द-मुंबईमें पतिके साथ स्वतंत्र काम करती है।
२६-चम्पाबाई ढालूसा-श्राविकाश्रम बम्बईमें सेविका।
२७-वीरमती वेळजी जैन-कन्याशाला रगूनमें अध्यापिका।

श्राविकाश्रमका हाल।

आश्रममें पहले वर्षमें १२ विधवाओंने ७ कन्याओंने व ३ सधवाओंने लाभ लिया था। तब २१ वर्ष पीछे सन् १९२० में १७ विधवाएं १९ कुमारिकाएं व ३ सधवाएं लाभ लेती थीं। तथा इन ३९के सिवाय बम्बई नगरकी २९ पढ़ने आती थीं जिनमें ४ सधवा शेष कुमारिकाएं थीं। इनमें कुछ अजैन भी हैं। इस आश्रममें हिन्दी मराठी व गुजराती तीन भाषा जाननेवाली श्राविकाएं भिन्न२ प्रान्तोंसे भरती होती हैं। इसलिये तीनों ही भाषाके पढ़ानेके दरजे व शिक्षक नियत हैं। विशेष संख्या न पढ़नेका कारण यह है कि जैन समाज भारतमें इधर उधर फैली हुई है तथा कुटुम्बीजन अपने घरमेंसे विधवाओंको बड़ी कठिनतासे बाहर पढ़ने भेजते हैं। बहुधा बहने विना खर्च दिये भरती होती थीं, इससे भी फंडकी आमदके अनुसार संख्या रक्खी जाती थी।

धर्मशिक्षा देनेका काम शुरूसे श्रीमती जैन महिलारत्न ललितावाईजी करती रही है व कई वर्षसे ऊंची कक्षाओंकी श्राविका-

ओंको साहित्यरत्न पंडित दरबारीलालजी न्यायतीर्थ शिक्षा देते हैं।

धर्म शिक्षाका हाल सन् १९२९-१९३० में शोलापुरके माणिकचन्द हीराचन्द दि० जैन परीक्षालयमें उत्तीर्ण छात्राओंकी विगत इस प्रकार थी——

विषय	पास सन् १९२९	पास सन् १९३०
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	३	३
द्रव्यसंग्रह	२	३
जैनसिद्धांत प्रवेशिका	२	१
गोमट्टसार जीवकांड	०	१
क्षत्रचूड़ामणि	०	२
कातंत्र षट्लिंग	०	२
छः ढाला	१	१
बालबोध जैनधर्म ४ था भाग	३	३
धनंजय नाममाला	१	१
श्राविकाश्रमकी तरफसे।		
तत्वार्थसूत्र	४	०
बालबोध जैनधर्म ४ था	२	१
जैनसिद्धान्त प्रवेशिका	२	०
छः ढाला	३	२
द्रव्य संग्रह	१	२

मगनबाईजीने जीवन पर्यंत परिश्रम करके श्राविकाश्रमके लिये ९१९३३॥=)॥ का ध्रौव्यफंड एकत्र कर दिया था जो सन् १९२९ के सरवायामें प्रगट है। यह रुपया नीचे प्रकार जमा है— ७४२६८-)। शेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग ट्रस्ट खाते। ३२९४०।)। शेयर सिक्यूरिटी खाते जिसकी बिगत—

रतनबाई रुक्मिणीबाई श्राविकाश्रम-बम्बईकी सचालिकाओं व अध्यापिकाओंका एक ग्रूप।

७८८) केंप कम्पनी शेयर ४
४०४०) कटनी सीमेन्ट शेयर
६७५) टाटा आयरन शेयर
९०००) बम्बई गवर्नमेन्ट बोंड
२७८५) इम्पीरियल बेंक शेयर
५११७॥)। पोर्टट्रस्ट बोंड
१०५३४।॥) बम्बई गव० प्रोमेसरी नोट

१०७२०८।~)॥

९१९३३॥=)॥के सिवाय ५४२६~)। भा०दि०जैन महिलापरिषद्का जमा है। १००१) ब्र० सीतलप्रसादजी, १०९९) महिलाश्रम सांगली, १०५३) मगनव्हेन पारितोषिक फंड व कुछ फुटकल है।

श्राविकाश्रम–बम्बईके ध्रुवफंडकी रकम।

३००००)	श्री० रतनव्हेन तथा रुक्मणीबाई शेठ पानाचंद हीराचंद जवेरी	बंबई
११००)	श्री० बेसरबाई दयाचंदसा घनश्यामशा	बड़वाहा
१५०१)	सौ० दा० कंचनबाई सरसेठ हुकमचन्दजी	इन्दौर
९१३)	श्री० नवलबाई माणेकचंद लाभचंद	बंबई
१०००)	,, मगनव्हेन माणेकचंद हीराचंद	,,
१०००)	शेठ हीराचन्द गुमानजी	,,
१००१)	शेठ गुरुमुखराय सुखानंदजी	,,
१००१)	शेठ विनोदीराम बालचन्द	झालरापाटण
१००१)	श्री० कीकीव्हेन चुन्नीलाल झवेरचन्द	मुंबई

१००१) शेठ बनजीलालजी ठोलिया जैपुर
१०००) शेठ हीरजी खेतसी मुम्बई
१०००) रा० ब० तिलोकचंद कल्याणमलजी इन्दौर
१०००) रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचंदजी ,,
१००१) रा० ब० शेठ सरूपचन्द हुकमचंदजी ,,
१००१) स्व० जीवकोरबाई प्राणलाल हरलोचनदासनां पत्नि जेवूपर
१००१) श्री रतनबाई शेठ हीराचंद नेमचंदना मातुश्री
१००१) श्री० ब्र० कंकुब्हेन हीराचंद नेमचंदनां पुत्री सोलापुर
१००१) शेठ तलकचंद सखाराम तरफथी त्रण पत्नि तथा
मातानां स्मरणार्थे मुंबई
१००१) स्व० सौ० जमनाबाई ध्र० माणेकचंद पानाचंद
केतकी निमगांव
१००१) रा० ब० शेठ नेमीचदजी सोनी अजमेर
१००५) सौ. चंवेलीबाई ध. प. ला. अजितप्रसादजी देहेरादून
१००१) श्रीमती पंडिता चन्दाबाईजी धर्मकुमारजी आरा
१००१) स्व० मणीकोर मूलचंद गुलाबचदनी विधवा भावनगर
१०००) श्रीमान् शेठ बालचंद कस्तुरचंद उस्मानाबाद
१०००) स्व० जीवकोरबाई प्रेमानन्द परीख बोरसद

५४५३३)

५२४५) रंगुनना जवेरी भाईओ तथा चावलपट्टीना भाईओ रंगुन
५०१) शेठ मगनलाल प्राणजीवननी कुं०
५०१) शेठ सुरजमल लल्लुभाईनी कुं० रंगुन
४४४३) परचुरण

५००) स्व० फुलकोरब्हेन माणेकचंद हीराचन्दनां पुत्री बंबई
५०१) श्री० शेठ खेतसी खेयसी जे० पी० ,,
५०१) शेठ भायचंद रूपचन्द ,,
५०१) शेठ शांतिदास आशकरण ,,
५०१) शेठ सुरचन्द शीवराम
५०१) शेठ जवेरचन्द मुलचद मोतीवाला सुरत
५००) स्व० धर्मपत्नि मुन्सीलालजी करनाल
५०१) शेठ देवचन्द वीरचन्द सेटफला
५०५) स्व० दादा अण्णा पाटील सांगली
५०५) स्व० व्यंकुबाई ध्र० रामचन्द गोदे ,,
५०१) सौ. सुशीलादेवी रा. बा. लाला सुलतानसिंहजी देहली
५०१) ला० मथुरादास रामजीदास कागजी ,,
५०१) ला० सुलतानसिंहजीनी माता ,,
५०१) ला० भोलानाथ संतलाल गोधा ,,
५०१) ला० सुलतानसिंहजीनी धर्मपत्नि ,,
५०१) ला० घासीलाल कल्याणमलजी उज्जैन
५०१) सौ० हरकोरबाई शेठ शीवलाल तुलशीदास अमदावाद
५०१) श्री श्राविकाश्रम ह० गङ्गादेवी मुरादाबाद
५००) श्री० जगमगजीवी बा० हरप्रसाद आरा
५०१) सौ० नेमसुन्दरबाई बा० धर्नेन्द्रदासजी ,,
५०१) रा० बा० शेठ टीकमचन्दजी सोनी अजमेर
५००) श्री० गुलाबबाई शेठ फत्तेचन्दजीनां धर्मपत्नि इंदोर
५०१) श्री. अमोलाबाई ला. सुमेरचंदजीनां पत्नि इलाहाबाद

१०१) सौ. जानकीबाई शेठ जमनालाल बजाज

१०१) सौ. ठकुबाई भगवानदास शोभाराम पुना

१०१) शेठ ताराचंद नवलचंदनां पुत्री निर्मलाना स्मर० ,, "

१००) शेठ चैनसुख गम्भीरमलजी कलकत्ता

१०१) सौ. लक्ष्मीबाई शेठ पदमसी रतनसी मुम्बई

१०१) श्री. शीवदेवी भ्र० अप्पा जीरगे कोल्हापुर

१०१) सौ० सुवटादेवी शेठ रामनारायणजी रुईआ मुम्बई

१०१) श्रीराम रामनीरंजन ,,

१०१) शेठ हीरजी खेतसी ,,

१००) शेठ यशवंत अप्पा सुबेदार बेळगांव

२९१) शेठ दीनदयाळ एन्ड सन्स पुना

२९१) शेठ रामनारायण हरनंदराय रुईआ मुम्बई

२९१) शेठ देवचन्द लालभाई ,,

२९१) शेठ नवलकिशोर खेरातीलाल ,,

२९१) शेठ रतनलाल सुलतानसिंगजी देहली

२९१) ला० हुकमचन्द जगाधरमलजी ,,

२९१) श्रीमती जैनोबाई जैनीलाल कागजी ,,

२९१) ला० मनोहरलाल भुज्जनलाल ,,

२९१) शेठ बलवंतराव ज्ञानोबा ढोले आलंद

२९०) श्रीमती नवीबाई माणेकचंद हीराचंदनां पत्नि मुम्बई

२९०) ,, चतुरबाई ,, ,, ,, ,,

२९०) शेठ दीपचन्दजी ते शेठ विनोदीराम बालचन्दना पुत्रना स्मरणार्थ झालरापाटन

२९१) ला० सोहनलाल त्रिलोकचन्दना मातुश्री देहली
२९१) ला० हरसुखरायजी जौहरीमलजी ,,
२९१) रा० बा० द्वारकाप्रसादजी जैन बिजनोर
२९१) शेठ रामचन्द धनजी दावडा नातेपुता
२९०) ओसवाल श्वे० संघ तरफथी
ह० जेसींगलाल मनसुखलाल रंगुन
२९१) शेठ मोतीलाल चम्पालाल रामस्वरूप ब्यावर
२९१) शेठ माधवदास अमरसी मुम्बई
२०१) श्री० रुक्मणीबाई पानाचन्द हीराचन्द ,,
२००) शेठ अण्णागीरी देशपांडे कोल्हापुर
२०१) स्व० हरकोरबाई दलपत शाह छाणी
२००) स्व० शेठ लछमनलालजीना स्मरणार्थे झालरापाटन
२०१) सौ० प्रेमाबाई माणेकजी मुंबई
२००) शेठ चतुरभुज सुन्दरजी दाहोद
२००) शेठ पदमसिंहजी मुंबई
२००) शेठ टोकरसी कानजी मुम्बई
२०२) शेठ गोरेलाल मांगीलाल सनावद
२००) श्रीमती सरस्वतीबाई शेठ नारायणदास राठी मुम्बई
२०१) शेठ शांतिदास लछमनदास पुना
२०१) ला० कुडियामल बनारसीदासजी देहली
२०१) शेठ आवगी देवीचन्द रामचन्द पुना
२०१) शेठ खेमचंद रामचन्द बिजापुर
२०१) शेठ रूपचन्द मोहरचन्द अमदावाद

२०१) रा. बा. नांदमलजी साहेब पेन्शनर अजमेर
२०१) शेठ नगीनचन्द घेलाभाई जवेरी मुम्बई
२०१) शेठ विनोदीराम बालचंद झालरापाटण
२०१) शेठ रा. बा. त्रिलोकचन्द कल्याणमलजी इन्दौर
२००) शेठ रा. बा. सरूपचंद हुकमचन्दजी ,,
२००) धी ग्रेन मरचंट एशोशिएशन मुम्बई
१९१) श्री० फूलबाई हीराचंद सोलापुर
२०१) शेठ अप्पा अनप्पा लेंगडे शाहपुर बेलगांव
१९०) शेठ अप्पासाहेब गरगट्टे कोल्हापुर
१९१) पारसदास बीजलीवाले देहली
१९१) शेठ अनंतभाऊ आरवाडे सांगली
१९०) शेठ तिलोकचंदजी जैन हजारीबाग
१९१) ला. नंदकिशोरजीनां धर्मपत्नि देहली
१९०) शेठ विनोदीराम बालचंद झालरापाटण
१२९) शेठ माणेकचंद मोतीचंद सांगली
१२९) भ० श्री जिनसेनस्वामी कोल्हापुर
१२९) शेठ नेनसी देवजीनी कुं. मुम्बई
१२९) शेठ वेलजी शीवजी सांगली
१२९) ला. धर्मदास न्यादरमलजी देहली
११०) श्री. चमेलीबाई अजितप्रसादजी देहरादून
१०१) ,, रुपाबाई मोतीचंद हीराचंद गुमानजी मुम्बई
१०१) ,, जीवकोरबाई प्राणलाल जंबुसर
१००) शेठ झुन्नालाल इन्दौर

१००) श्रा० चतुरबाई माणेकचन्द हीराचन्द मुम्बई
१०१) शेठ नाथुभाई प्राणजीवनदास अंकलेश्वर
१०१) शेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीनां धर्मपत्नि मुम्बई
११२) शेठ कस्तुरचन्द तलाटी परतापगढ
१०९) शेठ रतनलालजी जुवा ,,
१००) स्व० मोतीबाई शेठ केशरीमलजीनी व्हेन मुम्बई
१००) शेठ जेठाभाई दामजी ,,
१०१) शेठ हीराचन्द सखाराम सोलापुर
१०१) रा० बा० कल्याणमलजीनां मातुश्री इन्दोर
१०१) शेठ टोकरसी कांनजी मुम्बई
१०१) शेठ राजमल लक्ष्मीचन्द जामनेर
१००) शेठ लालचन्दजी नाथुरामजी दमोह
१००) शेठ हीरालाल जेसींग तथा बाई चंचल मळीभाताज मुंबई
१०१) शेठ हीरजी कानजी ,,
१०१) शेठ नाथा रंगजी ,,
१०१) सौ० जमनाबाई खीमजी ,,
१०१) शेठ भगवानदास छगनलाल भावनगर
१००) शेठ माणेकचन्द दीपचन्द झालरापाटन
१०१) शेठ केशरीमल रीखबचन्द धामक
१०१) शेठ रतनचन्द नवलचन्द मुम्बई
१०१) शेठ दादा अन्ना काशीर सांगली
१०१) शेठ पमप्पा बालाराउ देशाई अमीनभावा
१०१) शेठ जोतीबा लक्ष्मण पीराळे नेकगांव

१०१)	बीबी पुतलीदेवी ला० ज्योतीप्रसादनां मातुश्री	देहली
१०१)	शेठ धरमचन्द हरजीवनदास	पालीताना
१००)	शेठ मुंगालाल हजारीलाल	खुरई
११०)	ला० हुकुमचन्दजीनां पुत्री ज्ञानवतीबाई	देहली
१०१)	शेठ हरजीवन लालचन्द	बडोदरा
१०१)	ला० मूलचन्दजीनां धर्मपत्नि	कानपुर
१०१)	शेठ उत्तमचन्द रीखवचन्द	अंकलेश्वर
१०१)	शेठ लीला वोरा	पुना
१०१)	शेठ गाहिकवाड मल्लाजी लेंगडे	शाहपुर
१०१)	ला. कन्हैयालालजी घंटेवाला	देहली
१०१)	ला. मनोहरलाल मुन्सीलालजी	"
१०१)	ला. निकुमल सरदारीमलजी	"
१०१)	शेठ सुरचंद माधवजी	बीजापुर
१०१)	शेठ माधवजी फूलचंद	"
१००)	श्री. श्यामाबाई	कानपुर
१०१)	शेठ पदमचंद भुरामलजी	मुम्बई
१०१)	श्रीमती राजुबाई वीरचन्द	उस्मानाबाद
१०१)	शेठ मणिलाल गोकलभाई	बम्बई
१०१)	श्री. जसकोरबाई शा. धरमचन्द उदेचंदनी विधवा	सुरत
१००)	शेठ तात्या गोपाळ	सोलापुर
१०१)	ला. महावीरप्रसादजी ठेकेदार	देहली
१०१)	शेठ नरोत्तमदास जगजीवनदास	मुम्बई
१०१)	शेठ रेवाशंकर जगजीवनदास	"

१०१) शेठ पोमडुसा हीरासा — सनावद
१००) ला. फुलचन्दजीना धर्मपत्नि — देहली
१००) ला. वजीरसिंह रायसाहबनां मातुश्री — ,,
१००) ला. जुन्नुलाल जग्गीमलजी — ,,
१००) शेठ मणिलालना स्मरणार्थे ह. केशरबाई — मुम्बई
१००) देवेन्द्रप्पा फळ्याप्पा चोगले — बेलगांव
१०१) शेठ छगनलाल वहालचंद — मुम्बई
१०१) सौ. विजयालक्ष्मीबाई मणिलाल — ,,
१०१) श्री. जीजाबाई दादा भारवाडे — कोल्हापुर
१०१) शेठ लुणकरणजी शेठी — झालरापाटन
१०१) शेठ गोकलदास कहानदास पारेख — मुम्बई
१०१) सौ. कृष्णागौरी चीमनलाल सेतलवड — ,,
१०१) शेठ तवनप्पा अप्पाराम पाटणे — कोल्हापुर
१००) श्री० रूक्मणीबाई नंदलाल सिंगई — बीना इटावा
१००) सौ० लक्ष्मीबाई जगमोहनदास जे. पी. — मुंबई
१०१) बाबू दयाचन्दजी — कलकत्ता
१०१) शेठ सेवाराम तुलारामजी — पिंडरई
१०१) शेठ मणिलाल हरिलाल — मुम्बई
१०१) सौ० शांतादेवी राजा गोविंदलाल शिवलाल — ,,
१०१) शेठ आनंदीलाल पोद्दार — ,,
१०१) शेठ ज्योतीराम दलुचन्द — ,,
१०१) शेठ सनईराम जुवारमलजी — ,,
१०१) शेठ जेठाभाई गोरधनदास — आमोद

१०१) शेठ टोकरसी मूळजी मुम्बई
१०१) सौ. चम्पाबाई परतापगीरजी ,,
१०१) शेठ कालुराम हीरालाल बामोरा
१०१) सौ. धनकोरबाई सर परशोत्तमदास ठाकोरदास मुंबई
१००) शेठ रामवल्लभ रामेश्वर कलकत्ता
१००) शेठ दलुलाल चुनीलाल जबलपुर
१०१) स्व० रा. बा. श्रीमंत शेठ मोहनलालजी खुरई
१०१) शेठ सरूपचन्द हुकमचन्दजी तरफथी इन्दोर
१०१) एक ब्हेन तरफथी मुम्बई
१०१) दादा चितप्पा पतरावली बेलगांव
१००) स्व० भीखालाल प्रेमचंद सुदामडावाला मुम्बई
१०१) शेठ बनजीलालजीना स्मरणार्थ जैपुर
१७७) परचुरण रकम ध्रुवफंडमां आपवा कबुल करेली

५१) शेठ तवनप्पा मेळप्पा पीराले कोल्हापुर
५०) शेठ व्येंकप्पा अण्णप्पा हुलवत्ते शाहपुर
५०) शेठ बालकृष्ण अन्नप्पा लेंगडे ,,
२६) शेठ देवेन्द्र तवनप्पा शेठी

१७७)

९९५४७)=॥

३६१३॥) स्पेशीबेंक तूटवाथी गया.

९१९३३॥)=॥ जमा.

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिलापरिषद्की स्थापना माघ सुदी ४ वीर सं० २४३६ को श्री सम्मेद-शिखरमें हुई थी, जबसे ही श्रीमती मगन-बाईजी मंत्रीका काम जन्मपर्यंत करती रहीं।

महिला परिषद्की संस्थाएं।

इस परिषद्के कार्यने बड़ी उन्नति की है। इसकी स्थायी सदस्या १९२२ मई तक ४४ हैं जिन्होंने प्रत्येकने १०१) परिषद्को प्रदान किये हैं। सदस्याओंकी नामावलि इस प्रकार है—

महिला परिषद्को १०१) देनेवाली सदस्याएँ।

१—श्रीमती पंडिता चन्दाबाईजी,	आरा
२— „ स्व० जैनमहिलारत्न मगनबाईजी	बम्बई
३—सिं० बंशीलाल पन्नालालजी जैनकी धर्मपत्नी	अमरावती
४—सौ० कंचनबाईजी धर्म० सर सेठ हुकमचंदजी सा०	इन्दौर
५—श्री० केसरबाईजी ठि० दयाचन्दसा घनश्यामशा	बड़वाहा
६— „ नंदकोरबाईजी धर्म०सेठ चुन्नीलाल हेमचंदजी	मुम्बई
७— „ सौ. सुन्दरबाईजी सेठ गुलाबचंद हीरालालजी	धूलिया
८— „ गंगादेवीजी जैन कालीचरणजीकी माता	मुरादाबाद
९— „ झमोलादेवीजी ठि०कल्याणमल सुगनचंदजी	अलाहाबाद
१०—धर्मपत्नी रा० ब० ला० सखीचन्दजी जैन	भागलपुर
११—श्री० सुधर्मादेवीजी ठि०रामसुखदास काशीराम	मुजफ्फरनगर
१२—सेठ चान्दमलजी जैन	रांची
१३—धर्मपत्नी ला० देवीसहायजी	लखनऊ
१४—श्री० सौ० धर्मपत्नी ला० बरातीलालजी	„
१५— „ „ बून्दीदेवीजी ठि० ला० न्यादरमलजी	देहली

१६–श्री० कृष्णप्यारीबाईजी ठि० शिवचरणलालजी अलाहाबाद
१७– ,, सौ० सोबाईजी धर्मपत्नी ला० कुडामलजी हिसार
१८– ,, केतकीबाई नेमीदासजी वकील सहारनपुर
१९– ,, चमेलीबाईजी ठि० बा० चिमनसिंहजी जैन मेरठ
२०–श्री० धर्मचंद्रिका ब्र० कंकूबाईजी सोलापुर
२१–सौ० खखुबाईजी माणिकचंदजी आलंद
२२–श्री० ला० मुन्नालालजीकी धर्मपत्नी लखनऊ
२३– ,, अंगूरीदेवी ठि० मक्खनलालजी देहली
२४– ,, गुन्नीबाईजी धर्मपत्नी सेठ पूरनसावजी सिवनी
२५– ,, शांतिबाईजी पुत्रवधू रा. ब. सेठ पूरनसाहजी ,,
२६– ,, सौ० मूंगादेवीजी ध०प० शाह प्यारेलालजी धामपुर
२७– ,, सौ० नेमसुन्दरबाई ध०प० बा० धर्णेन्द्रदासजी आरा
२८– ,, चंद्रमणि धर्मपत्नी का० मुसद्दीलालजी अलाहाबाद
२९– ,, सुशीलादेवी ,, ,, कैलासचन्द्रजी ,,
३०– ,, गुणमालादेवी ठि० ला. मुंशीलाल उग्रसेन जैन मेरठ
३१– ,, जयनेमी बीबी C/o बा० गुलाबचन्दजी आरा
३१–सौ० रत्नप्रभादेवी धर्मपत्नी शेठी लालचन्दजी झालरापाटन
३३– ,, कुंवरानी हीराकुंवर बा साहब ,,
३४–श्री०सौ० शांतिकुमारी सुपुत्री बा० अजितप्रसादजी लखनऊ
३५– ,, नाथीबाई धर्मपत्नी श्री० सेठ हरसुखजी सुसारी
३६–सौ० जैनोदेवी धर्मपत्नी ला० मुसद्दीलालजी देहली
३७–श्री० संगीदेवीजी दि० जैन श्राविकाशाला ,,
३८– ,, चंपाबाई, शिवासा माणिकसा सनावद

३९—श्री० नवलबाई वीरचन्द बलसंगकर सोलापुर
४०—ला० तुलसीरामजीकी धर्मपत्नी फिरोजपुर
४१— „ खुबचन्दजीकी „ „
४२—सुभद्राबाई धर्मपत्नी सेठ नवलचन्दजी बड़वाह
४३—श्रीमती चंद्रबाई चुन्नीलालसा पन्नालालसा खण्डवा
४४—सौ० श्री० धर्मपत्नी कुँवर वसंतलालजी पहाड्या बांकीपुर

यह सब मगनबाईजीके अथाह परिश्रमका ही फल है।

नीचे लिखी संस्थाएँ संतोष पूर्वक काम कर रही हैं:—

बम्बई व दक्षिण प्रान्त।

१—र० रु० श्राविकाश्रम बम्बई, (२) दि० जैन श्राविकाश्रम सोजित्रा, (३) फुलकौर कन्याशाला सुरत, (४) माणिकबाई दि० जैन पाठशाला ईडर, (५) दि० जैन कन्याशाला काकरोडा, (६) दि० जैन कन्याशाला दाहौद, (७) सौ० दिवालीबाई श्राविकाश्रम जांबुड़ी (अहमदाबाद), (८) चन्द्रप्रभु दि० जैन कन्याशाला उजेड़िया, (९) सन्तोक बहिन दि० जैन कन्याशाला भावनगर, (१०) जैन महिलाश्रम सांगली, (११) शांतिसागर दिगम्बर जैन कन्याशाला कुम्भोज, (१२) जैन श्राविकाश्रम सोलापुर।

राजपूताना व मालवा प्रान्त।

(१) सौ० कंचनबाई श्राविकाश्रम इन्दौर, (२) कल्याण मातेश्वरी दि० जैन कन्याशाला इन्दौर, (३) केसरबाई विद्यावर्द्धिनी जैन कन्याशाला बड़वाहा, (४) भाग्य मातेश्वरी दि० जैन कन्याशाला अजमेर, (५) जैन कन्याशाला नागौर, (६) महावीर दि० जैन कन्याशाला परतापगढ़, (७) मुनि शांतिसागर दि० जैन श्रावि-

श्राश्रम सागवाड़ा, (८) कन्याशाला खान्दु, (९) सुतत्त्व बोधिनी कन्याशाला तलवाड़ा (बांसवाड़ा)।

मध्य प्रदेश बरार।

(१) जैन कन्याशाला दमोह, (२) जैन पुत्री शाला जबलपुर, (३) श्रीमती गुन्नोबाई दि० जैन महिलाश्रम सिवनी, (४) दि० जैन महिलाशाला सतना।

पंजाब प्रान्त।

(१) जैन महिलाश्रम पहाड़ी धीरज दिहली, (२) दि० जैन श्राविकाशाला शतघरा दिहली शहर, (३) जैन ज्ञान वनिताविश्राम गोहाना (रोहतक) (४) जैन कन्याशाला रिवाड़ी (५) जैन कन्याशाला रोहतक।

संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध।

(१) जैन कन्याशाला धामपुर (बिजनौर), (२) दि० जैन कन्याशाला प्रयाग (३) जैन कन्याशाला मुजफ्फरनगर, (४) दि० जैन कन्याशाला सहारनपुर, (५) दि० जैन कन्याशाला शिवहारा (बिजनौर), (६) दि० जैन कन्याशाला ललितपुर, (७) दि० जैन कन्याशाला कानपुर।

बंगाल व बिहार प्रान्त।

(१) जैन बालाविश्राम धनुपुरा आरा, (२) जैन कन्याशाला आरा। और बहुतसी कन्याशालाएं हैं जिनके कार्यका विवरण दफ्तरमें नहीं आनेसे उनके कार्यकी कुशलता प्रगट नहीं है। पाठकगण देखेंगे कि एक समय जब श्रीमती मगनबाईजीने परिषद्का काम शुरू किया था तब स्त्री शिक्षाका प्रचार बहुत कम था,

परन्तु परिषद्के लगातार उद्योग करनेसे मगनबाईजीने स्त्री शिक्षाका प्रचार सारे भारतवर्षके जैनियोंमें कर दिया। यही जीवनकी महती सेवाका उदाहरण है।

श्रीमती मगनबाईजीके जीवनमें इस परिषद्का हिसाब सन् १९२९ का देखा गया तो परिषद्के ध्रुवफण्डमें ३७३२) जमा है, १०१) पीछे आए हैं। १००१) महिला परिषद्की संरक्षिका खाते जमा है, व ३२५) जैन महिलादर्शकी संरक्षिकाओंके जमा है। श्रीमती मगनबाईजीने यह नियम किया था कि दर्शमें घाटेकी पूर्ति २५)-२५) की सहायता करनेवाली महिलाओंसे प्रतिवर्ष करली जावे व ऐसा हर वर्ष होता है। सन् १९२९ के हिसाबसे प्रगट है कि उस वर्ष १३ महिलाओंने ३२५) प्रदान किये थे। कितनी शांतिसे जैन महिलादर्शका काम चला आरहा है। इसमें श्रीमती मगनबाईजी व पं० चंदाबाईजी तथा प्रकाशक सेठ मूलचंद किसनदास कापड़ियाजीकी कार्य कुशलता ही खास कारण है।

श्रीमती मगनबाई व उनकी कार्यकुशल सहायक पं० ललितावाई व ब्र० कंकुबाई व पं० चन्दाबाईके उद्योगसे परिषद्के वार्षिक व नैमित्तिक अधिवेशन प्रायः होते रहे हैं उनसे स्त्री समाजमें खूब जागृति होती रही है—

परिषद्के अधिवेशन कहां हुए व कब हुए।

१—सम्मेदशिखरजी	वि० संवत १९६६
२—श्रवणबेलगोल	" "
३—मथुरा	" १९६७
४—मुजफ्फरनगर	" १९६९

५–पालीताना वि० संवत् १९७०

६–सिद्धवरकूट ,, १९७१

७–गजपंथाजी ,, १९७२

८–दाहौद ,, १९७३

९–वर्धा ,, १९७३

१०–अम्बाला ,, १९७४

११–शोलापुर ,, १०७५

१२–उदयपुर ,, १९७६

१३–कानपुर ,, १९७७

१४–लखनऊ ,, १९७८

१५–ललितपुर ,, १९७९

१६–मुजफ्फरनगर ,, १९८०

१७–राजगृही ,, १९८१

१८–हिसार ,, १९८२

१९–आरा ,, ,,

२०–इन्दौर ,, १९८३

इसके पीछे मगनबाईजीकी रुग्णताके कारण जल्से न होसके। जिस योग्यतासे परिषद्का काम संचालन मगनबाईजीने किया है वह अतीव प्रशसनीय है। बाईजीके श्राविकाश्रम और परिषद ये दो बड़े जीते जागते स्मारक हैं। इनको स्थिर रखना उनके उपकारको स्मरण करनेवाली महिलाओंका परम कर्तव्य है।

श्रीमती शांतादेवी रुईया और श्रीमतीबाई गरगट्टे।

[श्री० शांतादेवीजीने महिलारत्न मगनबाईजीके उपदेशसे २३००) खर्च करके श्राविकाश्रम-बम्बईमें एक कमरा बनवा दिया है।]

दशवां अध्याय।

हितकारी बचनावली।

जबसे श्रीमती मगनबाईजीका परिचय सीतलप्रसादजीसे हुआ था अर्थात् सन् १९०९ से मगनबाईजीके जीवन पर्यंत, तबसे जब कभी ब्र० सीतलप्रसादजी परदेश भ्रमण करते थे तब महीनेमें एक दो पत्र उपदेश रूप मगनबाईजीको अवश्य भेज देते थे। मगनबाईजीके कागजोंमें सन् १९२४ से ब्र० सीतलप्रसादजीके भेजे हुए कुछ पत्र मिले हैं उनमें जो २ सारभूत शब्द पाठकोंके हितकर हैं वे नीचे दिये जाते हैं:—

कलकत्ता १८–२–१९२४–प्रवचनसार नया (ज्ञेयतत्व-दीपिका) अच्छी तरह पढ़ें। संसारमें दुःखी अधिक हैं, सुखी कोई नहीं है। जिसे निज आत्मामें संतोष मिला है वही सुखी है।

लाडनू १७–६–१९२४–आप तत्त्वका मनन करते रहियेगा। दोहा–समता शुचिता पात्रता, शांती सुख दातार। जो जाने माने सुधी, होवै गुण आगार॥ परमातम निज आतममें, भेद नहीं तू जान। जो निजमें रमता रहे, होवे चतुर सुजान॥

इटावा २४–८–२४–अपने स्वरूपका मनन जो सुखशांति प्रदायक है उतना कोई नहीं करसक्ता। आप जब निज घरमें बैठा करें तब सब तरफसे ताले लगा दिया करें। जिसमें श्राविकाश्रमका कोई विकल्प बलात्कार आपके घरमें प्रवेश न कर सके।

इटावा १८-९-२४-दोहा–दर्श ज्ञान चारित्रमय, निज आतम सुखकार। जो जाने माने सुधी, करें कर्मको क्षार॥ अविनाशी आनंद-

मय, परमज्ञान भंडार। जो जानै निज आपको, सो होवे गुणसार॥

इटावा २४-९-२४-आप अपने स्वास्थ्यको अच्छी तरह सम्हालना। शरीर ही धर्मका मुख्य साधन है। दोहा-परमानन्दमई प्रभू, जो ध्यावे निज माहि। कर्मविकार हरे सभी, परम शांत रस महिं॥

इटावा ८-१०-१९२४-दोहा-परमातम जिनराजको, वन्दो बारम्बार। जासे शिव मारग मिले, मन होवै अविकार॥

इटावा १८-१०-२४-यह जैन जाति कुछ धर्मविरोधियोंके कारण हम सरीखोंको काम करने नहीं देती जो रात दिन जैन समाज व धर्मकी चिन्तामें लगे रहते हैं। वास्तवमें बात करना, लिखना, पढ़ना सब भूसीमें खेलना है। कार्य जो करने योग्य है वह निज आत्माकी परमानन्दमई भूमिकामें रमण करना है। वहां मन, वचन कायके व्यापार नहीं रहते। वहां भेद भाव नहीं दिखता। वहां एक अद्वैत आत्माराम अपनी पूर्ण छवि सहित शोभायमान दिखता है। हमें व आपको इसी भूमिकामें चलना चाहिये। और सब कषाय मार्ग है।

इटावा २६-१०-२४-दोहा-परमातम जग सार है, और हि सकल असार। जो जानै निज तत्वको, पावै अनुभव सार॥ निज दर्शन को लाइये, छोड़ सकल जग धंध। आतम आतम रटन कर, मत हो चितमें अध॥ गुणमय चिन्मय ज्ञानमय, समतामय सुखदाय। बैठ आपके शून्य घर, रमहु रमहु हुलसाय॥

मुजफ्फरनगर १२-६-१९२५-वास्तवमें संसार एक नाटकशाला है। विचित्र दशा लोगोंकी दिखती है। हमें व आपको तो सुखशांतिका सेवन ही जरूरी है।

बड़ौत १२-७-२५-सम्यग्दृष्टीके धर्मध्यान शुरू होजाता है परन्तु वह सराग होता है। सातवेंमें वह अप्रमत्त वीतराग हो जाता है। जहां स्वात्मानुभवकी रुचि हो व मनन हो वहां शुद्धोपयोगकी झलक है तथा मोक्षको उपादेय मानके जो व्यवहार धर्म चौथेमें है वह भी धर्मध्यान ही है। आर्तध्यान सम्यक्तीके इस बातका भी होजाता है जो धर्म सम्बन्धी हो, जैसे धर्मात्माके वियोगका, सो शुभ आर्तध्यान कहा जासक्ता है।

बड़ौत ७-९-२५-संसारका चरित्र विचित्र है, बिलकुल नाटकशाला है, आत्मानुभवमें ही सुख शांति है, शेष सब अंधकार है। आप शरीरको धर्मसाधक जानकर रक्षित रखके धर्मध्यान करते रहिये। सदा प्रसन्न रहना चाहिये, शोक दुःख कभी न लाना चाहिये।

मद्रास ५-३-१९२६-प्रवचनसारका विषय जाननेयोग्य है। आत्माके गुणोंका विचार रहना यही संयम है। बाहरी संयम तो स्वयं कषाय घटानेसे होजाता है। स्वसन्मुखतामई संयमका लाभ जितना हो उतना करें। सब जीव आप समान हैं, इस साम्यभावका अनुभव करें।

खंडवा २०-५-२६-स्वाध्यायमें मनन भी स्वाध्याय है। भेद विज्ञानका ही अभ्यास कार्यकारी है। निश्चय नयको आश्रय लेकर विचारना चाहिये और साम्यभावमें जमना चाहिये यही चारित्र है।

खंडवा २-६-२६-मानवको सदा शांत भाव रखना चाहिये। व अपना कर्तव्य पालना चाहिये।

लखनऊ ३-८-२६-आपका शरीर अधिक त्याग व नियमको सहनेको असमर्थ है इसलिये इस विचारे उपकारी गरीब

...क पर अधिक जुल्म न करना। कायक्लेशमें धर्म नहीं है। धर्म तो शांत आत्मविचारमें है। बाह्य त्याग उसके लिये जो सहकारी हो व निराकुलता रूप हो सो करना योग्य है।

अजिताश्रम लखनऊ १९-९-२६—आपका शरीर स्वस्थ होगा। सम्हाल रखना। क्योंकि रत्नत्रयका यही बाहरी साधन है। निश्चयसे साधन और साध्य आत्मामें ही हैं, बाहर नहीं हैं। धन्य है वे महात्मा जो कषायोंके आक्रमणसे रहित रहते हैं।

लखनऊ २७-१२-२६—वास्तवमें इस जगतमें स्वसुख ही सार है। जिसका उपाय भेदविज्ञान द्वारा स्वात्मानुभव है। उससे द्वितीय नम्बरमें परोपकार कर्तव्य है। शरीरको भिन्न व ज्ञेय जानते हुए भी उसका यत्न रखना जरूरी है। इस नरभवका लाभ अति दुर्लभ है, आपको आगमका रहस्य विदित है। अतएव आप सच्चे सम्यग्दृष्टीकी तरह समय विताकर सफल करें।

वर्धा १८-१-१९२७—हमारी रक्षाकी आप फिकर न करें। श्रीजिन शासनके प्रतापसे सर्व जगह रक्षा होगी। मेरा ध्येय यही है कि किसी प्रकार जैन शासनकी उन्नति हो व जैन समाज मरनेसे बचे। पवित्र उद्देश्यपर जो चलते हैं उनको साम्यभावसे सब कष्ट सहना ही चाहिये और कभी घबड़ाना न चाहिये।

अजिताश्रम लखनऊ १७-३-२७—सदा ही आत्मचिन्तवनमें लीन रहें। अपना स्वभाव ही सार है, शेष सब असार है। वास्तवमें हम व आपमें कोई भेद नहीं है। सोहं सोहंका मनन ही कल्याणकारी है। देह आयुके आधीन है। रहे या जावे चिन्ता नहीं। वस भरोसा करना व्यर्थ है।

शिमला १२-६-२७-आध्यात्मिक श्रद्धान होनेपर भी चारित्र अर्थात् उपयोगकी थिरता बहुत कठिन है। बड़े भाग्यसे स्वरूपाचरणकी जागृति होती है।

मुज्जफ्फरनगर २०-६-२७-जीवोंके कर्मोका उदय कभी बड़ी तीव्रता दिखाता है। बड़े २ ज्ञानी जीव मोहनीय कर्मोदयके वश होकर रागद्वेष परिणतिमें उलझ जाते हैं। जब रागकी तीव्रता होती है तब प्राणीको अन्धा बना देती है। वास्तवमें सुख शांतिपूर्वक जीवन निर्वाह करना बहुत ही दुर्लभ है। सन्मित्रोंका समागम बहुतसी आकुलताओंको मेटता है, जिसका मिलना ही कठिन है। परावलम्बमें अवश्य आकुलता है। स्वावलम्बपना तब ही आता है जब निश्चित रूपसे स्वानुभवकी जागृति रहा करे। आप कुछ देर विना जाप आदि किये वस्तुका स्वरूप विचार किया करो व एकांत सेवन किया करो।

आरा ७-७-२७-स्त्रियोंको स्वयं अपने हकोंकी व अपने धर्मकी रक्षा करनी योग्य है। विना स्वयं पुरुषार्थ किये काम नहीं बन सक्ता है। मानवको सम्यक्तभाव दृढ़ रखना चाहिये। चारित्र जितना शक्य हो उतना पालना। आकुलता नहीं करनी चाहिये।

वर्धा १४-११-२७-केशरमती विलायत जायगी सो जाना, आप मोह न करें, सर्व जीव भिन्न २ हैं। व्यवहारका ही रिश्ता है, समाजसेवा जीतेजी करते रहना चाहिये। जव अपनेसे परिश्रम न हो तव दुसरेसे काम लेना, आप सम्मति देते रहना।

नागपुर ११-३-१९२९-डाक्टरकी सलाहसे चलने फिरनेका पुरुषार्थ करते रहें, व मनमें कोई चिन्ता न रक्खें, शांतिदे-

[illegible]पासना करें। उसको समताके सिंहासनपर विराजमान करें [illegible] निश्चयनयकी भूमिकापर रक्खा है और अनेकान्तके सुवर्णसे बना है तथा रत्नत्रयोंसे जड़ा है। इस देवीकी भक्ति शुद्ध प्रेमभावसे करती रहें। यही देवी स्वमनोरथको तृप्त करनेवाली है। जो कुछ धर्मकार्य आपके मनमें करनेका हो उसे शीघ्र पूरा कर डालें। यह अमूल्य पर्याय न मालूम कब धोखा दे डाले।

सूरत २-४-२९—आप किसी प्रकारकी आकुलता न कीजियेगा। आश्रमका काम नवीन तय्यार हुई बाइयोंसे चलाइयेगा। तथा आप शांतिपूर्वक तत्त्व विचार करते रहें। पुस्तकोंको पढ़ते व सुनते रहे। फलादि खानेका विशेष अभ्यास रक्खें। भूख लगनेपर ही दुबारा खावें। जीवनका समय भेदज्ञान द्वारा आत्म मननमें अर्थात् अध्यात्म गंगाके स्नानमें विताकर पवित्र करना चाहिये।

धूलिया ९-४-२९—आत्मानुभवका विचार बैठे लेटे हर आसनसे होसक्ता है। सामायिक आत्म सम्बंधी शुद्ध भावको कहते हैं। जहां आत्मा कर्म नोकर्म भावकर्मसे भिन्न विचारा वहीं सामायिक है। संस्तरादि सामायिक नहीं है।

कासगंज २०-४-२९—आप स्वयं विज्ञ है। भेदज्ञानकी महिमा अपार है। इससे भेदज्ञान द्वारा आत्माको अनात्मासे पृथक् विचारना ही हितकर है। निज स्वरूपके चिन्तवनसे सर्व बाधाएं कट जाती हैं।

अकोला २-५-२९—आप आत्म मनन तो करते ही होंगे। निश्चयनयका आश्रय परम हितकर है क्योंकि इसीके बलसे रागद्वेष मिटता है—समताभाव जगता है। समतासे ही सुखशांति मिलती है।

सजोत ३१-५-२९-मनको प्रसन्न रखना, चिन्ता कभी नहीं करना, रोग शरीरमें है आत्मामें नहीं। आत्मा रोग रहित अविनाशी चेतनामई वीतरागी है। उसका दर्शन त्रिकाल स्वसंवेदन प्रत्यक्ष द्वारा कर लिया करो।

सजोत ८-६-२९-निजात्मीक भाव ही शांति प्रदायक है। वही स्वसमयरूप परमहितकारी है, उसीका सदा मनन करना योग्य है। पूजनमें कभी२ स्वात्मानन्दका लाभ अपूर्व होजाता है। श्रीजिनेन्द्र भगवानके चरणकमलोंमें जो आपकी भक्ति है उसके प्रतापसे अवश्य असातावेदनीय कर्मका क्षय होगा और आपको पूर्ण निरोगता प्राप्त होगी।

विना सन् सम्वत्के पत्रोंसे।

कटक-आत्मा एक ऐसा अनमोल व आनन्दमई पदार्थ है कि उसका नाम लेना जब आनन्द देता है तब उसके गुणानुवाद गानेसे कैसा सुख होगा? सुख आत्माकी सत्तामें भरा है। इसलिये जो उसको किसी भी तरह स्मरण करे वह सुखका भोक्ता होजाता है। आप नित्य निज शांतिमई घरमें ही ठहरकर विश्राम लें। पर घरमें जानेकी आदत छोड़ें, परघरमें अपवाद है, निज घरमें ही प्रशंसा है। निज घरमें स्वानुभव प्रभूका दर्शन करके आल्हादित रहना ही हितकर है।

बड़ौत (मेरठ)-दोहा-परमातम निज रंगमें, सदा करे विश्राम। जो जानै मानै सही, पावै निज गुण धाम॥

बोगरा-युवान२ पंडित संसारसे चले जारहे हैं। यह देखकर संसारकी अनित्यता साफ झलकती है। अम्बालाके पं० बनारसीदासजी न रहे। सुनते हैं घनश्यामदासजी भी चल दिये

एक दिन इसी तरह हम लोग भी इस शरीरको छोड़ जावेंगे। इससे जो कुछ सार कर्तव्य है उसको हम सबको शीघ्र कर लेना चाहिये। जिनवाणीमें तो शांतरस अच्छी तरह भरा हुआ है। एकांतमें बैठकर इसीका पान करना उचित है। आप कोई पुस्तक गुजरातीमें अपने अनुभवसे जैन धर्मके स्वरूपपर धीरेधीरे विचारके साथ लिखो या किसी संस्कृत ग्रन्थका गुजरातीमें उल्था करो जिसका हिन्दी होगया हो। इष्टोपदेश भी अच्छा रहेगा।

पानीपत ४-११-जब स्वात्मानन्द आने लगे तो अवश्य समझना कि स्वात्म प्रतीति है। आप निःशंक हो सुख शांतिके लिये स्वात्माका मनन करते रहो।

जैपुर १९-११-आश्रमोंकी जरूरत उस समय तक नहीं मिट सक्ती जबतक कन्याशालाओंमें जैन अध्यापिकाओंकी मांग पुरी न हो। यह ठीक है, काम कम होता है तौभी आवश्यक काम द्रव्य क्षेत्र कालके अनुसार करना ही पड़ता है। आलसी रहनेसे तो कुछ भी नहीं होसक्ता है। जो सच्चे भावसे अधिक परिश्रम भी करेगा वह शुभोपयोगसे अपना हित तो करेहीगा। आपको अपने समयका विभाग करके मनन करते रहना चाहिये। अपना कर्तव्य करते रहनेसे अपना साध्य अवश्य सिद्ध होगा।

* * *

श्री० ब्रह्मचारीजी सीतलप्रसादजी बहुधा नवीन आध्यात्मिक भजन बनाकर मगनबाईजीको भेजा ही करते थे जिनको वे संग्रह करती थी, उनहीको लेकर ब्रह्मचारीजी कृत सुखसागर भजनावलि मुद्रित हुई है जो सूरतसे मिल सकती है।

जैन महिलारत्न-

पं० मगनबाईजीकी निस्वार्थसेवाका पुरस्कार।

(१)

श्री मगनबाई देवी, जय जय त जिन पद सेवि।
तुव धन्य है सुप्रयत्न, हो जैन महिलारत्न ॥

(२)

तुम्हारो सबै स्वच्छन्द, स्वागत करैं सानन्द।
तुम किये बहु शुभ कृत्य, हैंचु भी तुम कृतकृत्य ॥

(३)

महिला रहीं जो अज्ञ, तुम्हारी भईं सुकृतज्ञ।
'शिक्षा' प्रचार प्रशस्त, तुम कियो घूमि समस्त ॥

(४)

दै "धर्म" को उपदेश, पूरण कियो उद्देश।
मृदु मधुर बानी बोली, शुभ 'श्राविकाश्रम' खोलि ॥

(५)

"छात्रालयन" खुलवाय, "विधवाश्रमन" बनवाय।
करि सकैं नर न प्रवीन, वह काम तुम करि दीन ॥

(६)

सत दानवीर अमंद, श्री शेठ मानिकचन्द।
जे० पी० कुलालङ्कार, जिन लह्यो शुभ सत्कार ॥

(७)

तिन योग्य तुम सन्तान, कहि सब करें सम्मान।
बढ़ि पुत्रसों तुम काज, कीन्हों सुता है आज॥

× × × ×

'जैनो महिला परिषद्' का, संस्थापन करनेवाली।
करें कहांतक देवी, प्रशंसा तुमहो नारी निराली॥
भारत जैन महामंडल यह, आदर सों आराधि।
जैनी महिलारत्न नामकी, अर्पण करें उपाधि॥

× × × ×

आशा है निज जनको, यह सादर उपहार।
उत्सवके आनन्द महँ, ह्वै है अंगीकार।

—कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन।

नोट—श्रीमती एनीबिसेन्टके सभापतित्वमें काशीमें ता. २५-९-०३ को श्रीमती पंडिता मगनबाईजीको "जैन महिलारत्न" की पदवी प्रदान की गई थी तब श्री० कुमार देवेन्द्रप्रसादजी आराने उपरोक्त कविता सुनाई थी।

नं०	नाम	योग्यता	रिमार्क
१	रामदेवीबाई प्यारेलाल	हिंदी धोरण ४ पास	देहलीमें महिलाश्रम चलाती है।
२	श्रीदेवीबाई अन्तप्पा	मराठी धोरण ४ पास	उपदेशिकाका कार्य करती थीं, अभी देशमें है।
३	प्रभावतीबाई शीतलशाह	गुज० ट्रे० त्रीजुं वर्ष पास	सोजित्रा श्राविकाश्रम चलाती हैं।
४	श्रीमतीबाई कोकील	मराठी त्रीजुं धोरण पास	सांगली ,, ,,
५	मालतीबाई मूले	डॉक्टर एल.सी.पी.एस.	कोल्हापुरमें दवाखाना चलाती थीं।
६	मथुराबाई रामचन्द	हिंदी धोरण ६ पास	नागोर जैन कन्याशालामें कार्य करतीं हैं।
७	कस्तूरीबाई हरखचंद	,,	आरा—जैन बालाविश्राममें कार्य करती हैं।
८	पार्वतीबाई हीरालाल	,,	घामपुरमें कन्याशाला चलाती है।
९	केशरबाई डुगरजी	हिंदी ट्रे० बीजुं वर्ष पास	सागवाड़ा श्राविकाश्रम चलाती हैं।
१०	श्रीमतीबाई गरगट्टे	हिंदी प्रथमा पास	विलेपारलाके महिलाश्रममें काम करती हैं।
११	मूलाबाई रामलाल	हिंदी धोरण ६ पास	दमोहमें सरकारी कन्याशाला चलाती हैं।
१२	सोनुंबाई पुंजाजी	मराठी त्रीजुं वर्ष पास	नागपुरमें सरकारी स्कूलमें काम करती हैं।

१३	कुंवरबाई हीरजी	गुज० ट्रे० बीजुं वर्ष पास	मुंबई (मांडवी) पर कन्याशाला चलाती हैं।
१४	भूरीबाई गणेशजी	हिंदी धोरण ६ पास	उदेपुरमें कन्यापाठशाला चलाती हैं।
१५	केशरबाई रामप्रसादजी	हिंदी धोरण ३ पास	भींड़ कन्यापाठशाला चलाती हैं।
१६	सुरजबाई खूबचन्द	नर्स	मुम्बईमें पति साथ स्वतत्र काम करती हैं।
१७	नानीब्हेन उगरचन्द	गुजराती धोरण ६ पास	सोजीत्रा श्रावि० संचालिकाका कार्य करती हैं।
१८	चंचलब्हेन उगरचन्द	गुजराती ४ धोरण पास	भावनगरमें जैन कन्यापाठशाला चलाती हैं।
१९	भागवतीबाई मगनलाल	हिंदी धोरण ६ पास	दमोहमें कन्यापाठशाला चलाती हैं।
२०	भानुमतीबाई खडासा	मराठी ट्रेन्ड १ पास	एलिचपुरमें सरकारी स्कूलमें काम करती हैं।
२१	प्यारीबाई रईस नायक	हिंदी धोरण ५ पास	धुलेवमें जैन कन्याशाला चलाती हैं।
२२	चम्पाबाई ढाल्लसा	मराठी धोरण ४ पास	मुंबई श्राविकाश्रममें सेविकाका काम करती है।
२३	वेणुबाई गुलाबसा	संस्कृत मध्यमा तक	नागपुरकी सरकारी स्कूलमें काम करती हैं।
२४	गोपीबाई	हिंदी धोरण ५ पास	बड़वाहमें कन्या पाठ०का काम करती हैं।
२५	वीरमती वेलजी	गुजराती ६ धोरण पास	रंगूनमें कन्याशाला चलाती है।
२६	चम्पाबाई गगासा	मराठी ४ धोरण पास	कारंजामें कन्यापा०में धार्मिक शिक्षण देती हैं
२७	बजाबाई	मराठी ३ धोरण पास	कारंजामें कन्यापा०में धार्मिक शिक्षिका है।

नोट—नं० ५ डॉ० मालतीबाईका स्वर्गवास होगया है।